श्री पृथ्वीराज रचित

दीवार

(नाटक)

लेखक

श्री पृथ्वीराज कपूर

श्री रमेश सहगल

श्री इन्द्रराज 'आनन्द'

पृथ्वी थिएटर्स-प्रकाशन, बम्बई

प्रकाशक
पृथ्वीराज कपूर
अध्यक्ष पृथ्वी थियेटर्स
बम्बई ४

प्रथम संस्करण, जुलाई १९५२
1952

मूल्य ३) रु.

मुद्रक
र. अ. मोरमकर
श्री लक्ष्मी-नारायण प्रेस
३६४ ठाकुरद्वार, बम्बई २

सादर समर्पण

पूज्य बापू के चरणों में

जिन से 'दीवार' खेलने के पहले मैंने यह आशीर्वाद मांगा था—

"**बापू !** मुझे आशीर्वाद दो कि

मैं अपने आपको, और अपनी कला को

उस बुलन्दी पर ले आसकूं जहां से आपके चरण छू पाऊं

और

अपने आपको और अपनी कला को

देश, जनता और मानवता

की

सेवा में अर्पण कर सकूं।"

पृथ्वी०

A very good book indeed.

मेरी ओर से—

"दीवार" खेल की भी एक कहानी है—लम्बी मगर बड़ी दिलचस्प। यह खेल सन् १९४४ में लिखा गया जब कि पृथ्वी थिएटर्स की दाग़ बेल रखी जा चुकी थी और 'शकुन्तला' पहला खेल होगा, यह भी तय हो चुका था। लेकिन यह खेल मेरे अन्दर ही अन्दर कढ़ रहा था, कई वर्षों से। जब से मुल्क के बटवारे की तहरीक ने ज़ोर पकड़ा, देश के वातावरण में कुछ अजीब कोलाहल मच गया, जो ज़ाहिरा इतना भयानक नज़र न आता था, लेकिन जिसने फिज़ाओं में एक हलचल पैदा कर दी थी। उसी हलचल ने मेरे दिल के तारों में एक अजीब झंकार-सी पैदा कर दी। उन्हीं झंकारों ने इस खेल को जन्म दिया। श्री रमेश सहगल, जो आजकल फ़िल्मी-जगत के सुप्रसिद्ध डायरेक्टरों में से हैं, तब उस ज़माने में मेरे साथ काम करते थे। यह उन्हीं की मेहनत और काविशों का नतीजा है, कि उन झंकारों ने खेल का रूप धारण किया। श्री इन्द्रराज 'आनन्द', जिन्होने बाद में पृथ्वी-थियेटर्स का 'ग़द्दार' भी लिखा है, और आज फ़िल्म-जगत के सुप्रसिद्ध लेखकों में से हैं, उन्होने 'दीवार' के डायलॉग को लिखा, मांजा और संवारा, और कथानक में, ख़ासकर तीसरे अंक के सुलझाने में, उनका बहुत बड़ा हाथ है। कवि 'दीपक' जो आज फ़िल्म-जगत के सुप्रसिद्ध गीतकार हैं, उन्होने इसके गाने लिखे, और यूँ यह बेल मंढे चढ़ी।

इस खेल को पृथ्वी-थियेटर्स के कलाकारों और स्टेज के परदे के पीछे काम करने वाले मेरे साथियों ने अपने ख़ून और पसीने से सींचा है। मैंने ख़ून से इसलिये कहा, कि जिस समय यह खेल खेला गया— ९ अगस्त १९४५— देश का वातावरण ख़राब हो चुका था। विदेशियों का बोया हुआ जातीय भेद का बीज इस धरती में फूट चुका था। इस ज़हरीले पौधे की खारदार कोंपलें धरती का कलेजा फाड़ जहां तहां बाहर उभर आई थीं, और आज़ादी के पथ पर चलने वाले इस देश के बच्चों के दामनों से ऊलझ रही थीं। उनके पांव में घुस घुस उनका ख़ून बहा रही थीं। मेरे साथी भी कला की पगडंडी पकड़ इस महान पथ पर चलने वालों के साथ हो लेना चाहते थे। इनमें हिंदू भी थे, मुसलमान भी, सिख, पारसी और ईसाई भी। वह अपने ख़ून से इन फूट के कांटों की प्यास बुझाते आगे बढ़ते रहे और

अभी तक बढ़े चले जा रहे हैं। उन्हें डराया गया, धमकाया गया, पर उन्होंने मेरा साथ न छोड़ा। इसी लिये तो मैंने कहा न, कि खून से सींचा है उन्होंने इस बेल को और पसीने से यों कि—

"दी अज़ानें कभी योरुप के कलीसाओं में—
कभी अफरीका के तपते हुये सहराओं में"

थर्ड क्लास के डब्बों में बंद हो कभी महाराष्ट्र, कभी सौराष्ट्र, कभी बंगाल, कभी पंजाब, कभी मैसूर, कभी बिहार, मध्यप्रदेश, इंदौर, यू. पी., देहली और राजस्थान। यह उन्हीं का दम खम है। कलाकार नाज़ुक गिने जाते हैं, लेकिन मेरे साथियों के हौसले देखिये उन्होंने दिन नहीं देखा, दोपहर नहीं देखी, धूप न देखी, बरसात न देखी, साथ हैं तो साथ ही हैं, हर सर्दी गरमी बरदाशत की और करते चले आ रहे हैं, और उस पर तुर्रा यह कि:—

"गिला है न शिकवा, न उफ़ है न हाय।"

यह इस साथ, इस मैत्री की बदौलत है—जो कुछ कर पा रहा हूं। तभी तो बक़ौल मजाज़ लखनवी—

"इस फ़र्श से हमने उड़ उड़ कर
अफ़लाक के तारे तोड़े हैं"

वरना क्या मैं और क्या मेरी बिसात!

हां! इसी सिलसिले में मैं अपने एक साथी श्री मानिक कपूर का ज़िक्र करना चाहता हूं, जिन्होंने "दीवार" के खेलों के दौरान, सैट के पीछे बैठ कर हर उस डॉयलाग को—उस हरकत को—नोट किया जो कलाकारों ने अपने अपने करेक्टर को संवारने और खूबसूरत बनाने और असलियत के नज़दीक ले आने के लिये खुद ही इज़ाफ़ा कर लिया था। अगर मानिक जी इस मेहनत से इन फूलों और कलियों को न बीनते तो इस पुस्तक में खेल का वह पूरा रूप न आ पाता—जिस रूप में कि यह खेला जाता है। इसी सिलसिले में भाई द्वारका प्रसाद सेवक जी का ज़िक्र किये बिना न रह सकूंगा जिनकी अनथक मेहनतों से इस पुस्तक का प्रकाशन हो पाया। प्रूफ़ देखना और उनकी दुरुस्ती—यह भी श्री मानिक कपूर और श्री सेवक जी ही ने किया है।

विख्यात कलाममंज्ञ और साहित्यकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी जी और श्री राधेश्याम जी कथावाचक का भी मैं अनुग्रहीत हूं जिन्होंने इस पुस्तक के लिये अपने अभिप्राय लिखने का श्रम स्वीकार किया है। ऐसे ही आशीर्वादों और प्रोत्साहनों के सहारे मैं इस पथ पर अग्रसर होने का यत्न करता रहा हूं और आगे भी करता रहूंगा।

अब "दीवार" पुस्तक के रूप में जनता जनार्दन के चरणों में अर्पित है। मुझे आशा है जनता के जिस स्नेह से १९४५ से आज तक यह दीप प्रदीप्त होता आया है, उसी स्नेह से उसका यह प्रकाशन भी प्रकाशमान होगा।

आशीर्वादों का अभिलाषी—

पृथ्वीराज कपूर

पृथ्वी थियेटर्स

बम्बई

५ जुलाई '५२



—: स्टेज पर :—

यह ड्रामा ९ अगस्त सन् १९४५ को, पहली बार, रॉयल ऑपेरा हाऊस, बम्बई के स्टेज पर खेला गया। अब तक जिन जिन कलाकारों ने इसमें अभिनय किया है उनका परिचय निम्न स्वरूप है —

१ सुरेश। — **पृथ्वीराज कपूर।**

२ रमा। (सुरेश की पत्नी) — **उज़रा मुमताज़**, जोहरा सैगल, इन्दुमती।

३ विदेशी औरत। — **दमयन्ती साहनी, ज़ोहरा सैगल**, पुष्पा, इन्दुमती,।

४ रमेश। (सुरेश का भाई) — **सज्जन, श्रीराम, प्रेमनाथ**, विश्वा मेहरा।

५ शीला। (रमेश की पत्नी) — **हेमा केसरकोडी, पुष्पा**, इन्दुमती, रानी आज़ाद, कुमुद, लीला।

६ रामू। (नौकर) — **राज कपूर, प्रेमनाथ, श्रीराम, शम्मी कपूर**, सत्यनारायण, मन्साराम, राजेन्द्रनाथ, धवन, सज्जन, नैयर।

७ लक्ष्मी। (नौकरानी) — **हेमावती, रानी आज़ाद, कुमुदनी**, पुष्पा, अम्बिका, कुलदीप, इन्दुमती।

८ दीवान। — **काशीनाथ**, कृष्ण धवन, एम्. इस्माईल, सुदर्शन सेठी।

९ चाची। (दीवान की पत्नी) — **सतीदेवी**, लीला, अरमलीन।

१० विदेशी १ — **मोहन सहगल, कमल कपूर**, नैयर, **विश्वा मेहरा**। सुदर्शन सेठी, प्रेमनाथ, राजेन्द्र, रवीन्द्र।

११ विदेशी २ — **सरकार, नैयर, प्रेमनाथ, विश्वा मेहरा, शम्मी कपूर, राजेन्द्रनाथ**, सुदेश।

१२ कारीगर। — **सुदर्शन सेठी**, सुदेश, गुल्लू, बाँके बिहारी।

१३ विनोद। (रमेश का पुत्र) — **शशिराज, प्रयागराज, पद्माकर**, बिन्नी।

१४ कन्हैया। — **नायडू**, कन्हैयालाल, विश्वा मेहरा।

१५ वैद्य। — **एम्. इस्माईल**, कमल कपूर, प्रेमनाथ, मानिक कपूर।

१६ किसान नेता। — **व्यास**, धवन, मन्साराम, शम्मी कपूर, चन्द्रमणि।

१७ किसान। (पुरुष) — सत्यनारायण, सुरेश, इस्माईल, रवीन्द्र कपूर, विश्वा कपूर, सुन्दर, कन्हैयालाल, बाँके बिहारी गुल्लू, सुभाष, कृष्ण लूथरा, सोहनलाल, सुदेश, मानिक कपूर, सैन्डो।

१८ किसान। (स्त्री) — अम्बिका, लीला, कुलदीप, शौकत कैफ़ी, हीरा, अरमलीन।

—: स्टेज के पीछे :—

स्टेज प्ले		पृथ्वीराज कपूर, रमेश सहगल, इन्द्रराज 'आनन्द'।
गाने	... ...	दीपक।
संगीत	... ...	राम गंगोली।
सहायक	... ...	कमल गंगोली, राज कपूर
नृत्य	...	मोहन सहगल, मलिक सरदार, सत्यनारायण।
सेटिंग्ज़	... ...	जहाँगीर मिस्त्री।
सहायक	... ...	लल्लूभाई, नारायण, विठोबा।
वेषभूषा	... ...	वी. एस्. आठवले।
सहायक	... ...	पी. टी. कपरे, एच्. सी. कर्णे।
चित्रकारी (पार्श्वभूमि)	...	गणपत भाई।
सहायक	... ...	विमलकान्त, वसन्त।
प्रकाश	... ...	बिल्ला जोशी, रामदास, नैयर।
सहायक	... ...	तुकाराम, वसंत।
वेष परिवर्तन (मेक अप)		मोरे दादा, सुन्दर, मामा, शान्ताराम, माधव पै, जी. एल्. देशमुख।
सहायक	... ...	सावन्त।
ध्वनि तथा मंच प्रबन्धक	...	धनजी शाह।
सहायक	... ...	रामकृष्ण, वासु।
सामग्री वितरक	...	शंकर भोंसले, विमलकान्त, रामकृष्ण।
निर्माण व्यवस्थापक	...	रमेश सहगल, कमल कपूर, राज कपूर, नंदकिशोर कपूर, प्राणनाथ खन्ना।
सहायक	... ...	धर्मवीर खन्ना।
कला	... ...	राज कपूर, उज़रा मुमताज़।
निर्माता तथा दिग्दर्शक	...	पृथ्वीराज कपूर।
सहायक	...	रमेश सहगल, सज्जन, मानिक कपूर।

"दीवार" एक महाकाव्य है

'दीवार' को मैं एक महाकाव्य मानता हूं, ठीक उसी अर्थ में जिस अर्थ में लेनिन ने '**टेन डेज़ दैट शुक द वर्ल्ड**' को एक महाकाव्य माना था।

वह पुस्तक कविता में नहीं लिखी गई थी, सीधे-सादे गद्य में वह थी। किन्तु उसमें जिस घटना का वर्णन था, और जिस ढंग से वर्णन उपस्थित किया गया था, लेनिन को कहना पड़ा—यह महाकाव्य है।

यों ही 'दीवार' एक नाटक है, यों तो हमारे यहां नाटक को भी काव्य माना गया है, किन्तु आधुनिकता में पगे हम यदि तुक-ताल से युक्त रचना को ही काव्य मान लें, तो भी मैं कहूंगा, यह एक महाकाव्य है।

यह महाकाव्य भारतीय इतिहास की उस मर्मान्तिक घटना को हमारे सामने रखता है, जो भारतीय जीवन के पिछले एक युग को मथती रही, और अन्ततः एक महान सर्वनाश का दृश्य उपस्थित करके ही उपशमित हुई।

क्या वह उपशमित हो चुकी? काश, यदि यही बात होती! किन्तु रह-रह कर जब-तब जो धुआँ-धुआँ उठता है, वह कहता है, राख के नीचे अब भी शोले हैं, वे कब न भड़क उठें।

इस प्रलयाग्नि को शान्त करने के लिये हममें से जो सबसे बड़ी, सबसे ऊंची, सबसे पवित्र आत्मा थी, उसने अपने को आहुति कर दिया। उसके उस महान बलिदान का ही यह प्रभाव है कि सारा देश जलने से बच गया। हम आज भी उसीकी ओर हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं, 'महात्मा! हमारे देश का कल्याण कर। वह दृश्य फिर दूसरी बार न देखना पड़े, ऐसा वरदान दे।'

'तथास्तु'—हम यही सुनना चाहते हैं। हम ऐसी ही आशा भी करते हैं।

हमारे देश को भूचाल में डालने वाली, मथने वाली, सर्वनाश का दृश्य उपस्थित करने वाली और अन्ततः हमारे महात्मा को निगल जाने वाली उस दुखद घटना को लेकर कम साहित्य तैयार नहीं हुआ है। हममें से बड़े-से बड़ों की लेखनी और वाणी ने इसे हमारे सामने कितने रूपों में रखा। किन्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूं, इस घटना की रोमांचकता का जैसा चित्र 'दीवार' ने लोगों के सामने उपस्थित किया, वैसा किसी से नहीं बन पड़ा।

जब मैं 'दीवार' कहता हूं, तो मेरे सामने सिर्फ़ यह पुस्तक ही नहीं है, जो सात वर्षों की घोर प्रतीक्षा के बाद, आपके सामने उपस्थित की जा रही है।

नहीं, जब मैं 'दीवार' की चर्चा कर रहा हूं, तो मेरे सामने इसका वह रूप भी है, जो रंगमंच पर उपस्थित हुआ और आज तक होता जा रहा है।

हमें सदा याद रखना है, नाटक मुख्यतः दृश्य काव्य है—उसकी महत्ता इस पर निर्भर है कि वह रंगमंच पर कैसा उतरता है।

यदि इस दृष्टि से देखिये, और यही सही दृष्टि है, तो 'दीवार' बीसवीं सदी के पिछले आधे हिस्से की सबसे बड़ी गद्य रचना है। यों तो यह संसार का सर्वोत्तम नाटक कहलाने की प्रशंसा भी उस समय प्राप्त कर चुकी थी।

इन पिछले पचास वर्षों में, मुख्यतः बंगला और मराठी में, अच्छे से अच्छे नाटक आये हैं, उन नाटकों के अभिनेताओं ने भी कम यश और कीर्ति नहीं पाई है, देश-विदेश उनकी प्रशंसा से मुखरित हुआ है। किन्तु जो रुतबा, जो बलंदी, 'दीवार' को और उसके अभिनेता **पृथ्वीराज** को प्राप्त हुई, उसे देखकर उर्दू कवि के शब्दों में यही कहा जा सकता है—

यह रूतबए बलंद मिला जिसको, मिल गया !

'दीवार' सात वर्षों से लोगों के सामने उपस्थित की जा रही है। जितनी बार यह नाटक खेला जा चुका है, और जितने लोगों ने इसे देखा है, या यों भी कहिये, जितने लोगों ने जितनी बार इसे देखा है, और जब-जब जिस-जिस ने देखा है, वह जिस क़दर प्रभावित हुआ है, उतने लोगों द्वारा, उतनी बार, उतने गहरे प्रभाव के साथ देखे जाने का सौभाग्य शायद ही किसी आधुनिक भारतीय नाटक को प्राप्त हुआ हो।

इस नाटक को देखकर बड़े-बड़े लोगों की आंखें भी तर हुए बिना नहीं रह सकीं। ऐसे बड़े लोगों की संख्या भी बड़ी है, जिनकी आंखें इसे देखकर सावन-भादों बन गईं।

बड़ी छोटी-सी घटना। दो भाई हैं, एक भरे-पूरे घर में सानन्द रह रहे हैं। वे खुश हैं, उनका परिवार खुश है, उनका समाज खुश है—चारों ओर खुशहाली ही ख़ुशहाली।

कि अचानक कुछ विदेशी आजाते हैं, उनसे शरण मांगते हैं। भारतीय सभ्यता का तक़ाज़ा—उन्हे शरण मिलती है, उनके सुख का, सुविधा का सारा प्रबन्ध कर दिया जाता है।

धीरे-धीरे विदेशी अपना पंजा फैलाते हैं। पहले दोनों भाई विदेशी रंग

में रंग जाते हैं। फिर, दोनों में फूट हो जाती है। वह दिन आता है, जब घर के बंटवारे का सवाल उठ खड़ा होता है।

बड़े भाई की आंखें खुलती हैं। छोटे भाई को वह समझाना चाहता है, किन्तु उस पर तो मजीठ का रंग चढ़ चुका है। क्या वह धुल सकता था?

घर बंट जाता है। आँगन में दीवार खिंच जाती है। दीवार आँगन को ही दो टुकड़ों में नहीं बांटती, दिल को भी दो टुकड़ों में बांट देती है। तनाव बढ़ता जाता है, अशान्ति बढ़ती जाती है।

अभी कहानी का इतना ही हिस्सा!

'दीवार' तब खेली जा रही थी, जब देश को दो टुकड़ों में बाँटने का सवाल जोरों पर था। जिस समय 'दीवार' को, उसके अभिनेता पृथ्वीराज को एक तरफ प्रशंसा ही प्रशंसा मिली, तो दूसरे पक्ष से तरह-तरह की तुहम्मतें लगाई गईं।

किन्तु 'दीवार' का रचयिता आज कह सकता है, जिसे देश के नेता भी नहीं देख सके, उसे उसने उनसे पहले देख लिया था।

पर, उसकी मंशा देश को बँटा देखने की नहीं थी। वह तो उस विभीषिका की ओर लोगों का ध्यान खींचना चाहता था, जो बँटवारे की स्वाभाविक परिणति थी। पर कलाकार का प्रयत्न असफल हुआ, जो उसकी आशंका थी, वह पूरी होकर रही।

किन्तु 'दीवार' की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। एक दिन भाई-भाई मिलते हैं, दीवार टूटती है। छोटे भाई का हथौड़ा ही सबसे पहले दीवार पर गिरता है।

यह कलाकार का अन्तिम सपना था। क्या यह सपना भी पूरा होगा?

हो या न हो। कलाकार की सफलता इसमें नहीं है कि उसकी कितनी बातें सच साबित हुईं। कलाकार ज्योतिषी नहीं है, न बनना चाहता है। उसकी सफलता तो इसमें है कि वह अपनी बातों से लोगों के हृदयों को आलोड़ित करे, उसे मथ दे, उसमें एक हलचल, एक कसक, एक टीस पैदा कर दे। यदि यह कसक, यह टीस दर्शकों की आँखों से आँसू बनकर झड़ सके, तो यह किसी कला की चरम सार्थकता हुई।

'दीवार' को और उसके अभिनेता को, यह सौभाग्य प्रचुर परिमाण में प्राप्त हो सका है।

पृथ्वीराज की गिन्ती पहले से भी भारत के चोटी के कलाकारों में थी।

अपने अभिनय द्वारा उसने अपने क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान बना लिया था।

किन्तु 'दीवार' में ही प्रथम-प्रथम पृथ्वीराज की कला की सर्वोच्चता प्रकट हुई। रजतपटों पर जिसके कमाल हमें चकित करते रहे, रंगमंच पर उसके जादू ने हमें विस्मित कर दिया।

'दीवार' ने हमें एक नया पृथ्वीराज दिया है, हम यह भी कह सकते हैं।

अब पृथ्वीराज सिर्फ कलाकार नहीं रहा, वह देश की एक अनुपम विभूति बन गया।

देश ने उसके अभिनय में अपने जीवन की यथार्थता देखी, उसकी जिव्हा में उसने अपनी वाणी पाई, उसकी भावभंगिमा में उसने अपने हृदय की छवि आँकी। अभिनेता पृथ्वीराज अब जैसे देश का सांस्कृतिक नेता बन रहा।

'दीवार' ने इस पृथ्वीराज के साथ पृथ्वी थियेटर्स के रूप में हमारे भावी राष्ट्रीय रंगमंच की एक झलक भी हमारे सामने रख दी है।

इस दृष्टि से देखिये, तो 'दीवार' सिर्फ नाटक या महाकाव्य ही नहीं है, इसकी अवतारणा स्वयं एक सांस्कृतिक घटना है।

पृथ्वी थियेटर्स और **पृथ्वीराज** ने 'दीवार' के बाद भी कई चीजें दी हैं, एक-से एक अनूठी। हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन की वैसी तस्वीरें—जैसी, हम जीवन में तो पाते रहे, किन्तु, रंगमंच पर कभी नहीं देखी गई थीं, किन्तु 'दीवार' के बारे में कहा जा सकता है—

काफ़िर में मगर बात थी कि कुछ इसके सिवा भी !

'दीवार' पुस्तकाकार आये यह बहुत दिनों की मांग थी, बहुत लोगों की माँग थी। यह उन पर अत्याचार था, कि उन्हें अब तक इस से वंचित रखा गया।

ख़ैर, देर आयद—दुरुस्त आयद। इसके प्रकाशन का मैं अभिनन्दन करता हूं और आशा करता हूं, 'दीवार' बहुत से नये कलाकारों को प्रोत्साहन प्रदान करेगी।

'दीवार' की जय हो! **'पृथ्वीराज'** की जय हो!! **'पृथ्वी थियेटर्स'** की जय हो!!!

बम्बई — **श्री रामवृक्ष बेनीपुरी**

२३।६।५२

'पृथ्वी'–और–'दीवार'

'पृथ्वी' से 'दीवार' है और 'दीवार' का 'पृथ्वी' से अस्तित्व है–कितना सुन्दर सामञ्जस्य है–पृथ्वीराज के 'पृथ्वी थिएटर' और 'दीवार'–नाटक का।

पृथ्वीराज को मैंने समीप से समझा है, वह लहीम शहीम, क़द्दावर, तन्दुरुस्त, खूबसूरत कलाकार–मानो कलानिदर्शन ही के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुआ है–ऐसा प्रतिबिम्बित होता है–उसकी आँखों से आँखें मिलाते ही।

पिता गवर्नमेण्ट सर्विस में थे–पृथ्वीराज को आसानी से गवर्नमेण्ट सर्विस मिल सकती थी–पर प्रकृति ने उसे 'नौकरी' करने कब भेजा था–वह जिस उद्देश्य, जिस संस्कार, जिस तबीयत को लेकर परशुराम की पुरी–पेशावर–में पला, वही उसने देश को दिया और दे रहा है।

कालेज ही से शौक़ हुआ अभिनय कला का। उन दिनों बोलते सिनेमा न थे, पारसी कम्पनियों के नाटकों का ज़माना था, क्लबों में भी वेही नाटक खेले जाते थे, उसी सरिता में डुबकी लगाई पहले। फिर तो ऐसा डूबा–इतना डूबा–इस कला में यह कलाकार कि आज भारत ही में नहीं–विश्व में ख्याति है–**श्री पृथ्वीराज** को।

बोलते सिनेमा के सफल अभिनय में सबसे पहले **'सीता'** पिक्चर में–'राम' के पार्ट में–देखा कला–प्रेमियों की विवेचक दृष्टि ने अपने इस उदीयमान नक्षत्र को। फिर तो **'सिकन्दर', 'विद्यापति', 'इशारा', 'आवारा'** आदि दर्जनों चित्रों में चमका और लगातार अभी तक उदित मार्तण्ड की भाँति उठता ही जा रहा है,–अपनी कला के प्रकाश से प्रकाशित ही करता जा रहा है–भारत के गौरव को–यह भारत का लाल।

बोलते सिनेमाओं ने नाटक कम्पनियों को मार डाला, रंगमंच की यह हत्या देख नहीं सका यह दर्दीला अभिनेता। तुरन्त 'पृथ्वी थिएटर' निर्माण किया–जो चला, खूब चला, शान के साथ चल रहा है अभी तक। कभी घाटा भी हो जाता है–फिर भी चलता ही रहता है **'पृथ्वी थिएटर।'** यह है **पृथ्वीराज** की कला प्रियता, अभिनय की लगन, जीवन के महान उद्देश्य की पूर्ति की पूरी धुन।

'पृथ्वी थिएटर' के नाटकों ने 'सीन सीनरी की तड़कभड़क' और 'नाच गान की रंगीनी' से अपने को ऊपर उठाकर, एक दो सेट्स ही द्वारा–दर्शक समाज

को कथानक, संवाद और अभिनय की त्रिवेणी में स्नान कराया है बड़ी खूबी के साथ,-यह भी है पृथ्वीराज की एक विशेषता।

कुछ लोग ऐसे नाटकों की जन्मभूमि पश्चिमीय देशों की रंगभूमि को मानते हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं है, जिन विद्वानों ने प्राचीन भारत के संस्कृत नाटकों का अध्ययन किया है-वे जानते हैं कि यह भारत जननी ही का पावन प्रसाद है जिसकी गई गुजरी यादगार आज भी-'रामलीला'-'रासलीला' और 'स्वांग' के रूप में सम्पूर्ण देश में है।

'पृथ्वी थिएटर' के सभी नाटक-**'आहुति'**, **'गद्दार'**, **'पठान'** आदि किसी न किसी विशेष उद्देश्य को लेकर अभिनीत हुए हैं जिन्हों ने जनता का मनोरञ्जन मात्र ही नहीं किया है, कुछ शिक्षा भी दी है-कला के साथ साथ।

यह "**दीवार**" नाटक भी ऐसे ही नाटकों में से एक है-" एक ही जागीर के-दो जागीरदार भाई-सुरेश और रमेश-एक ही घर में-शीरो शकर की तरह-मिले जुले बड़े प्रेम और आनंद से रह रहे थे,-अकस्मात एक पश्चिमी महिला बीच में आगई, उसने दोनों को पृथक पृथक कर दिया, दूध फट गया, घर के मध्य में 'दीवार' खड़ी होगई।"

यह है दृष्टान्त, और दार्ष्टान्त इसका यह है, कि भारत में हिन्दू और मुसलमान मजे में रह रहे थे-कि सरकारे बर्तानिया ने आकर दोनों को दो भागों में विभक्त कर दिया।

यह नाटक उस समय स्टेज हुआ था जबकि पाकिस्तान नहीं बना था! क्या जाने-इस नाटक के द्वारा-जगद्व्यापिनी शक्ति यह संकेत ही कर रही थी कि-"भाई भाई अलग होंगे, भारत की अखण्डता नहीं रहेगी।'

अब नाटक के अन्तिम दृश्य पर ध्यान दीजिए-' दोनों ओर की जनता जागी, आन्दोलन हुआ, मानो-रत्नाकर और महोदधि नाम के दोनों समुद्र उमँड़े और धनुषकोटि में दोनों परस्पर लिपट गए, संगम होगया।—मिल गए भाई भाई, दीवार टूट गई, आवाज़ गूंजी-"**हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे।**" भगवान् ही जाने-भविष्य में क्या हो! ऐसा भी हो सकता है कि भारत फिर अखण्ड हो जाय, तब तो यह नाटक इस विषय का एक भविष्यवादी 'इतिहास' ही बन जायगा।

कलाकार के साथ साथ पृथ्वीराज चरित्रवान् भी हैं, दानशील भी हैं, देशभक्त भी हैं, यही कारण हैं कि वर्तमान काँग्रेस सरकार ने उन्हें 'राज्य

परिषद' का सदस्य मनोनीत किया है, इस चुनाव में निश्चय ही 'कला' के साथ साथ पृथ्वीराज का आदर निहित है।

ईश्वर की किसी पर कृपा होती है–तो पूरी ही होती है। पारिवारिक दृष्टि से भी पृथ्वीराज खूब सम्पन्न हैं। पिता अभी तक सिर पर मौजूद हैं, धर्मपत्नी देवी स्वरूपा हैं, कई पुत्र हैं–जिन में **राजकपूर** ने तो अभी से बहुत बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है–अभिनय और निर्देशन क्षेत्र में। '**होनहार बिरवान के होत चीकने पात**।' अन्त में इस आशीर्वाद के साथ हम अपना वक्तव्य पूरा करते हैं:—

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाःसन्तु मनोरथाः

शत्रूणां बुद्धि–नाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव

बम्बई **राधेश्याम कथावाचक**

१–७–५२ 'कथावाचस्पति'

Certified that this Book is [illegible]

ऐक्ट पहला

सीन पहला

[परदा उठने पर सुरेश का विशाल मकान दिखाई देता है। दीपावली का शुभ त्योहार है, मकान में खूब रोशनी हो रही है, भारत माता की मूर्ति बीच में रखी है। घर के तमाम लोग, सुरेश, रमेश, रमा, शील, दीवान जी, चाची, रामू और बहुत से किसान, औरतें व बच्चे वगैरह उत्सव में शामिल हैं और खुशी में नाच नाच कर गा रहे हैं।]

गाना

पालनहारी माँ ! प्यारी धरती माता !
नरनारी का यह मंडल तेरी जयकार सुनाता ! प्यारी धरती माता
इस आंगन में रेंग रेंग कर, खड़े हुए हम खड़े हुए।
इस मिट्टी में खेल खेल कर, बड़े हुए हम बड़े हुए॥
हरे भरे खेतों का बिछा बिछौना, माँ तेरा यह घर है स्वर्ग सलोना
जगजग जगमग घर का कोना कोना
तुम मुसकातीं आसमान अनगिन मोती बरसाता। प्यारी धरती०
आइयो रे ! आइयो रे !! मिट्टी को सोना बनानेवाले भाई
पानी को अमृत बनानेवाले भाई, पत्थर में कलियां खिलानेवाले भाई
दुनिया के प्यारे दुलारे मेरे भाई
अम्बर की छतरी धरती बिछौना, प्यारा अपना नाता। प्यारी धरती०

दोहा—धरती अपनी मात है, हम सब उसके लाल।
माता का पूजन करें, कभी न हों कंगाल॥

दोहा—उस तन में काँटा लगे, इस तन में हो पीर।
उन नैनन में टीस हो, इन नैनन में नीर॥

दोह—कच्चे धागे सूत के, बनते मिल कर डोर।
जिसे आंधियाँ तोड़ न सकें, लाख लगायें ज़ोर॥

दोहा—एक दिये की बाट से, जलते दीप हज़ार।
गूंजे सकल जहान में, माँ तेरी जयकार॥
पालनहारी माँ प्यारी धरती माता।

[सब लोग खुशी से नाचते हैं। सुरेश सबको बैठने का इशारा करता है, सब लोग बैठ जाते हैं।]

सुरेश : मित्रो! बन्धुओ! माताओ और बहिनों! हर साल की तरह आज भी हम दीवाली का उत्सव मनाने के लिये जमा हुए हैं, घर घर दिये जल रहे हैं और ऐसा मालूम होता है कि रौशनी की चादर है जो चारों ओर बिछी हुई है, अन्धेरा है कि जो छुपने के लिये जगह ढूँढता है जो मिलती नहीं। आओ (सब खड़े हो जाते हैं) हम सब मिल कर प्रार्थना करें कि आज की रात की तरह हमारे दिल हमेशा प्यार और मुहब्बत की रौशनी में जगमगाते रहें और हमारे जीवन से दुई और बैर का अंधकार हमेशा के लिये दूर रहे। (माँ की मूर्ति के पास आता है) माँ! हमारी भुजाओं में शक्ति दे कि हम गिरते हुए को सहारा दे सकें खुद अपने रास्ते से गिरें नहीं! हमें बल दे माँ! कि हो सके तो दूसरों के रास्ते में फूल बखेरें, काँटे कभी न बोयें।

रमेश : धरती माता की जय (सब लोग जय बोलते हैं)

किसान १ : बड़े मालिक की जय (सब किसान जय बोलते हैं)

किसान २ : छोटे मालिक की जय (सब किसान जय बोलते हैं। सुरेश रमेश को गले लगता है।)

सुरेश : (रमा से) रमा प्रसाद बाँट दो, रात ज़्यादा हो गई है, ऐसा न हो इन लोगों को रास्ते में तकलीफ़ हो। (रामू अन्दर से प्रसाद की थालियां लाता है, रमा और चाची प्रसाद बाँटती हैं। सुरेश रमेश से कहता है) अरे रमेश! दीवाली के उपहार अपने हाथों से दे। (रमेश दिवाली का उपहार बाँटता है।)

विनोद : (भागता हुआ आता है) ताया जी! ताया जी! प्रेम मुझे मारता है। (उधर लोग प्रणाम करके जा रहे हैं)

सुरेश : (प्रेम से) खबरदार जो इसे कुछ कहा तो, दो कान में सर कर दूँगा। (विनोद से) ताई से प्रसाद लेले। (प्रेम से) माँ से प्रसाद ले ले। (दोनों से) दीवान जी को राम राम की, माँ जगदम्बे को प्रणाम किया। (विनोद और प्रेम प्रणाम करते हैं) अब सबको राम राम कर लो। (सब किसान चले जाते हैं। सुरेश रामू से पूछता है) ओ रामू हो! (रामू पास आता है) बोल रे तुझे दिवाली का इनाम क्या चाहिये !

रामू : (सुरेश के पैर छूकर) मुझे! मुझे मालिक जो आपकी इच्छा हो मालिक! लेकिन अगर लक्ष्मी मिल जाय तो मेरे धन्य भाग्य।

रमा : (लक्ष्मी से) क्यों री लक्ष्मी ?

रामू : नहीं मालकिन वह लक्ष्मी नहीं, इस वक्त तो (हाथ से रुपये परखने का इशारा कर के) यह लक्ष्मी चाहता हूँ। वह लक्ष्मी तो जब आप की कृपा होगी तब......

दीवान : क्या पल्टा है।

सुरेश : कैसा पलट गया, अरे वह लक्ष्मी ऐसे थोड़ी ही मिलती है, बड़ी तपस्या, बड़े साधनों से मिले है। (दीवान से) याद है दीवान जी! जब यह इतना-सा था (हाथ से इशारा कर के बताता है) और वह इतनी-सी, इसके बाप ने और उसके बापू ने सगाई कर दी, ज़रा मसें भीगी नहीं कि लक्ष्मी ले दो! ज़रा कसरत वगैरह किया कर, हृष्ट पुष्ट हो ले। अब तो यह (रुपया देता है) लक्ष्मी ले और आती दिवाली तक वह लक्ष्मी भी मिल जायगी। (कन्हैया को आवाज़ देता है) अरे ओ कन्हैया हो!

कन्हैया : (पास आकर) मालिक!

सुरेश : (रुपये देता हुआ) ले तू भी ले! बहू नहा धो ली! (कन्हैया गर्दन से "हाँ" करता है। सुरेश रमा से पूछता है) तू तो मुन्ने को देख आई होगी! (रमा इशारे से "हाँ" कहती है। कन्हैया से कहता है) तेरे जैसा चन्द्रमुखी मुखड़ा होगा। (रुपये देता है) ले यह रहा तेरा, यह रहा बहू का, और मुन्ने को मैं अपने हाथ से दूँगा। (लक्ष्मी को न देख कर) अरे बोल लक्ष्मी को वह भी ले जाय।

रामू : लक्ष्मी को मैं दे दूँगा मालिक !

सुरेश : (दीवान जी से) है भरोसा ?

रामू : मालिक मुझ पर भरोसा नहीं करें ।

सुरेश : अभी शादी नहीं हुई, अभी से हक़ जमाने लगा। अच्छा ले मैं पूछ लूँगा। (रामू को रुपये देता है। बादल की गरज ज़ोर से सुनाई देती है।) दिवाली की रात और मेघ की गरजन, विचित्र बात है, पर चिन्ता न कीजियो रमा। निश्चय जान लीजिये दीवान जी! कि धरती, आकाश, पाताल सब प्रसन्न हैं। आओ (सब मूर्ति के पास जाते हैं) माँ के दर्शन करें। देखो माँ के चहरे पर भी रौशनी चमक रही है, मानों वह भी उत्सव में शरीक है।

दीवान : क्यों नही! माँ को तुम दोनों भाईयों का मिलाप पसन्द है, माँ को तुम दोनों भाईयों की ज़िन्दगी पसन्द है जो दूसरों की ख़िदमत में गुज़र रही है, माँ! प्रेम का एक न सूखने वाला चश्मा है और तुम दोनों उसकी नदियाँ हो जिसके किनारे प्यासे आते हैं मगर प्यासे लौटते नहीं। तुम्हारा यह घर एक संगम है, भगवान करे यह संगम कभी न टूटे। तुम दोनों का मिलाप दूसरों के लिये सबक़ है बेटा!

सुरेश : दीवान जी! आप का आशीर्वाद हमारे सर पर है फिर भला यह संगम कभी टूट सकता है क्या?

रमेश : दीवान जी! हम माँ की दो आँखें हैं, भला एक आँख कभी यह सोच भी सकती है कि दूसरी आँख फूट जाय।

दीवान : भगवान करे ऐसा ही हो। तुम जुग जुग जियो, तुम्हारी बहारें हमेशा जवान रहें। अच्छा अब हमें आज्ञा दीजिये, रात ज़यादा हो रही है।

सुरेश : ज़रा बैठते हरि कीर्तन हो जाता।

दीवान : नहीं देर हो रही है।

सुरेश : अच्छा। (रमेश से) रमेश! जा दीवान जी को घर छोड़ आ, ऐसा न हो कि रास्ते में बारिश पड़ जाय, पालकी के लिये भी बोल दीजियो।

दीवान : अरे बेटा ! इन सफेद बालों के धोखे में न रहना। इन पुरानी हड्डियों में अब तक भी इतना कस बल है कि तुम दोनों को उठा कर सीढ़ियाँ चढ़ जाऊँ, जैसा कि मैं पहले किया करता था।

चाची : (हंसती हुई) अ ह ह हा (रमेश हंसता है)

सुरेश : अरे चाची क्या मज़ाक करो। देखो तो दीवान जी के माथे पर अब तक भी वही जवानी का तेज दमक रहा है। अरे रमेश ! दीवान जी के गालों की सुर्खियाँ तो देखा, चाची के हाथ के पराठे खाते हैं। (दीवान जी, रमेश और सुरेश जाते हैं। बाहर से सुरेश की आवाज़ आती है) अरे पालकी को बोल दे रे।

रमेश : (बाहर से) अच्छा भैया !

सुरेश : (बाहर से) अरे हो कन्हैया हो ! देख यह गाय खुली फिरे बाहर।

कन्हैया : (बाहर से) अरे हो राम सरूपा ! अरे गय्या बांध रे, बछड़े को भी बांध दीजो !

आवाज़ : (बाहर से) हाँ मालिक !

कन्हैया (बाहर से) बांध दी मालिक !

सुरेश : (अन्दर आकर रमा से) अरे तू अभी तक खड़ी रही। (रमा माँ की मूर्ति के पास बत्तियाँ ठीक कर रही है।)

रमा : नाथ !

सुरेश : रमा !

रमा : जब आप बोल रहे थे तो ऐसा जान पड़ता था कि जनता की आशाओं को रूप और वाणी मिल गई है। आपके शब्दों में हिमालय की ऊँचाई, समुद्र की गहराई और गंगा की पवित्रता थी। जनता के कितने सौभाग्य हैं कि उन्हें आप जैसा मालिक मिला है और मैं कितनी भाग्यवान हूँ कि जिसे आप जैसा पति।

सुरेश : रमा ! भाग्यवान हूँ मैं जिसे पत्नी के रूप में तुम ऐसी दुर्गा, रमेश सा लक्ष्मण भाई और धरती की तरह उदार प्रजा मिली है। उदास,) चहरा लटकाये हुये रमेश आता है)

रमेश : भैया !

सुरेश : अरे क्या है रे ? क्या हुआ मेरे शेर ?

रमेश : यह दीवान जी क्या कह गये भैया ? हम कभी अलग नहीं होंगे, हम अलग हो भी नहीं सकते भाभी !

रमा : नहीं रमेश।

सुरेश : अरे पगले दुनिया में वह शक्ति पैदा नहीं हुई जो हमें अलग कर सके। (बादल की गरज और बिजली की चमक के साथ ज़ोरों से बारिश शुरु हो जाती है। रामू और रमेश ऊपर को भागते हैं, थोड़ी देर बाद कन्हैया आता है, पहले वह रमा से इशारे से कहता है, रमा सुरेश का ध्यान कन्हैया की तरफ़ दिलाती है। सुरेश कन्हैया से पूछता है) क्या है रे ?

कन्हैया : मालिक कुछ लोग आये हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

सुरेश : कौन हैं वह लोग ?

कन्हैया : वेश और भाषा से परदेसी मालूम होते हैं मालिक !

सुरेश : अरे रमेश !

रमेश : (सीढ़ियां उतरता हुआ) हाँ भैया !

सुरेश : कुछ परदेसी आये हैं, जा उन्हें आदर सत्कार से ले आ। (रमेश जाता है)

विनोद : ताया जी ! ताया जी ! प्रेम मुझे मारता है।

रमा : बच्चे उधम मचा रहे हैं, मैं ऊपर जाती हूँ (रमा ऊपर जाती है)

सुरेश : (प्यार भरी डांट में विनोद से) जा सो जाकर, सुबह उठेगा नहीं (बारिश थमती है, सुरेश खिड़की की तरफ़ जाता है) वाह ! कब गरज्यो कब वर्षयो (गुनगुनाता है) गरजो वर्षो कुबरी के घर मां (पाँव की आहट पाकर घूमता है। तीन परदेसियों के साथ रमेश आता है, अन्दर आते समय बादल गरजता है और बिजली चमकती है। परदेसियों में दो आदमी हैं और एक औरत) आईये ! आईये ! बैठिये ! हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं ?

विदेशी औरत : हम मुसाफ़िर हैं, ताजिर हैं, तिजारत की ग़रज़ से हम अपने मुल्क से निकले थे मगर रास्ते में ही लूट लिये गये, हमारा ज़ादे राह तक छीन लिया गया, अब हम घर पहुंचने के लिये भी मुहताज हैं।

सुरेश : आपको लूट लिया, किसने ? और वह भी हमारी जागीर में ? (रमेश से) यह कैसे मुमकिन हो सकता है ? ऐसा कभी नहीं हुआ।

रमेश : ऐसा कभी नहीं हो सकता भैया !

विदेशी आदमी १ : आपकी जागीर में कैसे मुमकिन है सरकार ! हमें तो सरहद पर ही लूट लिया गया।

सुरेश : सरहद पर ? कौन सी सरहद से आये ?

वि. आदमी १ : जनूब मग़रबी सरहद से।

सुरेश : पानी से आये हो, तो भाई तुम्हारे अपने देश के आदमी होंगे। हमारे देश के आदमी तो इस खारे पानी में पाँव नहीं रखें। (रमेश से) जब भी इनकी चर्चा सुनो, बस लड़ रहे, लड़ रहे। यह भी कोई बात हुई, भई जियो, जीने दो (विदेशी आदमी से) फिर क्या हुआ ?

विदेशी आदमी १ : हमारे पास कुछ भी नहीं बचा, वतन लौटने के लिये सरमाया तक नहीं रहा। वहाँ हमने आपकी जागीर की अज़मत और दौलत, और आपकी हश्मत और सख़ावत के चर्चे सुने सरकार !

वि. औरत : हम मदद चाहते हैं आपकी, उम्मीद है आप हमें मायूस नहीं करेंगे।

रमेश : भैया ! यह हमसे आसरा लेने आये हैं।

सुरेश : देवी ! हमारे यहाँ से कभी कोई निराश नहीं लौटता। धरती हमारी माँ है, उसकी गोद बहुत बड़ी है, उसके भण्डार सदा भरे रहते हैं। यहाँ किसी को भी किसी चीज़ के लिये इन्कार नहीं किया जाता, आपको घर पहुंचने के लिये जितना भी धन चाहिये मिल सकता है।

वि. औरत : हमने सुना था आपसे कोई कंकर मांगे तो आप उसका दामन मोतियों से भर देते हैं, आपकी फ़राग़दिली कानों सुनी थी, आज आँखों देख ली। यह हमारी खुश नसीबी है सरकार !

वि. आदमी २ : मगर सरकार जब तक हमारे हाथ पाँव सलामत हैं, हम भीख मांगने को गुनाह समझते हैं।

x· **सुरेश** : (रमेश से) बोले तो हमारी भाषा पर उसे गोल गोल कर दे, बड़ा कारीगर आदमी दिखाई दे। (दस्तानों की तरफ़ इशारा करते हुऐ) हाथों पर तोबड़े चढ़ा रखे हैं। (वि. आदमी २ से) हम बहुत ख़ुश हुऐ, यह तो मनुष्य का कर्तव्य है, अपने गाढ़े पसीने की कमाई खाये।

वि. आदमी २ : और सरकार! दूसरे जो हम घर से अज़्म लेकर निकले थे वह अभी तक नामुकम्मिल है, हो सके तो अपने यहाँ छोटी मोटी तिजारत करने की इजाज़त दीजिये।

वि. औरत : हमारी यह दरख़ास्त क़ुबूल फ़रमा कर हम पर ऐहसान कीजिये, हम कभी भी आपका करम फ़रामोश नहीं करेंगे।

सुरेश : इसमें ऐहसान की क्या बात है, हम आपकी कुछ सेवा कर सकें इससे बड़े भाग्य हमारे और क्या हो सकते हैं। आप यहाँ रहिये, मुझे आशा है यहाँ आपको कोई तकलीफ़ नहीं होगी, कोई कष्ट नहीं होगा। आज से आप हमारे मेहमान हैं और हमारे यहाँ मेहमान का दर्जा देवता के बराबर है।

वि. औरत : हम आपके ऐहसानों का मुआवज़ा कैसे अदा करेंगे। (झुक जाती है)

सुरेश : (रमेश से) देवी बात बात में ऐहसान कहे और भई बात बात में झुक जाय। बड़े सीधे लोग हैं, बड़े सभ्य लोग हैं, बड़े भोले लोग हैं।

रमेश : बड़े सीधे लोग हैं।

सुरेश : (वि. औरत से) इसमें ऐहसान की कौन सी बात है देवी! यह तो हमारा धर्म है। मनुष्य मनुष्य के लिये और कर भी क्या सकता है। (रमेश से) रमेश! इन लोगों के रहने का प्रबन्ध कर दे, और साथ ही कुछ धन का भी, जिससे यह बेचारे व्यापार करके अपना पालन पोषण कर सकें।

रमेश : आईये, आईये (तीनों परदेसी रमेश के साथ जाते हैं, फिर कुछ चल कर सुरेश की बात सुनने के लिये रुक जाते हैं।)

सुरेश : (मूर्ति के पास जा कर) जगदम्बे ! क्या क्या मूर्तियाँ बनाये तू भी। (आवाज़ देता है) ओ कन्हैया हो !

कन्हैया : (आकर) जी मालिक !

सुरेश : देख आज रात घर के दरवाज़े खुले रहें, ऐसा न हो कि इन बेचारों की तरह कोई आसरा लेने आये और दरवाज़े बन्द देख कर निराश लौट जाय। (परदेसी यह सुनकर लौट आते हैं, रमेश चला जाता है।)

वि. औरत : आप रात को घर के दरवाज़े खुले रखते हैं ?

सुरेश : (ऊपर जाते जाते) हाँ देवी !

वि. औरत : (अपने लोगों से कुछ कानाफूसी करके) तो यहाँ चोरों का डर नहीं ?

सुरेश: (नीचे आकर) नहीं देवी यहाँ चोर नहीं बसते। हमारे बुज़ुर्ग कहा करते थे (परदेसियों को मुखातिब करके) आप भी सुनिये, यह हमारे बुज़ुर्गों की बातें हैं, अनमोल रत्न हैं, पल्ले बाधने की चीज़ें हैं। हमारे बुज़ुर्ग कहा करते थे, चोर वहाँ बसते हैं जहाँ मजदूरों के दिल सोने के पांव तले रौंदे जाते हैं। जहाँ गरीबों की चीखें अभागों की हंसी के बोझ तले दब जाती हैं। जहाँ प्रजा अपने खून से राजा के खज़ाने भरती है और राजा प्रजा के खून से होली खेलता है, लेकिन यहाँ यह सब कुछ नहीं होता। राजा और प्रजा यहाँ भी हैं पर यहाँ राजा प्रजा की सेवा को अपना सब से बड़ा धर्म समझता है और प्रजा राजा के पसीने पर खून बहाती है। यहाँ राजा प्रजा का धन नहीं लूटता जैसे और देशों में होता है, वह प्रजा की खुशी को अपना सबसे बड़ा धन समझता है। आप निःसंकोच यहाँ रहें, आपको कोई कष्ट नहीं होगा, कोई तकलीफ़ नहीं होगी। (रमेश दाखिल होता है) अरे सब बन्दोबस्त कर आया ?

रमेश : हाँ भैया !

सुरेश : जाईये आप रमेश के साथ जाईये, मैं सवेरे दर्शन करुंगा। (रमेश के साथ सब परदेसी जाते हैं, सुरेश ज़ोर से आवाज़ देता है) अरे रमेश ! इन्हें थोड़ा गर्म दूध पिलाईओ, उसमें थोड़ी हल्दी छोड़ दीजो।

रमेश : (बाहर से) अच्छा भैया ! (सुरेश ऊपर जाता है, वहाँ रमा और विनोद खड़े हैं ।)

रमा : कौन हैं यह लोग ?

सुरेश : परदेसी हैं बेचारे, रास्ते में लुट गये, हमसे आसरा लेने आये हैं।

विनोद : (परदेसी औरत की तरफ़ इशारा करके) ताया जी, ताया जी ! मैं उसके साथ शादी करुंगा।

सुरेश : (रमा से) सुन ले लाडले की बात, यह शादी करे उसके साथ। बाप ने मारी पिद्दी और बेटा तीर अन्दाज़। तेरी ताई तो यूँ घूँघट काढ़ के आई जैसे उसके जेठ जिठानी आये रहे, तू कहे उससे शादी करूं, कल तू कहेगा ताई संग शादी करूं। (रमा और विनोद शर्माते हैं) अरे कर ले शादी शर्माये काहे को। (विनोद से) चल भाग सो जाके।

विनोद : मैं आप के पास सोऊंगा।

सुरेश : मेरे साथ सोएगा, सवेरे उठेगा, कसरत करेगा, हलवा खायगा, मार खायगा। (विनोद हर बात पर "हाँ" में सर हिलाता है, सुरेश आवाज़ देता है) बहू !

शीला : (अन्दर से) जी !

सुरेश : विनोद मेरे पास सोयेगा, सवेरे उठेगा, कसरत करेगा, हल्वा खायगा, शेर बन जायगा। (सुरेश विनोद को गोदी में उठा कर रमा के साथ जाता है। शीला ऊपर आकर खड़ी हो जाती है। रमेश नीचे आता है और माता की मूर्ति को शीश नवा कर ऊपर सीढ़ियों पर चढ़ जाता है।)

रमेश : शीला ! आज हमारे यहाँ फिर मेहमान आये हैं।

शीला : अच्छा !

रमेश : विनोद सो गया ?

शीला : जी, बड़े भैया के संग गया है। (रमेश और शीला चले जाते हैं। कुछ देर स्टेज खाली रहता है, फिर तीनों परदेसी आते हैं और मकान की सब चीज़ों को गौर से देखते हैं।)

वि. आदमी १ : (विदेशी औरत से) यह लोग कितने साफ़-गो हैं, कितने नेक दिल हैं यह, इनके चेहरे इनके दिलों का आईना हैं, इनके दिलों पर फ़रेब की गर्द तक नहीं पहुंची।

वि. औरत : इनके दिलों पर फ़रेब की गर्द तक नहीं पहुंची ! या यूँ कहो कि यह लोग कितने अहमक़ हैं, कितने जाहिल हैं। दुनियां की चालों से ना आशना, गैरों की रविश से बेखबर। माज़ी के वक़ार में खोये हुए, हाल से लापरवाह, धोखा और फ़रेब तो बिलकुल जानते ही नहीं। पहचानते हैं तो सिर्फ़ अपने फ़र्ज़ की राह, जो तबाही के कुँए में जाकर ख़त्म हो जाती है। कितने आसान हैं यह शिकार, सापों को कुचलते नहीं, दूध पिलाते हैं, दूध !

वि. आदमी १ : आप का मुशाहिदा दुरुस्त है।

वि. औरत : यह समझते हैं कि इन्होंने अपना फ़र्ज़ अदा कर के अपनी इन्सानियत का सिक्का हमारे दिलों पर बिठा दिया है, मगर मैं समझती हूँ कि यह लोग अपनी मौत की सिम्त एक क़दम और आगे बढ़ गये हैं। हमने जाल बिछा दिया है यह लोग इसमें गिरफ्तार होंगे, हम इनके पर काट लेंगे और इनके उड़ने की ताक़त सल्ब हो जायगी, चन्द ही दिनों में यह इसी हाल पर क़ानें हो जायंगे, इन्हें अपनी असीरी में इत्मीनान मुय्यस्सर होगा, और इसके बाद अगर हम इनको आज़ाद करना भी चाहें तो मुमकिन है यह तय्यार न हों और कहें "चमन दूर, आशियाँ बरबाद, यह टूट हुए बाज़ू-मेरा क्या हाल हो, सय्याद गर मुझको रिहा कर दे" तुम लोग कहते हो यह कितने नेक दिल हैं, कितने फ़राग़ दिल हैं। मैं कहती हूँ यह लोग कितने अहमक़ हैं, कितने जाहिल हैं।

वि. आदमी १ : तब तो ठीक है, आज जो इनके घरों में दौलत के अम्बार लगे हुऐ हैं, चन्द ही दिनों में हमारे ख़ज़ानों में मुन्तक़िल हो जांयगे। आज जो इनकी जागीर में दूध और शहद की नदियाँ बह रही हैं कल उससे हम फैज़याब होंगे। आज जो इनकी जागीर सोना उगलती है, कल उस पर इनका कोई भी अख्तियार न होगा।

वि. औरत : हाँ ! जागीर इनकी होगी, हकूमत हमारी होगी, मेहनत यह करेंगे और मज़े हम लूटेंगे। यह तख्त, यह सितार और यह मुजस्सिमा ! (हर चीज़ की तरफ़ हाथ से इशारा करती है और फिर हिक़ारत आमेज़ हंसी हंसती है। बादल ज़ोर से गरजता है, यह लोग घबराते हैं और पीछे हटते हैं। धीरे धीरे परदा गिरता है।)

ऐक्ट पहला — सीन दूसरा

[सुबह का वक्त है, रामू कमरे में झाड़ू लगाता हुआ दिखाई देता है, कुछ किसान हल व और सामान लेकर बाहर की तरफ़ से निकलते दिखाई देते हैं, एक किसान बंसी बजाता हुआ गुज़रता है।]

किसान १ : जय राम जी की रामू भैया !

रामू : जय राम जी की।

किसान २ : जय माता की रामू !

रामू : जय माता की ! कहो कैसे हो। (लोग गुज़रते जाते हैं, रामू गुनगुनाता है) उस तन में काँटा लगे (माँ की मूर्ति के पास जाकर) सुना माँ ! उस तन में काँटा लगे इस तन में हो पीर, उन नयनन में टीस हो इन नयनन में नीर। माँ ! तुम तो सब कुछ जानती हो, तो सच बताओ माँ ! जब मैं लक्ष्मी की तरफ़ देखता हूँ तो न जाने दिल में (हाथ से बता कर) यूँ यूँ सा होने लगता है, माँ ! मैं तुम से कुछ नहीं मांगता, सोना नहीं मांगता, चाँदी नहीं मांगता, महल नहीं मांगता, बाड़ी नहीं मांगता, हाथी घोड़े मैं नहीं मांगता, बस मांगता हूँ तो लक्ष्मी मांगता हूँ (माँ के चरणों में शीश नवा कर) माँ ! तेरे चरणों में शीश नवा कर मैं लक्ष्मी की भीख मांगता हूँ। (लक्ष्मी चुपचाप आकर रामू के सामने खड़ी हो जाती है

और उस पर फूल डालने लगती है) माँ! माता! पूज्य जननी! (सर उठाता है और लक्ष्मी को देखकर चौंकता है।)

लक्ष्मी : लक्ष्मी मांगते हो तो माँ के चरणों में सर क्यों रखते हो, (अपने पांव की तरफ़ इशारा करके) लक्ष्मी के पांव पड़ो न।

रामू : लक्ष्मी तू आगई, लक्ष्मी तेरी उमर बड़ी हो, भगवान करे जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ तब तक तुम जीना। लक्ष्मी! एक बात पूछूं, बताओगी न?

लक्ष्मी : हाँ हाँ कहो न।

रामू : मां के चरणों की सौगन्ध खाओ कि बताओगी।

लक्ष्मी : (डाँट कर) हाँ कहो।

रामू : अरे काटती क्यों है बावरी। (प्यार से) लक्ष्मी सच कहना मुझे देखकर तेरे दिल में (हाथ से बता कर) कुछ यूँ यूँ सा होता है?

लक्ष्मी : मेरे दिल में तो (दिल के ऊपर उंगली से गोलाकार बनाती है) यूँ यूँ सा होता है।

रामू : (लक्ष्मी की तरह बता कर) लक्ष्मी मेरे दिल में भी यूँ यूँ सा होता है।

लक्ष्मी : आज से क्या मेरे दिल में तो शुरू से होता है।

रामू : जब से तू पैदा हुई?

लक्ष्मी : (शर्मा कर) चलो हटो।

रामू : शर्मा गई (मूर्ति की तरफ़ इशारा करके) आ इन चरणों में बैठें कि एक दिन इन्हीं चरणों में दूधों नहायें पूतों फलें। बड़े मालिक ऊपर ही हैं न? (दोनों बैठ जाते हैं, लक्ष्मी दूर खिसकती जाती है) अरे तू तो हमसे दूर भाग रही है (पास खींचता है) यहाँ तो आओ, देखो तो सही हम तुम्हारे लिये क्या क्या नहीं करते। (अगोंछे से खाने की चीज़ खोल कर) ले खाले।

लक्ष्मी : उहूँ, (खाने से इन्कार करती है)

रामू : नखरे आगये, अपने हाथ से खिलाऊँ (लक्ष्मी खाने के लिये राज़ी हो जाती है) रात से तुम्हारे वास्ते लिये फिर रहा हूँ, पता ही

नहीं कहाँ गुम हो जाती हो, नज़र ही नहीं आती, न जाने कहाँ रहती हो ?

लक्ष्मी : क्या करूँ, तुम्हारी उस देवी जी से फ़ुरसत ही नहीं मिलती, रात भर जागती रहती हैं, कभी यह ला दो, कभी वह ला दो, कभी यह क्या है, कभी वह क्या है, कितने लोग रहते हैं यहाँ, कितना बड़ा मकान है, कितनी बड़ी जागीर है, और रात भर काग़ज़ों पर लकीरें डाला करती है। मुझे नहीं अच्छी मालूम होती वह औरत।

रामू : क्या कहा ? रात भर काग़ज़ों पर लकीरें डाला करती है। (कुछ सोच कर) अरे लक्ष्मी ! नक्शे बनाते होंगे नक्शे।

लक्ष्मी : वह क्या होता है ?

रामू : तू नक्शे नहीं जानती। (सोच कर) वह नक्शे, तस्वीरें, तस्वीरें जैसे यह तेरा नक्शा है, पर यह तो भगवान ने बनाया है लक्ष्मी, बड़ी फ़ुरसत से बनाया है, काश मेरा नक्शा भी भगवान फ़ुरसत से बनाता तो यूँ टूटे फूटे न रह जाते। लक्ष्मी ! उस देवी जी का नक्शा भी भगवान ने बड़ी फ़ुरसत से बनाया है।

लक्ष्मी : (गुस्से से) फिर तुम ने उसका नाम लिया, झाड़ू मारूँगी मुँह पर।

रामू : क्यों जी ? अब हम घर में किसी का नाम भी नहीं ले सकते, अच्छे आये यह लोग (लक्ष्मी उठ कर जाने लगती है) अरी तुझे तो कुछ कहा नहीं कि सुबह सुबह ताप चढ़ आता है। न सही, न लेंगे उसका नाम, मैंने कहा तुम्हारा नाम तो ले सकते हैं। (लक्ष्मी सर हिलाती है) आ लक्ष्मी पल भर का समय मिलता है दो बातें ही कर लें, तू तो ख़ामख़ा नाराज़ होती है।

लक्ष्मी : अच्छा उठो काम करें, बड़ी मालकिन, छोटी मालकिन आती होंगी, आरती का समय हो गया है।

रामू : (झुँझला कर) बस यही तो है तुम औरतों में, पल भर का समय मिला बातें करने को, कि लगीं बहाने ढूंढने, यह आया, वह गया, मैं

तो तंग आगया तेरे नखरों से, भला हो कहीं जाके डूब मरूँ (जाने लगता है)

लक्ष्मी : (गुस्से से) तो जाओ डूब मरो न।

रामू : (रुक कर) हाँ तुझे क्या पड़ी, तुझे तो चालीस करोड़ रामू और मिल जायंगे, मगर मेरी माँ को दूसरा रामू कहाँ से मिलेगा ? (सुरेश, रमा और बहू आते हैं)

सुरेश : अरे क्या है रे रामू ? क्या शोर हो रहा है सवेरे सवेरे। (रामू लक्ष्मी आवाज़ सुनते ही काम में लग जाते हैं। रमा हाथ जोड़ नमस्ते करती है) रमा ! बहू ! (शीला प्रणाम करती है, सुरेश दोनों हाथ उठा आशीर्वाद देता है) कहाँ गया यह रामू ? (रामू को देख कर) क्या शोर कर रहा था सवेरे सवेरे ?

रामू : कुछ नहीं बड़े मालिक ! मैं तो सफ़ाई कर रहा था।

सुरेश : (हाथ से चपत मारने का इशारा करते हुए) बेटा ! जब मैंने सफ़ाई की तो सब साफ़ हो जायगा। (शीला से) रमेश नहीं आया अभी ? (पुकारता है) अरे ओ रमेश हो !

रमेश : (अन्दर से) आया भैया !

सुरेश : क्या हो रहा है ?

रमेश : (अन्दर से) पढ़ रहा हूँ।

सुरेश : ओ हो बड़ा पाड़ा बन गया है (विनोद से) जा रे बापा को बुला ला (रमा से) जब से यह लोग आये हैं, रमेश सुबह सुबह किताब लेकर बैठ जाता है। (दीवान जी और बहुत से किसान आते हैं, माँ की मूर्त्ति को प्रणाम करके और सुरेश को राम राम करके बैठ जाते हैं, रमेश सब से बाद में आता है और सुरेश, रमा और दीवान जी के पांव छू कर बैठ जाता है।) आगया तू ! (दीवान जी से) दीवान जी ! जब से यह लोग यहाँ आये हैं बड़ा पढ़ने लगा है मेरा शेर ! सवेरे देखो तब, दोपहर को देखो तब, रात को देखो तब, उनकी पुस्तकें पढ़े, मेरे लिये तो उनकी भाषा का काला अक्षर भैंस बराबर रहा। (सब मिलकर आरती गाते हैं।)

गाना

हरि चरनन में, प्रभू चरनन में हम सब एक समाना।
दोहा–नाम अलग, काया अलग मगर एक हैं प्राण!
प्रभूजी! यह वरदान दो, हम सब रहें समान!! हरि...

[विदेशी औरत दाखिल होती है और सब को आरती में मग्न देख कर लौटने लगती है मगर शीला देख लेती है, वह आदर से बिठाती है, गाना बराबर जारी है]

गाना

दोहा–हरि की पूजा माँ की पूजा, आज़ादी के गीत!
जीवन भर गूँजे इस घर में, यही अमर संगीत!!
हरि चरनन में, प्रभू चरनन में..................

[आरती द्रुत लय में हो जाती है कि कन्हैया दौड़ता आता है]

कन्हैया : (घबराया हुआ) बड़े मालिक! बड़े मालिक! (आरती बन्द हो जाती है) छोटे मालिक का बच्चा छत से गिर गया है। (सब लोग एक दम घबरा जाते हैं)

सब : (परेशानी से) कौन विनोद?

वि. आदमी १ : (बेहोश विनोद को खून में लथपथ अपने हाथों पर लिये दाखिल होता है) बच्चा खेलते खेलते छत से गिर गया है, सर में गहरा ज़ख्म आया है, बहुत खून बहने से बेहोशी तारी है। (सब परेशान हैं)

सुरेश : (विनोद को इस हालत में देखकर बहुत दुखी है और अपने हाथों में उसको ले लेता है) विनोद!

वि. औरत : मगर सरकार फ़िक्र न करें, बच्चे को इलाज चाहिये तश्वीश नहीं, आप बच्चे को अपने कमरे में ले जाईये, मैं अभी आती हूँ। (रमेश बच्चे को सुरेश के हाथों से लेकर जाता है, सुरेश दीवानजी से कहता है।)

सुरेश : (घबराये लहजे में) दीवान जी ! वैद्य, हकीम, तबीब सब बुलवा लीजिये, परमात्मा के लिये देर न कीजिये। (दीवान जी जाते हैं।)

वि. औरत : आप वैद्य, हकीम बेशक बुलावा लीजिये मगर बच्चे को फ़ौरी मदद की ज़रुरत है क्योंकि खून रुकने पर नहीं आता है और हर लम्हा जो गुज़र रहा है बच्चे की जान को खतरा बढ़ रहा है, आप के मुझ पर एहसान हैं, मैं आपसे इल्तिजा करती हूँ, आप मुझ पर भरोसा रखें, मैं इलाज शुरू कर दूँ ?

सुरेश : (शशोपंज में) देवी तुम !

वि. औरत : सरकार यक़ीन नहीं आता। मैं इल्मे तिब्ब से बख़ूबी वाक़िफ़ हूँ। हमारा मुल्क इस इल्म में बहुत आगे बढ़ गया है, आप मुझ पर एतमाद कीजिये, मुझे अपने आप पर मुकम्मिल भरोसा है, आपका बच्चा फ़ौरन अच्छा हो जायगा।

सुरेश : (सोच कर) अच्छा देवी ! (मूर्ति की तरफ़ देखकर) मुझे अपने इष्ट देव पर विश्वास है, उसकी मर्ज़ी होकर रहेगी, तुम इलाज शुरू कर दो। (विदेशी औरत जाती है, सुरेश किसानों से कहता है) धूप सर पर आ रही है, आप लोगों को अपने काम पर जाना होगा।

सब किसान : (मूर्ति की तरफ़ हाथ जोड़कर) माँ ! बच्चे को जल्द अच्छा कर दे।

सुरेश : यही आशीर्वाद दो, यही प्रार्थना करो, सब के बच्चे सलामत रहें और किसी की खैरात हमारे भी। (सब जाते हैं, सुरेश सीढ़ियां चढ़ता हुआ) अरे व्यास जी ! दीवान जी मिलें तो कह दो शीघ्र आयें। क्या बैठे बिठाये आफ़त मोल ले ली, क्या होता जाय बच्चों को, प्रार्थना समय उठ उठ भागें। (ऊपर जाता है)

वि. औरत : (आकर) सरकार थोड़ी देर इन्तज़ार कीजिये। (विदेशी औरत ऊपर अन्दर जाती है। सुरेश एक क्षण रुकता है कि विदेशी औरत के दरवाज़ा बन्द करने की आवाज़ आती है, सुरेश घूमता है)

सुरेश : जगदम्बे ! (कहता हुआ सीढ़ियों से उतर माँ की मूर्ति के

पास आता है) माँ ! मेरा विनोद अच्छा हो जाय, तेरे घर में क्या कमी है। माँ ! मुझे विनोद का जीवन दान दे दे नहीं तो रमेश को अपने बच्चे के लिये तड़पते कैसे देख सकूँगा। बहू को, मेरे लाल, मेरे लाल, कहते कैसे सुन सकूँगा। इसके बदले मेरे प्राण हाज़िर हैं, माँ ! मेरे प्राण ले ले।

रमेश : (ऊपर से आकर रोते हुऐ) नहीं भैया ऐसा न कहो। भगवान इतने निर्दयी नहीं हैं। अगर उनकी यही इच्छा है तो क्या प्रेम और श्याम मेरे बच्चे नहीं ?

सुरेश : (दिलासा देते हुऐ) माँ के सामने ऐसे दुरवाक्य मुँह से निकालता है, पगला कहीं का। माँ की दया से निराश नहीं हुआ करते वीर ! "जाको राखे साईंयाँ मार न सके कोय।" (उसकी ठोढ़ी पकड़कर मुँह उठाता है) अरे तू रो रहा है, शेर रोया नहीं करते। (खुद रोने लगता है) ले आँसू पोंछ ले। तुझे इस अवस्था में देखकर तेरी भाबी और बहू बेचारी तो जी छोड़ देंगी। तू तो खुद कहा करे "राखन हार भयो भुज चार, तो क्या बिगड़े दो भुज के बिगाड़े।" जा ऊपर जाके बैठ, कोई आवाज़ पड़ जाय तो मुझे भी बुला लेना, मैं माँ से उसके प्राणों की भीख माँगता हूँ, माँ के घर में सब कुछ है। (रमेश जाने लगता है) जगदम्बे ! जगदम्बे ! ! जगदम्बे ! ! ! (शीश नवाता है, विदेशी औरत आती है)

वि. औरत : (आकर, खुशी से) छोटे सरकार ! बड़े सरकार ! आप का विनोद अब होश में आगया है। (रमेश लौट कर मूर्त्ति को शीश नवाता है, सुरेश एकदम ध्यान से चौंक कर उठ खड़ा होता है।)

सुरेश : (अचम्भे में) देवी ! सत्य ?

वि. औरत : जी ! उसे अब कोई ख़तरा नहीं।

सुरेश : (मूर्ति को हाथ जोड़कर) माँ तू धन्य है, हम मूर्ख हैं जो तुझ पर शंका करते हैं, तेरी दया की कोई थाह नहीं। (विदेशी औरत से) देवी ! हम तुम्हारे कृतज्ञ हैं, तुमने हमें बच्चे का जीवन दान दिया है, यह एहसान हम उम्र भर नहीं भूल सकते। (रमेश से) मुझे विनोद के पास ले चल, मैं उसे अपनी आँख से देख लूँ। (सुरेश व रमेश ऊपर अन्दर

जाते हैं, सुरेश अन्दर से कहता है।) वाह मेरे शेर तूने तो सबकी जान निकाल दी। (विदेशी औरत इशारे से अपने दोनों साथियों को बुलाती है, दोनों आते हैं।)

वि. औरत : (विदेशी आदमी २ से) बच्चे को गिराते हुए किसी ने देखा तो नहीं ?

वि. आदमी २ : (पसीने से तरबतर, घबराये लहजे में) नहीं किसी ने नहीं।

वि. औरत : काँप क्यों रहे हो, हवास क़ायम रखो, जाओ। (विदेशी आदमी जाता है, अब वह दूसरे से कहती है।) हमारी पहली चाल कामयाब हुई, आग़ाज़ अच्छा है। (सुरेश के आने की आहट पाकर वह उसको भी जाने का इशारा करती है, वह जाता है।)

सुरेश : (आकर) आज हमसे कुछ माँगो, मोतियों में तुल जाओ, सोने से घर भर लो, फिर भी हम तुम्हारे एहसान का बदला नहीं चुका सकते।

वि. औरत : सरकार मैंने जो कुछ किया है किसी सिले के लिये नहीं किया है, यह तो मेरा फ़र्ज़ था। हम ताजिर हैं, लेकिन फ़र्ज़ की तिजारत नहीं करते।

सुरेश : यह सच है, मगर हमें इसके बग़ैर चैन नहीं आयेगा। तुमने अपना धर्म पूरा किया है, हमारा भी तो कुछ धर्म है।

रमेश : (आकर) भैया ठीक कहते हैं, हमारे देश में एहसान के बदले कुछ न कुछ भेंट अवश्य दी जाती है, यह हमारी रीति चली आई है, हमारे पूर्वजों की रीति को झुठलाओ नहीं देवी !

वि. औरत : हम तो पहले ही आप की इनायात के बोझ से दबे हुए हैं, हो सके तो हमें हमेशा अपने क़दमों में रखिये, हमेशा अपने साये में रहने दीजिये।

सुरेश : कुछ और मांगो देवी ! हमें इससे सन्तोष नहीं होगा, यह देन तो हम पहले ही दे चुके हैं।

वि. औरत : अच्छा अगर आप इसरार ही करते हैं तो मैं अर्ज़ करूँगी कि...(रुकती है) लेकिन शायद छोटे सरकार को कोई ऐतराज़ हो।

रमेश : कहो देवी ! तुम जो कुछ भी माँगो अवश्य मिलेगा। मेरे प्राण जा सकते हैं, भैया का वचन कभी झूठा नहीं हो सकता।

सुरेश : (रमेश को गले से लगा, माथा चूम कर) ऐसी बात नहीं कहते। (वि. औरत से) यह तो मेरा लक्ष्मण है लक्ष्मण, तुम क्या जानो।

वि. औरत : यह बजा है, मगर मैं डरती हूँ कि कहीं मेरे मुत्तालिक़ आपको किसी क़िस्म का शक न हो जाय।

सुरेश : क्या बात करती हो देवी। देवी ! तुम हमारी मेहमान हो और मेहमान को हम देवता तुल्य मानते हैं, हम देवता पर शक नहीं किया करते, तुम निःसकोच कहो।

वि. औरत : अच्छा तो मैं अर्ज़ करूँगी कि आपके....(चाची और रामू घबराये हुए दाख़िल होते हैं, विदेशी औरत कहते कहते चुप हो जाती है।)

चाची : (घबराये लहजे में) क्या हुआ ? क्या हुआ ? मेरी तो जान निकल गई, रामू ने ख़बर दी, मेरे तो होश उड़ गये। कहाँ है विनोद ? कैसा है विनोद ?

सुरेश : चाची ! विनोद का तो दूसरा जन्म हुआ है। वह तो माँ की दया और आपका आशीर्वाद रहा जो वह बच गया।

चाची : सच ! (मूर्ति से) माँ तू धन्य है। (रामू से) कहाँ है मेरा बच्चा, ले चल।

सुरेश : (रामू से) जा चाची को ऊपर ले जा। (रामू और चाची जाते हैं) संभाल के जा, कहीं गिराईयो नहीं चाची को। (रामू सीढ़ियों पर जाकर दायें तरफ़ घूमने लगता है) उधर नहीं इधर। (रामू और चाची बाईं तरफ़ जाते हैं, रमेश से) देखा कितना प्रेम रहा, भागती आई चाची ! तूने देखा हाथों में आटा लगा है, निश्चय दीवान जी के लिये पराठे बनाती होंगी। (विदेशी औरत से) चाची भी क्या पराठे बनाये देवी ! जो कभी

चाची के हाथ के पराठे खा लो, दुनियां के सब पदार्थ भूल जाओ। चाची उनमें मूली डाले, हरी मिर्ची डाले, हरा धनियां डाले, क्या क्या डाले। दही संग खा ले तो चार दिन में ऐसी गट्ट हो जाओ जैसी चाची है।

रमेश : (हंसता हुआ) लेकिन भैया! देवी को वह पराठे पचेंगे नहीं।

सुरेश : अरे क्या कहे तू (देवी से) तेरे से मज़ाक़ करे। (रमेश से) अरे तू क्या जाने देवी कितना मक्खन रोज़ खाये और कितनी कसरत करे, मैं रोज़ देखूँ घोड़े पर चढ़े। (देवी से) पर यह एक बात ठीक नहीं देवी! दोनों जाघें एक बाजू कर ले, कहीं गिर विर जाय तो (विदेशी औरत हँसती है) न देवी न, जो घोड़े पर बैठे तो ऐसे बैठे जैसे हमारे देश की स्त्रियें बैठें, यूँ शेरनी की तरह। (हाथ से बताता है) या वह कसरत कर जो हमारे देश की स्त्रियें करें। सवेरे उठें मुंह अंधेरे, यह चक्की (हाथ से बताता है) यह चर्खा और दही बिलोयें, क्या कसरत होय। या फिर सर पर घड़ा, घड़े पर गागर (रमेश से) ले देवी के सिर पर रख दे घड़ा, ऊपर रख दे गागर, हाथ में दे दे मटकी, यूँ ठुमुक ठुमुक चले। कितनी कसरत हो। फिर पराठे हज़म हों कि नहीं हों, जितने खाये उतने हज़म हों। चार दिन में यह ले तू (हाथ से मुटापे का इशारा करता है) दो मोढ़े बिछाये तो चैन से बैठे। (वह हंसती है)

रमेश : (सुरेश से) देवी जी कुछ कह रही थीं!

सुरेश : अरे मैं तो भूल ही गया था, तू कुछ कह रही थी न देवी! मैं तो चाची के पराठों में ही उलझ गया, जा देवी के लिये मूढ़ा बिछा दे। (रमेश पास रखे हुए मूढ़े को तख्त के पास रख देता है) आओ देवी! हमारे पास बैठो। (विदेशी औरत को मूढ़े पर बैठने का इशारा करता है और खुद दूर तख्त पर बैठता है।)

वि. औरत : हाँ, तो मैं अर्ज़ कर रही थी कि आपके दीवान जी अब बूढ़े हो गये हैं, किसी काम काज के क़ाबिल नहीं रहे। सरकार यह उम्र ही ऐसी होती है, इस मंज़िल पर पहुँच कर इन्सान का दिमाग़ शल हो जाता है और जिस्म काम काज करने से आजिज़।

सुरेश : क्या कह रही हो देवी ! वह हमारे बड़े हैं, हम उनकी छाँव में बड़े हुए हैं।

वि. औरत : यह बजा है सरकार ! लेकिन कभी भी आपने सोचा है कि कोई भी जवान आदमी उनके काम को बेहतरी से सरअंजाम दे सकता है ? बुढ़ापे की पस्त हिम्मती को जवानी की उलउलअज़मी से बदल दीजिये सरकार ! मैंने तो यह दरख़ास्त आपके ही फ़ायदे के लिये की है। मैंने तो पहले ही कहा था कि शायद मुझ पर बदगुमानी हो जाय।

सुरेश : नहीं देवी ! इस में बदगुमानी की कोई बात नहीं। तुम हमारी मेहमान हो, हम मेहमान पर शक और बदगुमानियाँ नहीं किया करते हाँ, यह मैं पहले कह चुका हूँ। मैं तो सिर्फ़ यह सोचता हूँ कि दीवान जी ने हमारी बचपन से देख भाल की है, हमने उनकी गोद में बैठकर अपने पुरखों की कहानियाँ सुनी हैं, उन्होंने हमें बच्चों की तरह पाला है, हमारे काम को अपना काम समझा है। (रमेश को मुख़ातिब करके बात करता है, रमेश सर हिला कर " हाँ " करता रहता है) वह हमारे जन्म से ही तो हमारी जागीर का काम कर रहे हैं, उनके बाल हमारी ख़िदमत में ही सफ़ेद हुए हैं, उनकी कमर हमारी जागीर के बोझ से ही झुकी है, फिर क्या हमें शोभा देगा कि हम उन्हें जवाब दे दें ? वह भी इसलिये कि वह बूढ़े हो गये हैं। न देवी यह हमारे देश की रीति नहीं।

वि. औरत : मेरी हरगिज़ यह मन्शा न थी सरकार कि आप उन्हें बुढ़ापे में तन्हा बे यारो मददगार छोड़ दें। उनको मन्थली एक्सपेन्सेज़ (Monthly Expenses) दीजिये, उनसे कुछ काम न लीजिये। (सुरेश अंग्रेज़ी न समझकर वि. औरत का मुंह तकता रह जाता है)

सुरेश : (रमेश से) क्या कहे देवी ?

रमेश : महीने का ख़र्चा !

सुरेश : (वि. औरत से) ठीक है ? (वह " हाँ " में सर हिलाती है, सुरेश ख़ुश होकर) अरे मेरे शेर तू तो पढ़ गया, आ आ मेरे पास बैठ, मैं रोज़ कहूँ कि क्या पुस्तकें पढ़े तू, समय नष्ट करे। तू तो विद्वान हो

गया, देवी ने कहा तू झट बूझ लिया। (रमेश खिसक कर सुरेश के पास बैठता है, सुरेश प्यार से उसके मुंह पर हाथ फेरता है) तू बोल ले देवी की भाषा! (रमेश "हाँ" में सर हिलाता है, सुरेश वि. औरत से पूछता है) यह तेरी भाषा बोल ले! (वि. औरत सर हिलाती है, रमेश से कहता है) ले भई तेरे मुँह से सुनें, कह दे रे कह दे।

रमेश : (बड़ी कोशिश के साथ होठों को गोल गोल कर के) मोन्थली एधोसेज़।

सुरेश : (ज़ोर से हंसता है) वाह वाह देवी! तेरी भाषा बड़ी सुन्दर है, कितनी सुन्दर है, होठों को गोल गोल करले मेरा वीर! (रमेश से) मैं भी बोलूँ! (रमेश "हाँ" में सर हिलाता है) अरे तू क्या जाने, देवी एक बार कहे, बस यूँ बोल "। (चुटकी बजाता हुआ वि. औरत से) थोड़ा ठहर जा देवी! ज़रा पेंतरा जमा लूँ फिर देख। (पाल्ती लगा कर बैठता है) देवी! हम तो जो काम करें पेंतरे से करें। भोजन करें तो पेंतरे से, पुस्तक बाँचें तो पेंतरे से, लड़ें तो पेंतरे से, प्रेम करें तो पेंतरे से। ले देवी! अब बोल।

वि. औरत : मन्थली एक्सपेन्सेज़। (Monthly Expenses)

सुरेश : (बोलने जाता है, देखता है कि रमेश आगे बढ़ कर उसके मुँह की तरफ़ टुकर टुकर झांक रहा है) अरे तू क्या देखे है बीच में! ले तू कौन! खाँमखाँ बीच में टपक पड़ा, बैठ जा के वहाँ दूर, तुझ से अच्छी न कहूँ तब कहिओ। (रमेश पीछे हट जाता है) ज़रा ध्यान जमा लेने दे, फिर देख, यह ध्यान की बातें हैं, क्यों देवी?

वि. औरत : हाँ सरकार!

सुरेश : (सुरेश फिर से ठीक से पालती लगा कर बैठ जाता है) ले अब कहो देवी!

वि. औरत : (एक एक लफ्ज़ स्पष्ट करके) मन्थली एक्सपेन सेज़। (सुरेश बोलने जाता है, उसका मुंह लाल हो जाता है, शब्द गले में अटकते हैं, बुरी तरह खाँसने लगता है जैसे दम रुक गया है।)

रमेश : (जल्दी से सुरेश के पास आता है।) भैया ! (छाती सहलाने लगता है)

सुरेश : (लम्बी सांस लेकर) यह बड़ी विकट भाषा है, मेरे तो गले में ही अटक गई, श्वास ही जाने लगी साथ ही। भाषा काहे की है यह तो जान का जोखों है। जीभा तालू से लगी, नीचे लगी, मैंने तो कहा जीभा ही गई, राम राम राम, तुम कोई मत बोलियो यह भाषा, अपना वह ही ठीक है जो तूने कहा, क्या कहा रहा ?

रमेश : महीने का खर्चा।

सुरेश : देख कितनी सरल, सहज रही यह भाषा, महीने का खर्चा।

वि. औरत : हाँ सरकार ! हमारे मुल्क में जो लोग बूढ़े हो जाते हैं उनको पेन्शन दी जाती है।

सुरेश : (रमेश से) हाँ रे उन्हें भैंस दी जाती है।

वि. औरत : नहीं सरकार भैंस काहे को। पेन्शन। (रमेश की तरफ़ देखकर फिर कहती है) पेन्शन !

सुरेश : क्या है रे ?

रमेश : (भोलेपन से) भैया ! मैं समझ तो गया, समझा नहीं सकता।

सुरेश : (नाराज़गी से) क्या पढ़ता है ? सुबह सुबह पुस्तकें लेकर बैठ जाता है, न जाय खेतों पर, न चले अखाड़े और यह पढ़ा है कि समझ गया, समझा नहीं सकता। क्या रखा है ऐसी पुस्तकों में जो समझ जाय समझा न सके। (रमेश वि. औरत से लिखने की पैन्सिल का इशारा करता है)

वि. औरत : नहीं सरकार पेन्शन। मैं समझाती हूँ, हमारे मुल्क में जो लोग बूढ़े हो जाते हैं और कोई काम काज करने के क़ाबिल नहीं रहते उनको पूरी तन्खाह तो दी नहीं जा सकती लेकिन उनकी गुज़िश्ता ख़िदमतों की ऐवज़ जो आधी तन्खाह दी जाती है....

रमेश : (बात काटकर, ज़ोर से) उसीको पेन्शन कहते हैं, उसीको।

सुरेश : (प्यार भरे गुस्से से) आ हा हा, बड़ा खुश हुआ सुन के, बात तो भैंस जैसी मोटी कह दी, बीच में दिया क्या ! क्या दिया रहा देवी ?

वि. औरत : आधी तन्ख़ाह।

सुरेश : आहा बड़ी कृपा की, बड़ा कर्म किया उन पर। उम्र भर काम करते रहे, समय आया आराम का, देवी जी ने आधी तन्ख़ाह काट ली! क्या भाषा है, क्या सभ्यता है। यही सीखेगा इनसे, कि बूढ़े बाबा बूढ़े हुए, जाओ आराम से घर में भूखे मरो। (सोच कर) लेकिन एक बात है देवी! हम आधी तन्ख़ाह काहे दें, पूरी काहे को न दें ताकि उनका ख़र्चा चलता रहे लेकिन वह काम न करें।

वि. औरत : हाँ सरकार!

सुरेश : वह काम काज न करें, उनका घर परिवार तो चलता रहे।

रमेश : वह घर में बैठकर भजन करें।

सुरेश : कुछ भी करें, पर "भूखे पेट न होय भजना" क्यों देवी? एक बात है, उनका काम कौन संभालेगा? इतनी बड़ी जागीर है, यह काम बड़ी ज़ुम्मेदारी का है।

वि. औरत : आप इसकी फ़िक्र न करें सरकार! मेरे हमराह एक ऐसा आदमी है जो इस काम को बख़ूबी सर अंजाम दे सकता है।

सुरेश : क्या बात करो देवी! तुम्हारा आदमी हमारे देश, हमारी भाषा, हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति से परिचित नहीं होगा, उसे हमारी ज़मीन और उसकी हालत की ख़बर न होगी, फिर भला वह यह काम कैसे कर सकेगा!

वि. औरत : आप इसकी भी फ़िक्र न करें। उसने यहाँ रहते रहते आप के रस्मो रिवाज, आप की जागीर के कारोबार, यहाँ के बाशिन्दों के रहन सहन, चाल ढाल से पूरी वाक़फ़ियत हासिल कर ली है, ज़राअत के इल्म पर उसको पूरा उबूर है। हमारे मुल्क में सायन्स के ज़रिये जो ज़मीन से ज़्यादा से ज़्यादा अनाज पैदा करने के तरीक़े निकले हैं उनसे वह बख़ूबी वाक़िफ़ है। (सुरेश सायन्स का मतलब न समझकर मुँह ताकता है, विदेशी औरत फिर कहती है) सायन्स।

सुरेश : यह क्या बात है देवी! तुम्हारे सब शब्द भैंस से मिलते जुलते हैं। (रमेश से) क्या है रे?

रमेश : भैया ! यह शब्द मेरी किताब में नहीं आया।

सुरेश : खबरदार कल से हाथ लगाया इन पुस्तकों को, देख तेरा क्या हाल करता हूँ। (विदेशी औरत से) न जाय मेरे साथ खेतों को, न जाय अखाड़े में, सारा दिन बांचे तेरी पुस्तकें और यह पढ़ा कि समझ गया, समझा नहीं सकता, बाक़ी पुस्तक में नहीं।

वि. औरत : आप नाराज़ न हों सरकार ! मैं समझाती हूँ।

सुरेश : नहीं देवी ! हम सीधे लोग हैं, सीधी बातें करें, मुँह पर कह दें। बुरी लगे या भली। यह पाप है, विद्या की चोरी है। विद्या का दान दो, पूरा दान दो। यह क्या, समझ लिया, समझा नहीं सकता, बाक़ी पुस्तक में नहीं।

वि. औरत : विज्ञान सरकार !

सुरेश : हाँ ठीक है, विज्ञान। बस देवी, हमारे साथ जो बात करो हमारी भाषा में करो, नहीं तो नहीं सुनें। (पसीना पोंछते हुए) हे राम ! कितनी गर्म भाषा है, पसीने छूट गये। (रमेश से) चल आ रे। (रमेश मुँह बसूर लेता है, रमेश की तरफ़ देखकर) छुईमुई का बूटा है, ज़रासी बात में यूँ हो गया। (रमेश से) अरे मैंने तुझे थोड़ी कहा, मैं तो भाषा की बात करुं। क्या रखा है ऐसी भाषा में, समझ जाय, समझा न सके, बाक़ी सुसरी पुस्तक में नहीं। (प्यार से) आ जा मेरे वीर ! देख देवी क्या कहे, सुन। हंस दे, ज़रा हंस दे। (प्यार से रमेश को लिपटा लेता है, देवी से) हाँ देवी, अब कह दे। हमारी भाषा में कहियो जो कहना है।

वि. औरत : सरकार ! हमारे मुल्क में विज्ञान के ज़रिये जो ज़मीन से ज़्यादा से ज़्यादा अनाज पैदा करने के तरीके निकले हैं उनसे वह बखूबी वाक़िफ़ है। आपकी जागीर में कई इलाके बंजर पड़े हैं, उनको ज़रखेज़ करने के लिये उसके पास चन्द मुफ़ीद तजावीज़ हैं, वह नक़्शे के ज़रिये आपको सब समझा सकता है। मुझे यक़ीन है कि अगर आप उसको अपना दीवान बना दें तो आपको बेहद फ़ायदा होगा। आपको अपने इन्तखाब पर पछतावा न होगा और न मुझको अपनी सिफ़ारिश पर

शर्मिन्दगी। अगर इजाज़त हो तो हाज़िर करूं, आप खुद ही मुलाहिज़ा कर लीजिये। हाथ कंगन को आरसी क्या?

रमेश : ज़रूर ज़रूर। (सुरेश से) अगर ऐसी बात है भैया! तो हम ज़रूर उसकी क़द्र करेंगे।

सुरेश : अच्छा तो आप उन्हें बुला लीजिये। (वि. औरत जाती है, रमेश से) अरे तू कुछ समझा भी? मैं तो देवी की भाषा में उलझ रहा, मैं तो देवी की आधी बात समझा।

रमेश : आधी आप समझ गये न, आधी मैं समझ गया।

सुरेश : चल पगले, ऐसा कहीं होय। (वि. औरत अपने साथियों के साथ दखिल होना ही चाहती है कि दीवान जी, वैद्य जी के साथ दाखिल होते हैं, देवी रुक जाती है।) see my name on page 90.

दीवान : वैद्य जी आये हैं। (सुरेश वैद्य जी को आदर से बिठाता है)

वैद्य : बेटा! विनोद की तबीयत कैसी है?

सुरेश : वैद्य जी! वह औरत तो सचमुच देवी निकली! उसने विनोद को कुछ सुइयां चुभाईं, वह तो उठकर बैठ गया, होश में आगया, बातें करने लगा।

वैद्य : (चौंक कर) सुइयां! सुइयां चुभाने से तो उसकी हालत और भी खराब हो गई होगी?

सुरेश : नहीं वैद्य जी! वह तो बिलकुल अच्छा हो गया।

वैद्य : (मूर्ति को सर नवा कर) बेटा! सब माँ की दया है।

सुरेश : आपका आशीर्वाद है। (रमेश से) जा वैद्य जी के लिये पालकी का इन्तज़ाम कर दे।

रमेश : ओ कन्हैया!

कन्हैया : जी मालिक!

रमेश : पालकी निकाल रे! पालकी! (रमेश व वैद्य जी जाते हैं। वि. औरत मय अपने साथियों के दाखिल होती है।)

वि. औरत : सरकार! (विदेशी न. १ की तरफ़ इशारा करके)

यह है वह शख्स।

वि. आदमी १ : दान वास्को ल्राफ़ा दी तरीता (सुरेश कुछ न समझ कर रमेश को आवाज़ देता है।)

सुरेश : रमेश ! ओ रमेश ! (रमेश आता है)

रमेश : (दाखिल होकर) क्या है भैया ?

सुरेश : देख।

वि. आदमी १ : दान वास्को ल्राफ़ा दी तरीता (सुरेश परदेसी के माथे पर हाथ रखता है, रमेश हंसता है और फिर सुरेश को समझाता है।)

रमेश : यह अपना और अपने बाप दादा का नाम बताता है।

सुरेश : हरे राम राम ! मैं तो समझा क्या हो गया, शायद यहाँ की गर्मी से साहब का माथा गरम हो गया है। (परदेसी से) शाबाश ! अपने बुज़ुर्गों को हमेशा याद रखना चाहिये। (रमेश के पास आकर धीरे से) यह पाँव से क्या कहे ?

रमेश : यह पाँव से यूँ हाथ जोड़े। (हाथ जोड़कर अभिनय करता है।)

सुरेश : हे राम ! पाँव से हाथ जोड़े, हे राम ! ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी। (परदेसी औरत से) आओ देवी ! मेरे पास बैठो। (सुरेश उसको दूर ही बिठाता है और ख़ुद तख्त पर बैठता है।) आज पता चला तुम पाँव से हाथ जोड़ो। लो हमारी राम राम (पाँव जोड़कर दिखाता है।)

वि. आदमी १ : (नक्शे दिखाता हुआ) हज़ूर यह हैं वह नक्शे जो मैंने इन्तहाई मेहनत से कड़कती धूप में फिर कर तय्यार किये हैं।

सुरेश : शाबाश, यह बात आप लोगों की सीखने लायक़ है, जब काम करने का वक्त आया बस डट गये, न धूप देखी न छाँव, न रात देखी न दोपहर, यूँ मुस्तैद। हमारे तो अन्न में ही आलस रहा, कन्हैया ही देख लो, रोटले खाय, छाछ पी और पड़के सो रहे, फिर दिन ढले उठे।

वि. आदमी १ : हाँ सरकार ! मैं अर्ज़ कर रहा था। (नक्शे में दिखा कर) आपकी जागीर शुमाल में यहाँ तक, जनूब में वहाँ तक, मशरक़ में इस मुक़ाम तक और मग़रब में इस नुक़्ते तक फैली हुई है।

वि. औरत : (एक दम सुरेश की बग़ल में आकर बैठती हुई) और हम इसी मग़रबी सरहद पर लुट गये थे सरकार !

सुरेश : (घबराकर फ़ौरन उठता हुआ) अरे देवी ! तुम तो लूट लीं गईं, कहीं हम न लुट जांय, वहीं बैठो। हमारे देश में परपुरुष परस्त्री के साथ जुड़ जुड़ नहीं बैठे हैं, यह तो ख़ैरीयत गुज़री रमा ने नहीं देख लिया, वह तो मेरी मूंछ उखाड़ के मेरे हाथों पर रख देती। और कोई सेवा हो तो कहो देवी, पर यह नहीं, बैठो वहीं।

रमेश : (एक दूसरा मूढ़ा उठाकर रखता है) देवी ! भैया के सहारे नहीं (मूढ़े की पुश्त बताकर) इसके सहारे बैठो, इसके सहारे।

सुरेश : देवी बुरा न मानो, हमें आज तक तुम्हारी समझ ही नहीं आई। हमारे देश में कई लोग आये। (नक़्शा दिखा कर) उत्तर पश्चिम से आये, हमने उन्हे अपनाया, वह हमारे भाई बन गये, हम सब एक हो गये। तुम तो विचित्र लोग हो, विचित्र तुम्हारी भाषा, विचित्र तुम्हारी पोषाक, विचित्र तुम्हारा रहन सहन, और विचित्र तुम्हारा रास्ता। भला यह भी कोई रास्ता है, पानी से आये, डूब नहीं गये।

रमेश: भइया ! यह कोई जान बूझ कर थोड़े ही आये। (नक़्शा दिखा कर) यह पानी है न, यहाँ मछलियां पकड़ रहे थे। रास्ता भूल गये और इधर आगये।

सुरेश : हरे राम राम।

वि. आदमी : (नक़्शा पर बताकर) हज़ूर आपके यह इलाक़े निहायत सरसब्ज़ो शादाब हैं। वह सब्ज़ निशान इसी चीज़ को ज़ाहिर करता है, और यह सुर्ख निशान जो है, इसका मतलब यह है कि यहाँ गेहूं और धान की पैदावार बहुत अच्छी होती है, और जिस जगह पर कोई रंग नहीं भरा गया इसका मतलब यह है कि यह इलाक़ा बिलकुल ही बंजर है, यहाँ कोई पैदावार नही होती।

सुरेश : हाँ, वहाँ तो रेता ही रेता है। होय तो ज्वार बाजरी होय और मूँगफली होय।

वि. आदमी १ : हुज़ूर मैं इन मुक़ामात पर खुद गया हूँ, चूंकि यह मुक़ामात पानी से ऊँचे हैं इसलिये पानी की क़िल्लत की वजह से यहाँ कोई पैदावर नहीं हो सकती।

सुरेश : तो आपने क्या सोचा है !

वि. आदमी १ : (नक़्शा लपेटकर साथी को देता है।) हमारे मुल्क में सायन्सदानों ने Tube Well (ट्यूबवेल) ईजाद किये हैं जिनकी मदद से यहाँ पानी बोहतात से पहुँचाया जा सकता है।

सुरेश : क्या उससे बारिश होती है ?

वि. आदमी १ : नहीं हुज़ूर, उससे ज़मीन के अन्दर से पानी निकाला जाता है।

सुरेश : अरे हमें पागल समझे क्या ! हम भी तो चरसे, ढेकली से पानी निकालते हैं। बस नाम बदल कर रख दिया।

वि. आदमी १ : नहीं हुज़ूर ! चरसे ढेकली और Tube Well (ट्यूबवेल) में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। चरसे ढेकली से आप वह पानी निकाल सकते हैं जो इन्सानी पहुँच के अन्दर है और Tube Well (ट्यूबवेल) से आप वह पानी निकाल सकते हैं जो इन्सानी पहुंच से बिलकुल बाहर हो चुका है।

वि. आदमी २ : इससे ज़मीन के अन्दर से गहरे से गहरा पानी निकाल सकते हैं।

सुरेश : यह तो बहुत अच्छी बात है, तब तो उसमें बहुत से बैल लगते होंगे !

वि. आदमी १ : नहीं सरकार ! न उसमें बैल लगते हैं, न आदमी की ज़रुरत है।

सुरेश : तो क्या भूत चलाते हैं, तभी तुम भूत बैल, भूत बैल कहते हो।

वि. आदमी २ : सरकार वह कल से चलते हैं।

सुरेश : (देवी से) मैं तो समझा तुम्हारा आदमी भूत विद्या भी जानता है। क्या यह हमारे मुल्क में नहीं बन सकते !

वि. औरत : बन सकते हैं सरकार ! लेकिन फ़िलहाल नहीं। इनके

बनाने में काफ़ी अर्सा लगेगा और हम जल्द ही आप के लिये अपने मुल्क से मंगवा देंगे।

वि. आदमी २ : और हजूर आपका मुल्क ज़राअती मुल्क है, हमारे मुल्क में दस्तकारी आम पेशा है, हम वहाँ से यह बहुत जल्द मंगवा सकते हैं।

रमेश : लेकिन आप इसका मुआवज़ा क्या लेंगे ?

वि. औरत : (तिनक कर) आपने मुआवज़े की अच्छी कही, जैसे यह सब कुछ हम किसी मुआवज़े के लिये कर रहे हैं।

सुरेश : नहीं देवी जी ! रमेश जी का यह मतलब नहीं, लेकिन दाम तो पूछने ठहरे।

चाची : (आकर) रमेश जी, रमेश जी ! जाइये विनोद आपको बहुत याद कर रहा है, अब तो बातें कर रहा है, कहता है बड़ी माँ, बड़ी माँ, तुम न जाओ। मुझे तो छोड़ता ही न था।

सुरेश : आपसे तो बड़ा प्रेम है उसका।

चाची : अब आप उसका ख्याल ज़रूर रखें।

सुरेश : (मूर्ति की तरफ़ इशारा करके) माँ जगदम्बा ख्याल रखेगी।

चाची : (हाथ जोड़कर देवी से) आपने बड़ा उपकार किया है हम पर, बड़ा उपकार।

सुरेश : यह तो और भी उपकार कर रही हैं अब।

चाची : (जाते जाते) अच्छा अब मैं जाती हूँ, धूप चढ़ रही है, आप के दीवाना जी के लिये खाना बनाना है। आप तो जानते हैं वह किसी दूसरे के हाथ का बनाया खाते ही नहीं हैं।

सुरेश : यह तो उनकी पुरानी आदत है चाची ! पहली चाची के समय में भी ऐसा ही होता था, हाँ, (चाची जाती है और मुड़ मुड़कर सुरेश की तरफ़ बनावटी गुस्से से देखती जाती है। सुरेश हंसता है।)

वि. आदमी १ : हजूर जैसा कि मैं अर्ज़ कर रहा था, आपका मुल्क ज़राअती मुल्क है, और हमारे मुल्क में दस्तकारी आम पेशा है, हम वहाँ से यह मशीनें बहुत जल्द मंगवा देंगे।

वि. औरत : और इन मशीनों की क़ीमत.........

सुरेश : हाँ हाँ देवी कहो।

वि. औरत : आप अनाज से दे सकते हैं।

सुरेश : क्या बात करो देवी! तुम हमें इतना नीच समझो कि हम इतने बड़े बड़े जंत्र ले लेंगे इतना सा अनाज देके। अनाज तो भगवान की देन है, कोठे भरे रहे हैं, खेतों में पड़ा रहे है, चिड़ी जानवर खायं, तुम भी उठा के ले जाओ जितना चाहो। (परदेसी आदमियों से) भई तुम बड़े सीधे लोग हो। (परदेसी औरत से) और देवी तुम! तुम तो सच में देवी हो। इतने बड़े बड़े जंत्र लाके दो और उनकी क़ीमत अनाज! न हीरे, न पन्ने, न मोती, न जवाहर! देवी विराज जाओ अपने आसन पर। (मूढ़े की तरफ़ इशारा कर के) लाद दें मोतियों से तुम्हें, सोने से घर भर दें तेरा। (देवी सुरेश के पास तख्त पर बैठती है, वह यह देखकर घबरा जाता है और उठ कर मूढ़े पर जा बैठता है।) न देवी! यह मज़ाक़ ठीक नहीं, कहीं रमा ने देख लिया तो मेरी मूंछ की ख़ैर नहीं। तुम्हें तख्त पर बैठने का बड़ा शौक़ है तो बड़े शौक से बैठो। तुम हमारे लिये इतनी चिन्ता करो तो क्या हम इस बात पर संकोच करने लगे, पर ज़रा इतनी कृपा रखियो कि जुड़ जुड़ के नहीं। (कुछ सोच कर) हाँ! वह जो तुम कह रहे न, वह भूत बैल?

वि. आदमी १ : जी हाँ ट्यूबवेल।

सुरेश : हाँ हाँ! भूतबैल। उनके चलाने और बिगड़ जाने पर बनाने के लिये आदमियों की ज़रूरत होगी, हम तो आज तक अपने पुरखों के बनाये हल और रहट चलाते आये हैं।

वि. आदमी १ : हजूर! शुरू शुरू में कुछ Experts (एक्सपर्टस) हम अपने मुल्क से मंगवा लेंगे।

सुरेश : यह भी कोई यंत्र है?

वि. आदमी १ : Experts (ऐक्सपर्टस)

वि. आदमी २ : Experts (ऐक्सपर्टस)

रमेश : (सीढ़ियों से उतरते हुये) ठहरिये भैया, मैं आया। यह शब्द मेरी किताब में आया है।

सुरेश : अरे आ रे, यह तो मुझे उलझन में डाल दे।

रमेश : (पास आकर विदेशी १ से) हाँ, अब कहो।

वि. आदमी १ : हुज़ूर मैं अर्ज़ कर रहा था कि शुरु शुरु में हम कुछ [1]Experts (ऐक्सपर्टस) अपने मुल्क से मंगवा लेंगे और जैसे जैसे आप के आदमी काम काज संभालने के क़ाबिल होते जायेंगे, हमारे आदमी अपनी अपनी जगहों से दस्तबरदार होते जायेंगे।

रमेश : बिलकुल ठीक है।

वि. आदमी १ : सरकार सीधी सी बात है, मतलब साफ़ है।

सुरेश : (रमेश से) अरे कुछ मुझे भी समझायगा ?

रमेश : (खुशी से) कारीगर आंयगे, चले जांयगे।

सुरेश : बाप का घर है, आंदगे चले जांयगे, सैरगाह बना रखी है !

वि. आदमी १ : नहीं हुज़ूर जब आपके आदमी अच्छी तरह काम काज सीख जांयगे तब जायगे।

सुरेश : हाँ, यह तो कोई बात हुई।

वि. आदमी १ : छोटे सरकार ठीक समझ नहीं सके।

सुरेश : हाँ यह तो समझ गया, समझा नहीं सकता, तो क्या आप भी चले जायेंगे ?

वि. आदमी १ : नहीं हुज़ूर ! हमें तो आपकी ख़िदमत का शर्फ़ हासिल है....

रमेश : यह कभी नहीं जायेंगे भइया ! कभी नहीं जायेंगे।

सुरेश : हाँ यह बड़े अच्छे लोग हैं। (देवी से) पर तुम्हारे देश भाई अपने घर बार, बाल बच्चे छोड़कर इतनी दूर आयेंगे किस लिये ?

वि. औरत : सरकार हमारे यहाँ सोने की कमी है, अनाज की कमी है और आपके यहाँ इन दोनों चीज़ों की बुहतात है। इसलिये आपको

[1] होशियार।

एहसास भी नहीं हो सकता है कि मुट्ठी भर अनाज और सोने के एक टुकड़े के लिये इन्सान क्या से क्या कर सकता है।

सुरेश : यह सत्य है देवी! लेकिन तुम इसकी चिंता न करो, हम तुम्हारे देश में किसीको भूखा नहीं रहने देंगे। हम भले ही ज्वार बाजरी खायें, ऑटे में इमली के बीज कूट कूट कर खायें, लेकिन जितना अच्छा ऑटा, चावल और घी है सब तुम्हारे देश में भेज देंगे। आज से आप हमारे दीवान हैं।

वि. आदमी १ : दान वास्को लराफा दी तरीता, थैंक्यु सर! धन्यवाद सर!

सुरेश : रमेश! दीवान जी से कहना इन्हें सब काम काज अच्छी तरह से समझा दें।

रामू : (दाखिल होकर) बड़े मालिक! बड़े मालिक! मालकिन कहती हैं विनोद आपके लिये बड़ी ज़िद्द कर रहा है, आप जल्दी आइये।

सुरेश : मैं आया (जाने को उठता है) मेरे शेर ने ज़िद्द शुरू कर दी।

वि. आदमी १ : हजूर एक अर्ज़ और है, जब बंजर ज़मीनों को ज़रखेज़ बनाने का काम शुरू होगा तो कभी कभी आपकोभी तकलीफ़ उठानी पड़ेगी।

सुरेश : अरे इसमें तकलीफ़ की क्या बात है, हम तो खुद हाथ से हल चलाने वाले लोग हैं। मैं तो आया ही करुँगा, वैसे रमेश वहाँ जाकर खुद रहेगा। (रमेश से) हाँ रमेश! वह भूत बैलों के बारे में सब कुछ समझ लेना और फिर मत कहना कि समझ गया समझा नहीं सकता। (जाता है, अन्दर से) देख मेरे शेर! तेरे लिये क्या क्या यंत्र मंगा रहा हूँ।

वि. औरत : (रमेश के पास आकर) सरकार! आप देखियेगा कि साल भर में हम क्या से क्या कर गुज़रते हैं।

रमेश : देवी! हमें आप से यही आशा है, आप ज़रूर कुछ न कुछ करेंगी ही। अच्छा, अभी मुझे आज्ञा दीजिये, मुझे खेतों पर जाना है, वहाँ से लौटकर सब बातें करेंगे। (जाता है)

वि. औरत : (अपने साथियों से) शिकार हाथ में आता जा रहा है, तुम जाओ सब सामान ले आओ। (दोनों जाते हैं, देवी मूर्ति के पास आकर कहती है) तुम्हारे जिन बच्चों ने तुम्हें यह मुक़ाम दिया है वह कल खुद ही तुमसे यह रुतबा छीन लेंगे और यहाँ मेरा मुजस्सिमा नस्ब करेंगे। आज वह यहाँ बैठकर तुम्हारी आरती उतारते हैं, कल वह यहाँ बैठकर मेरे क़सीदे गायेंगे। मुझे तुम्हारे परिस्तारों की परस्तिश पर हंसी आती है, तुम्हारी आरज़ी खुदाई पर रहम आता है।

रमेश : (बाहर आकर) भाबी राम राम! मैं खेतों पर जा रहा हूँ।

वि. औरत : (रोक कर) छोटे सरकार!

रमेश : हमसे कुछ कहना है देवी?

वि. औरत : लब कुशाई की इजाज़त चाहती हूँ!

रमेश : कहो देवी!

वि. औरत : यह आपकी इनायत है इसीलिए तो कुछ कहने की जुर्रत कर रही हूँ, मगर हिम्मत जवाब दे रही है।

रमेश : आख़िर इसकी कोई वजह भी तो हो, तुम तो ख़ामखाँ डरती हो।

वि. औरत : नहीं सरकार मुझे दुनियां में किसी चीज़ का भी ख़ौफ़ नहीं, बड़ी से बड़ी क़ुव्वत से लड़ जाया करती हूँ, मगर डर लगता है।

रमेश : हमसे?

वि. औरत : नहीं आपके तेवरों से! (हंसती है) आप कितने भोले हैं छोटे सरकार! अब जब बंजर ज़मीनों में काम शुरू होगा तो वहां भी आप जाया करेंगे और उस वक़्त जबकि आप मेहनत करते करते पसीने में शराबोर हो जांयगे तो बड़े सरकार अपने महल में बैठे सितार ही तो बजाया करेंगे। क्या आप बता सकते हैं कि बड़े सरकार सितार बजाने के सिवाय करते ही क्या हैं?

रमेश : जागीर का सारा इन्तज़ाम भइया खुद ही करते हैं, देवी तुम नहीं जानतीं यह काम कितनी ज़ुम्मेदारी का है। इसमें उन्हें कितना सर खपाना पड़ता है। देवी, वह दिमाग़ हैं। मैं जिस्म हूँ।

वि. औरत : जानती हूँ, बखूबी जानती हूँ, इसीलिये तो आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ। आप बता सकते हैं कि हल में जुते हुए बैल और हल चलाने वाले किसान में कितना फ़र्क़ होता है ?

रमेश : (गुस्से से) देवी !

वि. औरत : मैं न कहती थी आप मुझ से नाराज़ हो जायेंगे, गल्ती हुई, मुझ से गुस्ताखी हुई, मैंने तो पहले ही खदशा ज़ाहिर कर दिया था कि मैं गलत समझी जाऊँगी।

रमेश : लेकिन हम भइया के खिलाफ़ कुछ नहीं सुन सकते।

वि. औरत : छोटे सरकार ! मुझे यह सब आप से न कहना चाहिये था, लेकिन न जाने क्यों आपके लिये मेरे दिल में इतनी...

रमेश : (बात काट कर) हमदर्दी है, शुक्रिया। (गुस्से में तेज़ी से चला जाता है, दोनों विदेशियों के साथ कई आदमी सामान लेकर दाखिल होते हैं और सामान रख कर चले जाते हैं।)

वि. औरत : अच्छा हुआ तुम वक्त पर आये, सुरेश अभी बाहर जा रहा है।

वि. आदमी १ : लेकिन इन सब चीज़ों के देने से फ़ायदा क्या होगा ?

वि. औरत : इन चीज़ों के देने से फ़ायदा क्या होगा ! इनके तमद्दुन में गहराई है, बुलन्दी है। हमारी तहज़ीब में भड़क है, नुमायश है। इनके फ़लसफ़े में बुढ़ापे की अज़मत है, हमारे ख्यालात में जवानी का लोच। खण्डर कितने ही अज़ीम क्यों न हों, उनमें एक नई इमारत का तत्व कहाँ ? समुन्दर में गोते लगाकर मोती ढूँढ़ने से बाग़ में तितलियां पकड़ना कहीं ज़्यादा आसान है। इन चीज़ों के देने से यह होगा कि यह लोग मोतियों की आब भूलकर तितलियों के पर पकड़ने दौड़ेंगे। बस फिर क्या है, यह लोग हमारी उंगलियों पर नाचेंगे। यह अपनी ज़िन्दगी के अन्दाज़ भूल जायंगे। इनके जिस्म पर हमारा लिबास होगा, इनके मुंह में हमारी ज़बान, इनके दिमाग़ पर हमारा गल्बा होगा, और इनके पांव में

हमारी ज़ंजीरें! (सुरेश के आने की आवाज़ सुनकर) आदाब बजा लाती हूँ सरकार!

सुरेश : (दाखि़ल होकर) अरे अभी तक भूत बैलों में ही उलझे हुऐ हो!

वि. औरत : आपके लिये चन्द नाचीज़ तोहफ़े लाई हूँ, इन्हें कबूल फ़रमा कर हमें इज्ज़त बख्शिये।

सुरेश : (हेट को छड़ी पर उठाते हुऐ) अरे यह क्या है!

वि. आदमी २ : सर पर पहनने की टोपी है सरकार!

सुरेश : अच्छा खा़सा छाता है, ज़रा पहनिये (विदेशी २ हेट पहनता है) अरे आप तो छिप गये। (विदेशी २ हेट ऊपर सरकाता है) हाँ, अब नज़र आये। (विदेशी २ हेट उतार कर रखता है) पहने रहिये, पहने रहिये, कोई बात नहीं।

वि. आदमी २ : नहीं सरकार! हम इसे कमरे में नहीं पहनते, बाहर जाते पहनते हैं।

सुरेश : विचित्र बात है। (अपने सा को बताकर) हम तो घर में पहनें, बाहर पहनें और सोते समय तकिया बना लें।

वि. आदमी २ : अपने अपने आदाब हैं सरकार!

सुरेश : क्या मैं देख सकता हूँ?

वि. आदमी २ : ज़रूर ज़रूर (हेट पेश करता है, सुरेश कपड़े से उसे पकड़ता है, विदेशी १ चौंकता है)

सुरेश : यह हमारे देश के आदाब हैं। (हेट को ग़ौर से बाहर भीतर देखता है) वाह फूल जैसा हल्का है, फूंक दूँ वहाँ जा गिरे, है सुन्दर। जैसे आपकी भाषा गोल गोल वैसे यह गोल गोल। (अन्दर देखकर) अरे इसमें तो नकसा बना है।

वि. आदमी २ : बनाने वाली कम्पनी का नाम लिखा है। (सुरेश हेट को नाक के पास लाता है।)

सुरेश : (सूंघ कर बू से घबराता है) हरे राम राम! भई तुम्हारे देश

की चीज़ों में एक बात बड़ी विचित्र है, उपर से देखने में बड़ी सुंदर, बीच में कोई न कोई गड़बड़ रह ही जाय है।

वि. आदमी १ : छोड़िये हज़ूर, आपको घोड़े की सवारी का शौक़ है। [1](Hanger (हॅंगर) पर से [2]Breeches (ब्रिचेज़) निकाल कर) इसके पहनने से टांगों को बिलकुल तकलीफ़ नहीं होती। (सुरेश Hanger (हॅंगर) उठा कर रकाब की तरह पैर डाल्ता है।)

सुरेश : भई क्या क्या विचित्र यंत्र बनाते हो।

वि. आदमी १ : (Hanger लेकर) नहीं सरकार! यह तो सिर्फ़ कपड़ा लटकाने के लिये है। (Breeches (ब्रिचेज़) दिखा कर) वह यह चीज़ है, जिसका मैं ज़िक्र कर रहा था।

सुरेश : (Breeches को ग़ौर से देखकर) अरे यह तो अपना घुटन्ना है।

वि. आदमी १ : नहीं हज़ूर यह Breeches (ब्रिचेज़) है।

वि. आदमी २ : (कई दफ़ा कहता है) Breeches (ब्रिचेज़) Breeches (ब्रिचेज़) Breeches (ब्रिचेज़)

सुरेश : तुम हज़ार बार कहो तो क्या, यह घुटन्ना है।

वि. आदमी १ : नहीं हज़ूर Breeches (ब्रिचेज़) और घुटन्ने में बहुत फ़र्क़ है। आप इसे ग़ौर से देखिये।

सुरेश : (कपड़े से पकड़ कर Breeches (ब्रिचेज़) हाथ में लेकर ग़ौर से देखता है, फिर इसकी एक जेब में छड़ी डाल कर कहता है) यह क्या!

वि. आदमी १ : Pockets (पाकेटस) (सुरेश कुछ नहीं समझ पा रहा है)

वि. आदमी २ : pockets (पाकेटस,) pockets (पाकेटस) (अपने कोट की जेब में हाथ डाल कर दिखलाता है) pockets (पाकेटस।)

सुरेश : ओ ख़ीशा! (देवी से हंसता हुआ) भला घुटन्ने में भी किसी

---

१ जिस पर कपड़ा लटकाते हैं। २ एक क़िस्म का पहनने का कपड़ा।

ने फाटक लगवाये हैं, कोई सुनेगा तो हंस देगा। पर एक बात है, है यह बड़ी बुद्धिमानी की बात, खेतों को गये कोई स्वच्छ सी गाजर देखी, मूली देखी उठा कर रख ली। (हाथ से इशारा करता है) अब हमभी अपने घुटने में यह लगवायेंगे।

वि. आदमी १ : अब आप इसीको पहना करें, यह आपहीके लिये है।

सुरेश : अच्छा! (एक नज़र फिर ग़ौर से देखता है और विदेशी १ को अलहदा ले जाकर कहता है) एक बात है, इसमें नाला डालने की कोई जगह नहीं![1]

वि. आदमी १ : (Breeches (ब्रिचेज़) को हाथ में लेकर और Belt (बेल्ट) को दिखला कर) इसमें नाले का काम हमने बटनों से लिया है।

सुरेश : (क़दरे चौंक कर) नहीं नहीं, यह टूट फूट जायें, यह बड़ा ख़तरनाक काम है। (देवी के पास आता है जो चाय का ख़ाली प्याला दिखला कर कहती है।)

वि. औरत : यह बर्तन हैं सरकार! हमारे देश के बर्तन, ज़रा इनकी नफ़ासत मुलाहिज़ा फ़रमाईये।

सुरेश : (प्याला और प्लेट हाथ में लेकर) वाह देवी! तुम्हारे देश की हर चीज़ सुन्दर है। (प्लेट में अपना अक्स देखकर) वाह! वाह!! इसमें तो मुंह दिखे है! (विदेशी २ पीछे खड़ा होकर अपना अक्स भी देखता है। सुरेश उसे देखकर उसके सामने प्लेट कर देता है) ले तू भी देख ले। आहा! हनुमान जी की सेना सामने खड़ी देख लो। (हंसता है, फिर विदेशी औरत से कहता है) इसमें हम खायेंगे क्या! इतना तेल तो हम कान में डाल लें।

वि. आदमी १ : इसमें हम आपको चाय पिलायेंगे हुज़ूर।

वि. आदमी २ : चाय, Tea, Tea, चाय (सुरेश कुछ नहीं समझ रहा)

---

१ पेटी।

Inolkand

वि. आदमी १ : चाय नहीं समझते हजूर ? चाय एक क़िस्म की हरी पत्ती होती है जो गर्म करने से काली हो जाती है, फिर उस पत्ती को गर्म पानी में डाल दिया जाता है तो वह अपनी खुश्बू और रंग पानी में छोड़ देती है जिसके पीने से दिलो दिमाग़ को फ़रहत हासिल होती है और जिस्म में चुस्ती आती है।

सुरेश : अच्छा ख़ासा नुस्खा है, अपने वैद्य जी को दे दीजियेगा, कोई बीमार हमार हुआ तो दे दिया करेंगे।

वि. आदमी १ : नहीं हजूर यह तन्दुरस्तों के पीने की चीज़ है।

वि. आदमी २ : हाँ हजूर ! इसके पीने से दिलो दिमाग़ को फ़रहत हासिल होती है और जिस्म में बहुत चुस्ती आती है। (अकड़ कर, चुस्त होकर खड़ा हो जाता है।)

सुरेश : वाह ! क्या चुस्तियां हैं मेरे वीर की ! (उसके कंधे पर हाथ रखता है, विदेशी गिर जाता है, सुरेश यह देखकर हंसते हुए कहता है।) अरे नहीं चाहिये ऐसी चुस्तियां ! हम तो दूध के यह बड़े बड़े कटोरे और घड़े पी जांय, हम यह बलायें नहीं पीयें जिससे यह चुस्तियां पैदा हों। (प्याला देता हुआ) ले संभाल।

वि. आदमी २ : (सहमा हुआ जो उठकर दूर खड़ा हो गया है, प्याला लेते डरते हुए कहता है) मारेगा तो नहीं ?

सुरेश : अरे मैंने कहाँ मारा तुझे ! मैंने प्यार से हाथ रखा, तू लेट गया। मैं मारुँ तो ज़मीन में न धंस जाय तू, ले संभाल इसे। (विदेशी २ प्याला ले लेता है। सुरेश जाने लगता है लेकिन आरगन (Organ) बाजे को देखकर रुक जाता है।) यह क्या है ?

वि. औरत : सरकार हमारे देश का बाजा।

सुरेश : अच्छा ! तो तुम्हारे देश में संगीत का भी शौक़ है ? मैं तो समझा था तुम सिर्फ़ व्यापार की बात जानों, चार और चार आठ और चार पच्चीस। हमारे बुज़ुर्ग कह गये हैं जिस देश का संगीत जीवित है वह देश जीवित है। आप इसके साथ गाते भी हैं !

वि. आदमी १ : आपको गाना सुनने का बहुत शौक़ है।

सुरेश : मेरे कंठ में तो स्वर नहीं, पर सुनने का बहुत शौक़ है।

वि. आदमी १ : (विदेशी २ से) हजूर को गाना सुनाओ, बेहतरीन गाना, हजूर का दिल खुश कर दो।

वि. आदमी २ : बहुत अच्छा सरकार ! ऐसा मीठा मीठा हमारा गाना सुनायेगा, आपकी तबीयत बहुत खुश करेगा। आप बेटो, हम गाता है। (बाजे पर बैठता है) *, see my name on page 59.

सुरेश : (तख्त पर बैठते हुए) अम बेटो, तुम बेटा। (सब हंसते हैं। विदेशी नं. २ बाजा बज कर अंग्रेज़ी गाना शुरु करता है, ऊंचे स्वरों में ले जाता है और हो हो की सी आवाज़ निकालता है। सुरेश तख्त से घबरा कर उठता है, ठीक इसी वक्त कन्हैया हाथ में मोटा लठ उठाये दाखिल होता है और विदेशी नं० २ पर झपटता है। वह घबरा कर भागता है, सुरेश कन्हैया को रोकता हुआ हंसता है और कन्हैया से कहता है।) अरे साहब गा रहे थे, चल भाग। (कन्हैया खिसयाना सा हो, घबराया हुआ लौट जाता है। अब सुरेश विदेशी २ से कहता है) यह तो खैरीयत गुज़री कि सिर्फ कन्हैया ही आया, मुझे तो डर था सारा गांव का गांव लठ लेकर चला आयेगा, यह समझकर कि घर में कहीं गीदड़ घुस आया है। अब ऐसा गाना कभी मत गाना, यह अशुभ है, रमा ने सुन पाया तो कान पकड़ के घर से निकाल देगी। तुम्हारे देस का गाना है, गाओ, लेकिन घर में नहीं (बाहर इशारा करता है) बाहर उजाड़ में, और शाम के समय गाओ, और बहुत से साथी मिल जायगे। (बाजे की तरफ़ देखकर) हाँ यह साज़ हमें कुछ चल गया, मगर हम इसे बजायेंगे कैसे ?

वि. औरत : इसे मैं सिखा दूंगी सरकार !

सुरेश : देवी ! तू हमें क्या क्या सिखायगी ?

वि. औरत : बहुत कुछ सरकार !

सुरेश : हम ज़रूर सीखेंगे, थोड़ी थोड़ी सितार छेड़ लेता हूँ, राम बाबू से सीखता हूँ, यह तुम से सीखूँगा। अच्छा देवी, धन्यवाद ! आपने

बड़ा कष्ट किया जो यह सब सामान लाये। (विदेशी १ से) रामू से कहियेगा कि सब सामान क़रीने से लगा दे। (जाने लगता है) मैं खेतो पर जाके लोगों से कह आऊँ कि अब विनोद की तबीयत ठीक है, वह बेचारे परेशान होंगे।

वि. आदमी १ : हम आपको मुबारकबाद तो देना भूल ही गये।

सुरेश : इसमें मुबारकबाद देने की कौन सी बात है, यह तो सब देवी की कृपा हुई।

वि. आदमी २ : नहीं यह सब ईश्वर कृपा है, ईश्वर कृपा।

सुरेश : अरे वाह ! आप तो अब हमारे स्वरों में अलापने लगे।

वि. आदमी १ : सब कुछ आहिस्ता आहिस्ता सीख रहे हैं सरकार !

सुरेश : (जाने के लिये मुड़ता है) बहुत अच्छा।

वि. औरत : (रोक कर) सरकार !

सुरेश : (रुक कर) और कुछ कहना चाहो देवी ?

वि. औरत : हिम्मत नहीं बनती, अलफ़ाज़ साथ देने से डरते हैं।

वि. आदमी १ : इसमें डरने की क्या बात है, हजूर मेहरबान हैं, अगर कोई गुस्ताखी हो भी गई तो नज़र अन्दाज़ कर देंगे।

वि. औरत : सरकार ! छोटे सरकार बंजर ज़मीनों पर जाने के लिये रज़ामन्द नहीं, कहते हैं मैं तो दिन भर मेहनत करता हूँ और बड़े सरकार सितार की धुन में ही खोये रहते हैं। (सुरेश को ताज्जुब होता है)

वि. आदमी १ : आपको ग़लत फ़हमी हुई होगी, छोटे सरकार जोश में आकर कह गये होंगे।

सुरेश : नहीं मेरा रमेश कभी जोश में भी ऐसी बात नहीं कहेगा, यह अवश्य तुम्हारे सुनने की भूल हुई है। तुम क्या जानो देवी ! वह तो लक्ष्मण है लक्ष्मण। क्या बात कह दो। (जाने लगता है विदेशी औरत रोक लेती है)

वि. औरत : आप मुझ से नाराज़ हो गये, मैं माफ़ी की ख़्वास्तगार हूँ।

सुरेश : नहीं देवी ! तुम हमारी मेहमान हो, मेहमान को हम देवता तुल्य मानते हैं, हम देवता से नाराज़ हो ही नहीं सकते। यह हमारा गुन मानो चाहे अवगुन, हम देवता से नाराज़ नहीं हो सकते। इसमें अवश्य कोई भूल है। (धीरे धीरे चलता है और कहता जाता है) मेरा रमेश कभी ऐसी बात नहीं कह सकता। वह लक्ष्मण है, साक्षात लक्ष्मण। (जाता है)

वि. औरत : (नाराज़ होकर अपने साथियों से) दाँत क्या निकाल रहे हो। [1]गेट आऊट। (दोनों चले जाते हैं, मूर्ति के पास जाकर कहती है) तुम इस वक़्त खुश हो, मुस्कुरा रही हो, तुम समझती हो तुमने मुझे शिकस्त दे दी है, लेकिन बहुत जल्द मेरी शिकस्त मेरी फ़तह में तब्दील हो जायगी। तुम्हारे होंटों की मुस्कुराहटें छीन लूँगी, तुम्हारी आखों से आंसू रवाँ होंगे। तुम्हारे बाल परेशाँ होंगे और तुम दीवानावार अपने बच्चों को ढूँढोगी जो एक दूसरे के खून के प्यासे हो चुके होंगे।

(बादल गरजते हैं, मूर्ति का चेहरा भयानक हो जाता है, देवी पीछे हटती है, धीरे धीरे परदा गिरता है।)

१ बाहर जाओ।

[सुरेश का वही मकान लेकिन अब मूढ़े की जगह कोच है, मकान विलायती ढंग से सजा है, एक तरफ़ प्यानो रखा है, दूसरी तरफ़ सितार। रामू भी कोट, पतलून, हेट पहने हुए है, परदा खुलता है। रामू गाता हुआ चीज़ों को साफ़ करता दिखाई देता है।]

गाना

हम बाबू नये निराले हैं, हम बाबू नये निराले हैं।
अब रंग नये, अब ढंग नये, अब यह संसार नया अपना। हम०
घर की सारी रंगत बदली, अपनी भी सब संगत बदली।
अब महल नया, अब गली नई, अब बदल गई पोशाक।
देख लो बदल गई खूराक, लुटिया की जगह अब प्याले हैं।
हम गिटपिट बोलने वाले हैं, हम बाबू......
मालिक बदला, नौकर बदला, बदल गया घर बार।
जो मेरी वह लक्ष्मी बदले तो जानूँ करतार।
कि हमभी क़िस्मत वाले हैं, हम बाबू......

रामू : (लक्ष्मी को आती देखकर) लक्ष्मी मैंने बीड़ी पीनी छोड़ दी।

लक्ष्मी : सच ?

रामू : हाँ अब मैं चुरुट पीता हूँ।

लक्ष्मी : (रामू की बदली हुई पोशाक को देखकर) रामू !

रामू : दान वास्को दी रामू।

लक्ष्मी : (हैरानी से देखकर) तो क्या तुम भी बदल गये हो रामू !

रामू : अरी तो इसमें बुरा क्या हुआ, जैसे मालिक वैसे नौकर। मालिक पहनें पतलून तो हम क्यों न पहनें पतलून। मालिक पहनें टोपी तो भला हम क्यों न पहनें टोपी। पर यूँ देखो तो सही कितने खूबसूरत हो गये हैं हम।

लक्ष्मी : (घूर कर देखती है) बन्दर नज़र आते हो, बन्दर।

रामू : क्या कहा बन्दर ?

लक्ष्मी : हाँ बन्दर, बन्दर।

रामू : बन्दर नज़र आता हूँ, तुझे कभी खूबसूरत भी नज़र आया हूँ डारलिंग !

लक्ष्मी : क्या कहा ? गाली देते हो। (मारने दौड़ती है, रामू सीढ़ियों पर भागता है, लक्ष्मी पीछा करती है।)

रामू : अरी मैं तुझे गाली दे सकता हूँ कभी। (लक्ष्मी को प्यार से नीचे लाता है) लक्ष्मी तू डारलिंग के मतलब नहीं समझती ? (लक्ष्मी इशारे से कहती है 'नहीं') तो तू कुछ नहीं जानती। इसके तो बड़े अच्छे अच्छे मतलब हैं, इसके मतलब हैं, मेरी प्यारी, मेरी प्रियतमा, हो न तुम मेरी प्रियतमा ? यह शब्द मुझे उस देवी जी ने सिखाया है।

लक्ष्मी : (गुस्से से) मेरे सामने उसका नाम न लिया करो।

रामू : क्यों ?

लक्ष्मी : बस कह दिया न, बड़े दीवान जी को निकलवा दिया उसने, बड़े मालिक कितना बदल गये हैं, देखा तुमने ? बड़ी मालकिन कहती हैं एक दिन वह सबको खा जायगी, जादूगरनी है, जादूगरनी।

रामू : अरी लक्ष्मी ! सभी औरतें जादूगरनी होती हैं, क्या तू जादूगरनी नहीं ? देख तो कैसा जादू किया है मुझ पर, पीला पड़ गया हूँ पीला।

लक्ष्मी : पीले पड़ गये हो, खा खा के तो भैंस की तरह मोटे हो गये हो और कहते हो पीला पड़ गया हूँ। चलो हटो मुझ से न बोलो।

रामू : तो जाऊँ मैं उस देवी जी के पास ?

लक्ष्मी : फिर तुमने उसका नाम लिया। (मारने दौड़ती है, रामू भागता है।)

रामू : (भागते हुऐ) बन्द कर दूँ इस मुहँ को, कटा दूँ इस ज़बान को, अब तो जो कुछ कहेंगे तुझसे पूछ कर कहेंगे, तू तो खामख़ाँ

नाराज़ होती है। (प्यार से) मार मैं खाता हूँ, और नाराज़ तू होती है। अब तो कुछ भी नहीं कह सकते, अच्छे आये यह लोग। (कोच व बाजा वगैरह दिखा कर) देख तो सही तेरे लिये कैसी कैसी चीजें मँगवाई हैं।

लक्ष्मी : मेरे लिये ?

रामू : हाँ, हाँ, और किसके लिये ?

लक्ष्मी : ओ हो ! (कोच पर बैठती है, स्पिरिंग ऊपर उछाल देते हैं, वह घबराकर नीचे उतर आती है और ज़मीन पर बैठ जाती है।)

रामू : लक्ष्मी ज़रा संभाल कर बैठिओ, यह बड़ी नाज़ुक चीज़ें हैं, विलायती हैं। (ज़मीन से उठा कर) यहाँ, नहीं (कोच पर बिठा कर) यहाँ, मैं तेरे पास बैठूँगा।। लक्ष्मी तुम मेम बन जाओ मैं साहब। (गुल-दस्ते में से फूल निकाल कर) लक्ष्मी देख [1]फ्लावर। (तीनों विदेशी आते हैं और साथ में एक और विदेशी आदमी है। रामू सलाम करता है) हत्त तेरे की देवी जी, हत्त तेरे की साहब। (पाँवों को जोड़कर, टोपी उतार कर झुक झुक कर सलाम करते हुए) गुड मोरनिंग सर, गुड ईवनिंग सर, गुड नाईट सर, [2]सिट डाउन सर, [3]गेट आऊट सर। (सब हंसते हैं)

वि. औरत : बहुत अच्छे मालूम होते हो।

रामू : देवी जी ! क्या मैं खूबसूरत दिखता हूँ ?

वि. औरत : ओ बहुत ! तुम तो हमारे देश के मालूम होते हो।

रामू : सच ?

वि. औरत : इसीलिये तो हमने तुम्हारा नाम रोमियो रखा है।

रामू : रोमियो (खुशी से लक्ष्मी के पास आकर कहता है) देखा लक्ष्मी ! तू तो कहती थी मैं बन्दर नज़र आता हूँ।

लक्ष्मी : (गुस्से से) और क्या, तुम बन्दर वह चुडैल। जाओ यहाँ से।

वि. आदमी : २ (रामू लक्ष्मी को लड़ते देखकर) लड़ते क्यों हो रामू ?

रामू : लड़ता नहीं, [4]लोव करता हूँ लोव। (देवी के पास आकर शर्माते हुए) अच्छा देवी जी ! हमें अपने देश ले चलेंगी ?

---

१ फूल। २ बैठ जाईये जनाब। ३ बाहर जाईये जनाब। ४ प्यार।

वि. औरत : हाँ हाँ, ज़रूर ज़रूर।

रामू : लक्ष्मी को भी?

वि. औरत : एक शर्त पर, अगर वह भी तुम्हारी तरह बदल जाये।

रामू : (लक्ष्मी से) क्यों लक्ष्मी! (वि. आदमी २ को लक्ष्मी का पीछा करते हुए देखकर) हजूर मुझसे बात करो माई बाप, उससे क्या बातें करते हो।

वि. आदमी २ : बड़े चालाक होते जा रहे हो रामू!

रामू : बड़ा चालाक नहीं [1]लिटिल, लिटिल।

सुरेश : (ऊपर बाईं तरफ़ से दाखिल होते हुऐ) रामू! क्या शोर हो रहा है! क्या हंगामा है! (सब को देखकर) [2]You are all here, hello hello, यू आर ऑल हियर, हेलो हेलो (सब झुककर सलाम करते हैं, सुरेश कहता जाता है) [3]What is this idiot doing here? (वाट इज़ दिस इडियट डूईंग हियर?)

वि. आदमी २ : [4]Just playing fool sir, (जस्ट प्लेईंग फूल सर।)

सुरेश : [5]Oh! let me play the fool, With mirth and laughter at old wrinkles come. " Good old Shakespeare." (ओह! लेट मी प्ले दी फूल, विद मरथ एण्ड लाफ्टर एट ओल्ड रिंकील्स कम, "गुड ओल्ड शेक्सपियर") (सब हंसते हैं, रामू टोपी उतार, पांव जोड़ झुक कर सलाम करता है) [6]That's better (देट्स बेटर) (विदेशी औरत को तरफ़ बढ़ते हुऐ) [7]Lovely weather. (लवली वेदर)

वि. औरत : [8]Isn't it. (इज़िन्ट इट।)

---

१ छोटा। २ आप सब यहाँ मौजूद हैं। ३ यह बेवकूफ़ यहाँ क्या कर रहा है? ४ ऐसे ही मसख़रापन कर रहा है। ५ मुझे मसख़रा बनने दो ताकि बुढ़ापे की झुर्रियां जब आयें तो हंसते खेलते आयें। "हमारा अपना शेक्सपियर।" ६ यह ठीक है। ७ कितना अच्छा मौसम है। ८ क्यों है न?

सुरेश : [1]Hom e weather. (होम वेदर।)

वि. औरत : [2]Oh! no! (ओह नो।)

सुरेश : [3]I know nothing like home. (आई नो, नथिंग लाईक होम।) (सब हंसते हैं)

वि. आदमी १ : (आगे आते हुए) सरकार! यह है वह कारीगर जिसका मैं ज़िक्र कर रहा था।

कारीगर : (आगे बढ़ कर और झुक कर) गुड मार्निंग सर!

सुरेश : गुड मार्निंग।

कारीगर : [4]I have brought some tube wells sir! (आई हैव ब्राट सम टयूब वैल्स सर!)

सुरेश : Oh! tube wells. (ओह! टयूब वेल्स!) भूत वैल। (सब हंसते हैं)

कारीगर : [5]But there has been no payment made so far, here are the bills. (बट देयर हेज़ बीन नो पेमेन्ट मेड सो फ़ार, हियर आर दी बिल्स।)

सुरेश : [6]Oh! bills, bills, bills. Iam fed up. (ओह! बिल्स, बिल्स, बिल्स, आई एम फ़ेड अप) (विदेशी १ से) [7]Why don't you look after these things yourself, don't you know that I am so busy, so busy doing nothing. (वाई डोन्ट यू लुक आफ़टर दीज़ थिंग्स योर सेल्फ़, डोन्ट यू नो देट आई एम सो बिज़ी, सो बिज़ी डूइंग नथिंग) (सब हंसते हैं) [8]By the way (बाई दी वे) शिकार का सब सामान तय्यार है?

---

१ विलायत का सा मौसम। २ नहीं। ३ मैं जानता हूं, विलायत, विलायत है। ४ मैं कुछ टयूब वैल लाया हूँ। ५ लेकिन अभी तक उनकी क़ीमत नहीं चुकाई गई, यह बिल्स हैं। ६ मैं परेशान हो गया हूँ। ७ आप खुद ही यह चीज़ें क्यों नहीं देख लेते, आपको मालूम नहीं कि मैं किस क़दर मसरूफ़ हूँ, बग़ैर कुछ करे धरे। ८ हाँ।

वि. आदमी १ : सरकार! (दरवाज़े की तरफ़ देखता है जहाँ कन्हैया दाखिल हो रहा है।)

कन्हैया : (अन्दर आकर) सरकार गाड़ी तय्यार है।

सुरेश : (उसकी पुरानी पोशाक को देखकर) यह क्या है और यह भैंस की तरह पांव में क्या डाल रखा है! ऐसा नहीं मांगता। (रामू की तरफ़ इशारा करके) ऐसा मांगता है। (विदेशी १ से) इसके लिये कपड़े नहीं बनवाये गये?

वि. आदमी १ : बनवाये हैं सरकार! लेकिन यह पहनने से इन्कार करता है।

सुरेश : (कन्हैया से) क्यों?

कन्हैया : सरकार! एक दिन मैं पहन कर गया था, मेरा छोटा बेटा बिलीया है न, इतना डर गया कि तीन दिन बुखार हो गया।

सुरेश : बिलीया बीमार हो गया! (नाराज़ होकर) गेट आऊट। (कन्हैया सहम कर बाहर निकल जाता है, सुरेश देवी से कहता है) आप शिकार को चलेंगी?

वि. औरत : जो आज्ञा।

सुरेश : आज्ञा! सुना दीवान जी! (विदेशी २, वि. औरत को कोट पहनने लगता है। सुरेश मना करता है और खुद कोट पहनाता है, फिर सब बाहर चले जाते हैं। रमा और शीला जो अबतक ऊपर खड़ी सब हाल देख रहीं थीं, नीचे उतर आती हैं।)

रमा : (दुखी लहजे में) देखा कितना बदल गये हैं, पहले से तो बिलकुल रहे ही नहीं। भेष बदल गया है, भाषा बदल गई है, आखों की नम्रता की जगह गर्दन की अकड़ ने ले ली है, न जाने उस डायन ने क्या जादू कर दिया है, न जाने इस परिवर्तन का क्या फल होगा।

शीला : भगवान पर विश्वास रखो दीदी! चिन्ता से कुछ न होगा।

रमा : हमारे घरों की बुनियाद में बारुद रख दी गई है, आग सुलग रही है और तुम देखना कि चंद ही रोज़ में शोले आकाश तक पहुँच

जायेंगे। तुम कहती हो चिन्ता न करूँ, कैसे न करूँ चिन्ता, जागीर का नाश हो रहा है, घर तबाह हो रहा है। हमारे लोगों के मुंह के निवाले छीन छीन के गैरों के मुंह में जा रहे हैं और तुम कहती हो चिन्ता न करूँ।

शीला : वह भी तो यहाँ नहीं हैं दीदी!

रमा : रमेश क्यों नहीं आया? तुमने उसे सब कुछ लिख दिया था कि उसकी भाबी उसको बुला रही है, उसकी भाबी को उसकी ज़रूरत है, उसकी भाबी को उसकी मदद चाहिये?

(किसानों के गाने की आवाज़ सुनाई देती है, दोनों ग़ौर से सुनती हैं। आवाज़ नज़दीक आती जाती है और सब किसान मकान के नीचे आ जाते हैं, उनकी हालत बदली हुई है, कपड़े फटे हैं, जिस्म कमज़ोर हैं।)

गाना

अपनी व्यथा सुनाने आये हैं, दाता तेरे द्वार।
दुखों की कथा सुनाने आये हैं, दाता तेरे द्वार।
आज हमारे घर आंगन पर काले बादल छाये हैं। अपनी०
टूट रहे हैं दिन में तारे देखो, तन पर चिथड़े फटे हमारे देखो
लटक रहे सीने पर भाले देखो, भूखे प्यासे नंगों की दुर्दशा
दिखाने आये हैं।
तलवारों के बीच तड़पता हिया दिखाने आये हैं।
चक्की में पिस रही प्रजा की दशा दिखाने आये हैं।
आज आंधियों की छाया में दिये जलाने आये हैं। दाता तेरे द्वार०

कन्हैया : (बाहर से) बन्द करो यह शोर कहाँ जाना चाहते हो?

सब किसान : (बाहर से) अपनी माँ के पास।

कन्हैया : (बाहर से) तुम्हारे पास दीवान जी का लिखा हुआ आज्ञा पत्र है?

किसान १ : (बाहर से) नहीं, क्या अब हमें अपनी माँ से मिलने के लिये भी आज्ञा पत्र लेना पड़ेगा?

कन्हैया : (बाहर से) हाँ, हाँ।

रमा : कौन है ? कौन है तुम्हें रोकने वाला ?

कन्हैया : (अन्दर आकर) नये दीवान जी की आज्ञा है सरकार !

रमा : अपने भाईयों का गला काटने में तुम भी गैरों की मदद कर रहे हो ? हो सके तो अपने भाईयों की तलवार बनो, क़साई की छुरी न बनो। यह तुम्हें शोभा नहीं देता। (किसानों को अन्दर बुलाती है।) आओ ! आओ मेरे बच्चों ! (किसान सब अन्दर आते हैं।) तुम्हें क्या दुःख है, अपनी माँ से सब कुछ कह दो, उससे कुछ न छिपाओ, उससे जो कुछ बन पड़ेगा वह तुम्हारे लिये करेगी।

किसान १ :(बड़े मालिक इतना क्यों बदल गये हैं माँ ! उनके बदलने से हमारे भाग्य बदल गये हैं, पहले वह हमारी सुना करते थे, अपनी कहा करते थे, हमारा दुख बटाते थे, अपना सुख बाँटते थे। पहले वह खुद चलकर आया करते थे और हमारा हाल पूछते थे, अब गाड़ी में गुज़र जाते हैं, नज़र उठाकर देखते तक नहीं।

रमा : जानती हूँ, उन्हें कहा गया है कि राजा और प्रजा के स्थान अलग अलग हैं, रास्ते जुदा जुदा हैं। उन्हें भड़काया गया है, कि वह तुमसे अलग रहें नहीं तो उनका राज्य न रहेगा।

किसान २ : मगर नये दीवान जी तो सरकार से मिलने भी नहीं देते माँ !

रमा : मिलने कैसे दें, वह तुम्हारी आवाज़ उन तक पहुँचाना ही नहीं चाहते, वह उनकी आड़ में खुद राज्य करना चाहते हैं।

किसान ३ : माँ ! पहले जो हमारे घरों में दूध की नदियाँ बहतीं थीं, अनाज के ढेर के ढेर लगे रहते थे, आज हम दूध की एक बूँद और अनाज के दाने दाने को तरस रहे हैं।

रमा : इसलिये कि यह सब ग़ैरों के घर में चला जा रहा है।

किसान ४ : अब क्या होगा माँ ?

रमा : धीरज रखो मेरे बच्चो ! तुम्हारी माँ को तुमसे ज़्यादा दुख

है। भगवान पर विश्वास रखो, अपनी माँ पर भरोसा रखो, वह तुम्हारे लिये कुछ न कुछ ज़रुर करेगी।

सब किसान : हमें विश्वास है माँ! तुम देवी हो, तुम लक्ष्मी हो। (सब किसान जाते हैं)

रमा : बहू! इनका दुख देखकर मुझे ऐसा मालूम होता है कि मेरे सर पर किसी ने आग का पहाड़ रख कर मेरी कोख पर लात मार दी है।

विनोद : (आकर) ताई जी, ताई जी! पिताजी आगये। (चला जाता है)

रमा : रमेश आगया, कहाँ है वह ?

रमेश : (अन्दर आकर) चरणों की धूल दो भाबी, प्रणाम स्वीकार करो।

रमा : जुग जुग जियो, सदा बढ़ो, फूलो फलो।

रमेश : यह तुम्हें क्या हो गया है भाबी ? पहचानी भी नहीं जातीं। ऐसा मालूम होता है कि बरसों की बीमार हो।

रमा : तुमने ठीक ही समझा है रमेश! मेरे जीवन में घुन लग गया है।

रमेश : लेकिन क्यों ? बताओ तो सही हुआ क्या है ? भइया कहाँ हैं ?

रमा : शिकार को गये हैं।

रमेश : शिकार को गये हैं ? हंसी छोड़ो भाबी !

रमा : रमेश मैं हंसी भूल चुकी हूँ, तुम्हारे भइया शिकार को गये हैं।

रमेश : मैं कैसे मान लूँ, वह जिन्होंने अपने जंगलों में शिकार का हुक्म बन्द कर रखा था, इसलिये कि मनुष्य को चौपाओं और परिंदों की जान लेने का कोई हक़ नहीं है, जिनके यहाँ जानवरों की जान की क़ीमत मनुष्य के प्राणों की सी थी, आज खुद उन बेज़ुबानों से खेल रहा है, नहीं भाबी नहीं।

रमा : जाओ ऊपर जाकर देखो, छर्रों की पेटियां रखी हैं, उन से दागे हुए अभागे भी थोड़ी देर में देख लोगे।

रमेश : भाबी !

रमा : तुम्हारे भाई थोड़े ही अर्से में बहुत कुछ सीख गये हैं, विदेशी वस्त्र पहनते हैं, विदेशी बाजा बजाते हैं, विदेशी ढंग से नाचते हैं, विदेशियों

को अपना और अपनों को पराया समझने लगे हैं। कितनी तरक्क़ी कर ली है तुम्हारे भाई ने !

रमेश : भाबी !

रमा : और सुनो, उनके कानों में से एक कान बहरा होगया है। बहरा कान प्रजा की ओर है और दूसरा कान उस औरत और उसके साथियों की बातें सुनता है। उनकी आखें उन में अच्छाईयाँ और अपनों में बुराईयां ढूंढती हैं। उनकी बातों में बेगानों के लिये शहद और अपनों के लिये ज़हर है। (विदेशी औरत दबे पांव आकर खड़ी हो जाती है और सब बातें सुनती है) रमेश हालात बदल गये हैं और मैंने तुम्हें इसलिये बुलाया है कि और नहीं तो मेरा रमेश तो अपनी भाबी के दुख को बाँटेगा। (ज़रा रुककर) वह चुड़ैल तुम्हें मिली तो नहीं !

रमेश : नहीं।

रमा : चलो ऊपर चलो, मैं तुम्हें सारा हाल बताती हूँ। (बहू से) बहू तुम भी आओ। (सब लोग ऊपर जाते हैं, विदेशी औरत दाख़िल होती है।)

सुरेश : (बाहर से) कन्हैया !

कन्हैया : (बाहर से) जी सरकार !

सुरेश : (बाहर से) रामू से कहो शिकार बावरचीख़ाने में पहुँचा दे।

कन्हैया : (बाहर से) बहुत अच्छा सरकार।

सुरेश : (बाहर से) आईये दीवान जी।

वि. आदमी १ : (बाहर से) तशरीफ़ ले चलिये सरकार ! (सुरेश व दोनों विदेशी आते हैं।)

सुरेश : (देवी को देखकर) Hello, hello, hello! (हेलो, हेलो, हेलो !) जल्दी चली आई। [1]Got frightened (गौट फ्रायटेन्ड।)

वि. औरत : [2]Oh ! no (ओह नो।)

विनोद : (तेज़ी से आता है) ताया जी ! ताया जी ! पिता जी आगये। (जाता है)

---

१ डर गई थीं क्या। २ नहीं।

सुरेश : रमेश आगया। (सुरेश जाने लगता है, विदेशी औरत रोक लेती है।)

वि. औरत : सरकार! कुछ अर्ज़ करना चाहती हूँ, गुज़ारिश की इजाज़त है?

सुरेश : कहो देवी!

वि. औरत : छोटे सरकार जहाँ से आ रहे हैं वहाँ तरह तरह की बीमारियाँ फैली हुई थीं, इसलिये दरख़ास्त करती हूँ कि आप उनके हाथ का छुआ हुआ कुछ खायें नहीं।

सुरेश : क्या कह रही हो देवी?

वि. औरत : जानती हूँ आप छोटे सरकार से कितनी मुहब्बत करते हैं, लेकिन सरकार जान है तो जहान है और जान को मामूली ज़ज़्बात के लिये खतरे में डालना कहाँ की दानिशमन्दी है? मैं कभी इस गुस्ताखी की जुर्रत न करती मगर फ़र्ज़ ने मजबूर कर दिया और बात होंटों पर आही गई, हालांकि दिल डर से काँप रहा है। सरकार को अगर नागवार गुज़रे तो माफ़ी की भीख मांगती हूँ।

सुरेश : नहीं इसकी ज़रूरत नहीं।

वि. औरत : और सरकार! छोटे सरकार ने अपना रहन सहन भी तो नहीं बदला है।

सुरेश : आहिस्ता आहिस्ता सीख जायगा, हम भी तो बहुत कुछ सीख गये। (ऊपर जाता है)

वि. औरत : तो आप अपने कमरे में तशरीफ़ ले जाईये, मैं छोटे सरकार को वहाँ भेज देती हूँ।

सुरेश : (ऊपर के बरामदे से) नहीं इसकी ज़रूरत नहीं, मैं खुद उसके पास जारहा हूँ।

वि. औरत : (घबरा कर) सरकार! (ऊपर जाने लगती है)

सुरेश : अरे आप तो बड़ी परेशान नज़र आरही हैं, क्या बात है? क्या बात है दीवान जी!

वि. आदमी २ : [1] We are quite ignorant about it Sir! (वी आर क्वाईट इगनोरेन्ट एबाउट इट सर।)

सुरेश : [2] Blast your ignorance; and what has your expert to say about it? (बलास्ट योर इगनोरेन्स; एण्ड वाट हैज़ योर एक्सपर्ट टू से एबाउट इट।)

कारीगर : [3] Excuse me Sir. It is a personal affair, I wouldn't interfere. (एक्सक्यूज़ मी सर, इट इज़ ए परसनल एफ़यर, आई वुडनोट इन्टरफ़ियर।)

सुरेश : [4] Personal affair! my foot. I know your policy my dear, 'Laissez-Faire' (परसनल एफ़्यर! माई फ़ुट। आई नो योर पालिसी माई डियर 'लैसे फ़ेर' (देवी से।) [5] yes dear (यस डियर।)

वि. औरत : (पास पहुँच कर) सरकार! वह आप से छोटे हैं, आप उनके वालिद की जगह हैं, आप उनसे अपनी औलाद से बढ़कर मुहब्बत करते हैं। क्या उन पर लाज़िम नहीं कि वह आप के न्याज़ हासिल करने के लिये आपके पास हाज़िर हों? यह तो सीधे सादे आदाब हैं सरकार!

सुरेश : (कुछ सोच कर) अच्छा रमेश को हमारे पास भिजवादो, ठीक है।

वि. औरत : एक बार फिर दरख़ास्त करती हूँ कि उनके हाथ का कुछ खाईयेगा नहीं।

सुरेश : यह हुक्म है?

वि. औरत : नहीं, इल्तिजा।

---

१ हम इसके बारे में बिलकुल मूढ़ हैं।

२ भाड़ में गई तुम्हारी मूढ़ता, आप के यह माहिर साहब क्या कहते हैं?

३ माफ़ कीजिये, यह निजी मुआमला है, मैं दख़ल नहीं दे सकता।

४ निजी मुआमला! बकवास है, मैं तुम्हारी नीति जानता हूँ। 'अपने काम से वास्ता रखो।' ५ हां प्रिय।

सुरेश : (विदेशी १ से) सुना दीवान जी ! इल्तिजा है। [1]How charming. (हाउ चारमिंग), (हंसता हुआ जाता है।)

वि. औरत : (हंसती है, सब विदेशी साथ देते हैं, फिर विदेशी १ से कहती है) अक्ल बड़ी होती है या भैंस ?

वि. आदमी १ : कितना बहादुर शख्स है कि शेर से भी लड़ जाता है।

वि. औरत : मगर कितना बेवकूफ़ है कि फ़ौरन बन जाता है।

वि. आदमी १ : कितना भोला है।

वि. औरत : या यूँ कहो कि कितना अहमक़ है।

रमेश : (अन्दर से) तो इस तमाम तबाही की जड़ वह औरत है, उसकी वजह से हमारे घर लुट रहे हैं, हमारी जागीर लुट रही है, हमारे लोग भूखों मर रहे हैं। मुझे मालूम होता यह औरत नहीं ज़हरीली नागिन है तो फन उठाने से पहले ही कुचल देता। मैं उसे निकाल कर ही दम लूँगा। जब तक मैं उसे न निकाल लूँगा मुझे चैन न आयगा। भेड़ की खाल में भेड़िये। मैंने इन्हें पहचाना न था।

वि. औरत : (नीचे उतर कर अपने साथियों से) मामला नाज़ुक मालूम होता है, तुम लोग जाओ, मैं अकेली निबट लूँगी। (दोनों विदेशी जाते हैं)

रमेश : (आकर) कहाँ है वह औरत और उसके साथी ? (देवी को देखकर) तुम !

वि. औरत : खुश आमदीद छोटे सरकार ! मुझे आप की आमद पर मसर्रत हुई।

रमेश : (गुस्से में छड़ी तानता हुआ) ज़हरीली नागिन ! तुम !

वि. औरत : सरकार मुझे सज़ा देना चाहते हैं, मैं इसे अपनी खुश-नसीबी तसव्वर करती हूँ, मैं फ़ैसले की मुन्तज़िर हूँ।

रमेश : तुमने !

वि. औरत : हाँ हाँ कहिये न, मैंने आप के भाई का बदल दिया।

---

१ सुन्दर।

नन्हे बच्चे हैं जो, वह अभी घुटनों के बल चलना सीख रहे हैं, सरकार! आप इतने बड़े हो गये मगर भोलापन अभी तक नहीं गया।

रमेश : खामोश!

वि. औरत : सच्चाई कड़वी लगी न सरकार! आप भी भावी की बातों में आगये और मुझे सज़ा देने चले आये। आईये मेरी जान हाज़िर है मश्के सितम के लिये, मेरी खाल खींच लीजिये, मेरे टुकड़े कर दीजिये, मगर मैं बिला कहे न रहूँगी कि आप के भाई और भावी आपको बेवकूफ़ बना रहे हैं, आप की सादगी का नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हैं। आप उनकी पूजा करते हैं, पुजारी की पूजा ने देवता का दिमाग खराब कर दिया है। देवता उसकी पूजा को हिमाकत समझता है, मगर पुजारी है कि पत्थर का बुत बना बैठा है।

रमेश : क्या बक रही हो तुम?

वि. औरत : छोटे सरकार आप की आँखों पर परदे पड़े हुए हैं, न जाने क्यों मैं इन्हें चाक कर देना चाहती हूँ। बड़े सरकार बाहर से आये हैं और यह जानते हुए भी कि आप यहाँ तशरीफ़ ले आये हैं, उन्होंने आप से मिलना तक गवारा नहीं किया, वह आप से मिलना चाहते ही नहीं। अगर अब भी आप को यकीन न आये तो जाईये उनके पास, सारी हकीकत उरियाँ हो जायगी। वह आपको इस काबिल ही नहीं समझते कि आप उनके कदम छू सकें। वह आपको अछूतों से बदतर समझते हैं, यकीन न आये तो खाने पीने की कोई चीज़ देकर देख लीजियेगा, वह खाने से इन्कार कर देंगे।

रमेश : ऐसा कभी नहीं हो सकता।

वि. औरत : छोटे सरकार मैं आप को ख्वाबे गराँ से जगाना चाहती हूँ। आप की आँखों पर परदे पड़े हुए हैं, मैं इन्हें चाक कर देना चाहती हूँ। आप इस नींद में बहुत कुछ खो चुके हैं।

रमेश : यह बेहूदा बकवास है, बोहतान है।

वि. औरत : हाथ कंगन को आरसी क्या, आज़मा कर देख लीजिये।

रमेश : (तेज़ी से जाते हुए रुक कर) अगर यह ग़लत हुआ तो ?

वि. औरत : मेरी सज़ा मौत है।

(रमेश जाता है । विदेशी औरत इज़तराबी से चक्कर लगाती है, थोड़ी देर बाद अन्दर से थाली फेंकने की आवाज़ आती है और साथ ही रमेश की आवाज़ " भइया " । विदेशी औरत की आँखें खुशी से चमक जाती हैं।)

रमेश : (उदास चेहरे से धीरे धीरे आकर कुर्सी पर बैठ जाता है) देवी ! मैंने तुम पर विश्वास न किया, पर अब अपनी आखों पर विश्वास कैसे न करूँ ?

वि. औरत : अब भी कुछ नहीं बिगड़ा छोटे सरकार ! जागीर में आप का भी बराबर का हिस्सा है, बड़े सरकार से अपना हक़ मांगिये, वह इन्कार न कर सकेंगे। मैं आप को अपना हक़ दिलाने में मदद करूँगी। हम किसी को किसी के हक़ से महरूम होते नहीं देख सकते। हम किसी को किसी से नाइन्साफ़ी नहीं करने देते। (रमेश जाने लगता है) अपने हक़ को पहचानिये, जागिये सरकार, जागिये छोटे सरकार, जागिये ! जागिये !! (रमेश चला जाता है, विदेशी औरत मूर्ति के पास आकर उस से कहती है।) हंसो, अब भी हंसो, कल तुम मेरी शिकस्त पर हंस रही थीं अब भी हंसो। वक़ार हाथ से जाने वाला है, तुम्हारा ताज मिट्टी में परेशान हुआ चाहता है, तुम्हारे बेटे एक दूसरे का गला काटने को तय्यार हो रहे हैं और फिर तुम गन्दी नाली में फेंक दी जाओगी, और यहाँ मेरा मुजस्सिमा नस्ब होगा। (विदेशी औरत अकड़ कर खड़ी हो जाती है, बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है और धीरे धीरे परदा गिरता है।)

लक्ष्मी : (मूर्ति के पास खड़ी प्रार्थना कर रही है) माँ ! तू तो जानती है न दुख मेरा, मेरे रामू को फिर से ठीक कर दे माँ ! उस औरत ने न जाने क्या जादू कर दिया है, मेरा रामू सुन्दर है न माँ ! इसीलिये वह डायन भूखी भूखी नज़रों से देखती है। मेरे रामू को नाच सिखाती है, गीदड़ों की तरह चीख़ चीख़ कर गाना सिखाती है। माँ ! मेरे रामू को फिर से पहला जैसा कर दे, मैं तेरे सामने नाचूँगी, तेरी आरती उतारूँगी, (नाचती है) यूँ-यूँ-यूँ ।

रामू : (अन्दर से आता है और लक्ष्मी को इस तरह नाचते देखकर कहता है) छी ! छी ! ! लक्ष्मी ! यह तुम्हारा जंगलीपन नहीं गया अभी तक, कितनी मर्तबा कह चुका हूँ कि ऐसे नहीं नाचा जाता है, यह भी कोई नाच है, इसे भी कोई नाच कहते हैं ? मगर सुनती तो तू किसीकी भी नहीं, मैं तुझे नाच सिखाऊँगा। (कुर्सी बताकर कहता है) सिट डाउन। (लक्ष्मी बैठ जाती है) मेरी तरफ़ लुक (रामू अंग्रेज़ी तरीक़े से नाचता है और दो एक चक्कर लगाने के बाद लक्ष्मी को भी साथ ले लेता है, फिर तेज़ी से नचाता है कि दोनों गिर जाते हैं।)

लक्ष्मी : अरी माँ, मैं तो मर गई, मेरा पाँव तोड़ डाला।

रामू : तो किसने कहा था कि अपना पाँव मेरे पाँव के नीचे रख दे ?

लक्ष्मी : मैंने तेरे पांव के नीचे अपना पांव रखा है या तूने मेरे पांव के ऊपर पांव रखा ? see my name on page 27.

रामू : तूने मेरे पांव के नीचे अपना पांव रखा, नाचना तो आता नहीं, भैंस की तरह तो नाचती है।

लक्ष्मी : भैंस ?

रामू : हाँ हाँ, मोटी काली हब्शू भैंस, फिर सिट डाऊन, फिर लुक (लक्ष्मी बैठकर फिर देखती है, रामू फिर पहले वाले ढंग से नाचता है और

कहता जाता है ।) आराम से नाचना चाहिये । उस देवी की तरह नाचो, क्या मोरनी की तरह नाचती है ।

लक्ष्मी : (गुस्से से) भाड़ में गई तेरी मोरनी, हर वक्त उसीके गुण गाता रहता है ।

रामू : अरी मैं तो क्या, अब तो सब ही उसके गुन गाने लगे हैं । अब तो छोटे सरकार भी बदल गये हैं, मैं अभी अभी देखकर आया हूँ ।

लक्ष्मी : जानती हूँ, सारी रात छोटे मालिक छोटी मालकिन में झगड़ा होता रहा है । राम जाने हम लोगों पर क्या आफ़त आने वाली है । जी चाहता है लकड़ी से सर फोड़ दूँ उस चुड़ैल का । पराये मर्दों को बहकाती है, लाज नहीं आती उसे पराये मर्दों से बातें करते हुऐ ।

रामू : अरी बावरी उस विदेशी औरत के लिये सब पराये मर्द अपने ही मर्द हैं ।

लक्ष्मी : हैं !

रामू : हाँ । धीरे धीरे सब ही तो बदल जायंगे । बड़ी माँ बदल जायगी, छोटी माँ बदल जायगी ।

लक्ष्मी : खबरदार अगर मुझे माँ कहा तो ।

रामू : अरी बावरी तुझे माँ कौन कहता है, तुझे माँ कहेंगे मेरे छोटे से (रुमाल को बच्चे की तरह हाथ में खिला कर दिखाते हुए) वैं–वैं–वैं (लक्ष्मी चिढ़ती है और रुमाल को रामू से लेकर फेंक देती है । रमेश गुस्से में बात करता हुआ ऊपर से आता है । शीला पीछे पीछे आती है । रमा आड़ में खड़ी होकर देखती है ।)

रमेश : हाँ हाँ कह दिया न, मैं नींद से जाग उठा हूँ, तुम्हारी आँखों पर अब भी पट्टियां बंधी हैं ।

शीला : यह आप क्या कह रह हैं नाथ !

रमेश : यही कि अब मैं सपनों के संसार में नहीं रहता, तांबे पर जो सोने का पानी चढ़ा था उतर गया है, भइया के प्यार की असली क़ीमत मुझे मालूम हो गई है, उनका असली रूप मैंने देख लिया है ।

शीला : आपके मुख से भइया की शान में यह शब्द !

रमेश : हाँ हाँ हां कह दिया न, तुम तो बेवकूफ़ हो मगर मैं नहीं। (रमेश गुस्से से बाहर चला जाता है, शीला दुखी है और मूर्ति के पास बैठ जाती है। रमा आती है, शीला रमा से गले लिपट कर कहती है।)

शीला : दीदी !

रमा : मैंने सब कुछ देख और सुन लिया है बहू ! वह बदल गये हैं, रमेश बदल गया है, अब शोले आकाश तक पहुंच रहे हैं।

(किसानों के गाने की आवाज़ सुनाई देती है, दोनों गौर से सुनती हैं, आवाज़ नज़दीक आती जाती है और सब किसान मकान के नीचे आ जाते हैं। उनकी हालत पहले से भी ज्यादा खराब है, कपड़े फट चुके हैं और सब को चोटें लगी हुई हैं और ज़खमों से खून बह रहा है।)

गाना

कौन सुने फ़रियाद हमारी—कौन सुने फ़रियाद।
कभी शाद थे, चैन अम्न था, अब हम सब नाशाद। कौन सुने०
सुलग रही है आशा की बस्ती।
ज़ुल्मो सितम की आग बरसती।
आज गरीबों की क्या हस्ती।
धनवालों की इस दुनिया में, निर्धन हैं बरबाद।
कौन हमारी झोंपड़ियों को करता है आबाद। कौन सुने०
तन का कपड़ा मुंह का दाना, मेहनत का छीन रहा खज़ाना
कसा दुखों का ताना बाना प्रभू जी, प्रभूजी, प्रभू जी।
उन तक नहीं पहुंचती, तुम्हीं सुनो फ़रियाद।
कब यह दुख की घटा हटेगी, होंगे हम आज़ाद ! आज़ाद !! आज़ाद !!!

किसान १ : माँ ! एक बार हम फिर पुकार लेकर आये हैं।

रमा : आओ आओ मेरे बच्चो, अपनी माँ से अपना सब दुख कह डालो। (सब किसान अन्दर आते हैं, रमा उनकी इस हालत को देख कर पूछती है।) तुम्हारा यह हाल किस ने किया ?

किसान २ : उन राक्षसों ने माँ ! हम सरकार के सामने अपना दुखड़ा रोना चाहते थे, उन्होंने रोका, हमने ज़िद की, मजबूर सिवाय ज़िद के और कर ही क्या सकता है ? उन्होंने हम पर लाठियाँ चलाईं माँ।

शीला : तुम पर लाठियाँ चलाईं ?

रमा : किसने ?

किसान ३ : अपने ही भाईयों ने। बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने चन्द पैसों पर अपनी आत्मा बेच दी है।

रमा : (शीला से) बहू ! अब सर्वनाश हो चुका है। (किसानों से) तुम सरकार से किस लिये मिलना चाहते थे ?

किसान ४ : हम चाहते थे उनकी झोली थाम कर उनसे भीख मांगते मुट्ठी भर अनाज की, मगर मिला क्या ज़ख्म ! अब हमें ऐसा मालूम पड़ता है कि अपने बोए हुये अनाज की बजाय इन ज़ख्मों से बहनेवाले खून से पेट भरना होगा।

रमा : मेरे बच्चो ! जब तक सांस में सांस है मैं तुम्हारा दुखड़ा दूर करने का यत्न करूँगी। शायद सफलता में देर लगे इसीलिये यह ज़ेवर (ज़ेवर उतारती है।)

किसान ५ : नहीं नहीं माँ ! हम तुम्हारे ज़ेवर नहीं ले सकते।

रमा : लेकिन पेट का तनूर तो ईंधन माँगता है।

किसान ६ : तुम हमारे लिये लक्ष्मी का अवतार हो, हम लक्ष्मी के ज़ेवर बेचकर पेट भरने से भूखों मरना अच्छा समझते हैं माँ !

रमा : बच्चे भूख से बिलख रहे हों और माँ ज़ेवरों से लदी दुल्हन बनी रहे, ऐसी माँ, माँ नहीं डायन है। मेरे ज़ेवर जब मेरे जिस्म को छूते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि सांप और बिच्छू मेरे जिस्म से लिपटे हुये हैं। क्या मुझे इन ज़हरीले सांपों और बिच्छुओं से न बचाओगे ?

किसान ७ : हमारी रगों का खून अभी इतना सर्द नहीं हुआ है माँ !

रमा : सन्तान का धर्म है कि माँ की आज्ञा का पालन करे, मैं तुम्हें आज्ञा देती हूं कि यह ज़ेवर बेचकर......

किसान १ : लेकिन कितने दिन गुज़रेंगे इस तरह ?

किसान २ : कब तक गुज़र होगी इन ज़ेवरों से !

रमा : जब तक भगवान की इच्छा ! (सब ज़ेवर उतार कर किसानों को दे देती है, शीला भी सब ज़ेवर उतार कर रमा को देती है। रमा शीला को सीने से लगाकर प्यार करती है, फिर शीला के जेवर भी किसानों को दे देती है और कहती है।) अच्छा अब तुम जाओ। (सब किसान जाने लगते हैं, रमा कुछ सोच कर किसानों से कहती है।) ठहरो, (किसान सब वापिस आ जाते हैं) सरकार हर रात की तरह आज भी सितार या विदेशी बाजा बजायेंगे, जब वह सितार या बाजा बजाते हैं तो उनका गुरूर सो जाता है, आत्मा जाग उठती है, उस समय फिर वही पुराने मालिक बन जाते हैं। प्रेम और उदारता की मूर्ति, आखों में दया की ज्योति, हृदय में सोई हुई हमदर्दी जाग उठती है। अगर आज रात तुममें से कोई भीख मांगता हुआ यहाँ से गुज़रे तो शायद हमारा कार्य सफल हो जावे।

सब किसान : (एक बूढ़े किसान से कहते हैं) बाबा तुम चले आना।

बूढ़ा किसान : अच्छा तो मैं आऊँगा माँ !

[सब किसान चले जाते हैं। रमा और शीला भी चली जाती हैं। बाहर की रौशनी मद्धम पड़ती है। अन्दर के कमरों में रौशनी हो जाती है मानों रात हो गई। सुरेश आता है, पीछे पीछे रमा आती है। सुरेश परेशान है, हाथ में सिगरेट है जिसे माँ की मूर्ति के सामने पीठ पीछे छिपा लेता है, फिर सितार को छेड़ता है, फिर बाजा बजाना शुरु करता है, कुछ लम्हे बजाने के बाद बेचैन सा हो जाता है और बाजा बन्द कर देता है।]

सुरेश : रमा !

रमा : (नज़दीक आकर) जो सरकार !

सुरेश : दिल पर कुछ बोझ सा मालूम हो रहा है रमा !

रमा : आपका मतलब सरकार ?

सुरेश : कुछ नहीं (बेचैनी में फिर बाजा बजाने लगता है, फिर बन्द करके बैठ जाता है।)

रमा : आप तो कुछ कहना चाहते थे सरकार !

सुरेश : हाँ ! (फिर परेशान हो जाता है) नहीं !

रमा : मैं समझी नहीं सरकार !

सुरेश : (परेशानी दबाता हुआ) रमा ! हमने हलों की जगह ट्रैक्टर और कुओं की जगह ट्यूब वैल लगवा लिये, सवारी के लिये घोड़ा गाड़ी की जगह मोटरें रख लीं, गाढे की जगह तन पर रेशमी कपड़े पहन लिये, फ़सल बढ़ गई, घर में दौलत के अम्बार लग गये, मगर दिल की शान्ति खो बैठे हैं, ज़िन्दगी के आराम बढ़ गये, खुशी कम हो गई, हमारे विचार में तो बहुत महंगा पड़ा है यह सौदा।

रमा : सरकार आपने सोचा था कि अनाज देकर मशीनें ले आयेंगे, मशीनें जिन्होंने आपकी फ़सल और दौलत बढ़ा दी, लेकिन आपने किसानों के मुँह से रोटी छीन ली है, आपने यह सौदा उनके खून से किया है जो अपना लहू देकर आपकी खेती सींचते थे, क्यों न मंहगा पड़ता यह सौदा। सरकार आपके चंद ज़िमींदारों और आपके उस नये दीवान के घरों में घी के चिराग़ जल रहे हैं, लेकिन कभी आपने यह न देखा कि उन महलों के साये में कितनी झोंपड़ियां अंधेरी हो गई हैं, आपने कितने दिये बुझा कर अपने घर की रौशनी बढ़ाई है, आपने कभी अपनी तिजोरियों में सोने के टुकड़ों को देखा, उन पर जो प्रजा के खून के छींटे लगे हैं आपको नज़र आये !

सुरेश : यह ग़लत है रमा !

रमा : नहीं सरकार ! आप अपनी दौलत को अपनी खुशहाली से नाप रहे हैं, कितना अच्छा होता कि आप अपनी प्रजा की खुशहाली से अपनी दौलत का अन्दाज़ा करते, जैसे पहले किया करते थे। सरकार ! पहले यहाँ सब को पेट भर कर खाना मिलता था, सब शान्ति का जीवन व्यतीत करते थे, किसी की किसी के धन पर नज़र न थी, किसी को किसी से शिकायत

न थी। उसके बाद आपने मशीनें मंगवाईं। फ़सल बढ़ गई, आपके नये दीवान ने कुछ इस तरह बाँटा कि आधी से ज़्यादा आमदनी तो उसके देश में चली गई और कुछ आपको और आप के चन्द ज़िमींदारों को खुश करने के लिये दे दी गई। आप पहले से ज़्यादा मालदार हो गये, गैरों की सोने से भरी हुई तिजोरियां और अपनी भूखी प्रजा का पेट आपको नज़र नहीं आया। आपने फ़सल और दौलत की बुहतात देखी, लेकिन आपने यह देखने की कोशिश तक नहीं की कि इन मशीनों के लाने से कितने लोगों के मुँह की रोटी और जीवन की शान्ति छिन गई। आपने सोने की झन्कार सुनी और अपनी भूखी प्रजा की चीख़ों पर आपने कानों में उंगलियाँ दे दीं। सरकार! अब भी न भूलिये, जीवन का संगीत सोने की झंकार में नहीं, प्रजा की ख़ुशी में है।

सुरेश : रमा!

रमा : जी सरकार!

सुरेश : यह तुमने सरकार सरकार की रट क्या लगा रखी है!

रमा : यही आपको पसन्द है न सरकार!

सुरेश : नहीं यह ग़ल्त है, मैं माँ की सौगन्ध खा के कहता हूँ। (यह कह के माँ की मूर्ति की तरफ़ घूमता है, जलते हुए सिगरट को ज़मीन पर फैंक पांव से मसल डालता है। बाहर से गाने की आवाज़ आती है।)

गाना

इस अंधेरी रात में, आंसुओं की बरसात में, कौन है मेरा।
हर ओर अंधेरा, भूखा हूँ मैं, प्यासा हूँ मैं, नंगा और मुहताज॥

सुरेश : (थोड़ी देर के लिये हैरान खड़ा रह जाता है, फिर दबी हुई आवाज़ में रमा से पूछता है।) तुम यह आवाज़ सुन रही हो? (रमा सर से "हाँ" का इशारा करती है।) इस मूर्ति से? (रमा "न" का इशारा करती है, सुरेश फिर मूर्ति की तरफ़ ग़ौर से देखता है, गाने की आवाज़ आ रही है।) ओह! मुझे अनुभव हुआ मानों आवाज़ मूर्ति से आ

रही हो। (और यह कह के सर थाम सोफ़े पर गिर पड़ता है, आवाज़ आ रही है।)

गाना (बाहर से)

हर ओर अंधेरा, भूखा हूँ मैं, प्यासा हूँ मैं, नंगा और मुहताज।

सुरेश : (सोफ़े से उठता है, बाहर झांकता है, फिर रमा से पूछता है।) यह कौन गा रहा है "भूखा हूँ मैं, प्यासा हूँ मैं, नंगा और मुहताज।" कोई बहुत दुखियारा मालूम होता है ?

रमा : जी ! मालूम होता है कोई भूखा, रोटी के चंद टुकड़ों का मुहताज, रात के बारह बजे सदा लगा रहा है।

सुरेश : भूखा, रोटी के चन्द टुकड़ों का मुहताज, और हमारी जागीर में जहाँ खाने पीने की चीजें कसरत से होती हैं ! यह हालत कैसे हो गई रमा ?

रमा : जागिये नाथ ! नींद से जागिये, सरमायेदारी के नशे से जागिये। जहाँ मालिक अपनी प्रजा से, अपने लोगों से बेपरवाह हो जाय वहाँ एक तो क्या सारा देश भूखा नज़र आयगा।

[फिर गाने की आवाज़ आती है, सुरेश ऊपर जाता है और धीरे धीरे वह बूढ़ा किसान गाता हुआ सामने आ जाता है।]

गाना

हर ओर अंधेरा, भूखा हूँ मैं, प्यासा हूँ मैं, नंगा और मुहताज।
ओ भूखी प्रजा के राजा कैसा तेरा राज॥

सुरेश : (किसान से) अन्दर आजाओ भाई।

किसान : नहीं बाबा मैं अन्दर नहीं आऊँगा।

सुरेश : क्यों ?

किसान : नये दीवानजी से इजाज़तनामा लेना पड़ता है, नहीं तो वह पिटवा डालते हैं, मैं पहले भी अपना सर फुड़वा चुका हूँ। मालिक ! तुम्हें रोटी देनी है तो यहाँ दे जाओ, नहीं तो जहाँ दो रात पहले

भूख से काट चुका हूँ एक रात और सही। (किसान गाता हुआ चला जाता है।)

इस अंधेरी रात में, आंसूओं की बरसात में..........

सुरेश : (रमा से) इसे रोको, इसे रोको। (रमा बाहर जाकर उसे बाहर रोक कर अन्दर आती है।)

रमा : यह है आपकी प्रजा की आवाज़, दुखी प्रजा की आवाज़, भूखी प्रजा की आवाज़। वही जिन्हें आप अपनी सन्तान समझते थे, आपके बच्चों की गर्दनों पर ग़ैरों की छुरी रखी हैं, बचाईये नाथ, अपनी सन्तान को बचाईये, चलिये बाहर चलिये और इन लोगों की हालत अपनी आखों से देख लीजिये।

[सुरेश और रमा बाहर जाते हैं, रमेश और वि. औरत भीतर से आते हैं।]

रमेश : देवी एक तुम हो कि मेरी इतनी सेवा करती हो, मेरा इतना ख्याल रखती हो, बिला किसी ग़रज़ के, और एक मेरा भाई है जो मुझे लूट रहा है, मुझे तबाह कर रहा है और फिर कहता है कि यह सब कुछ मेरे फ़ायदे के लिये कर रहा है। नहीं वह मेरा भाई नहीं है, दुश्मन है, सिर्फ़ दुश्मन, भाई बिलकुल नहीं। मेहनत मैं करता हूँ और मज़े वह लूटता है और कहता है मेरा भाई है। दग़ाबाज़ कहीं का, देवी! अब मैं सोचता हूँ कि अगर तुम न आतीं तो मेरा क्या हाल होता?

वि. औरत : अब भी कुछ नहीं बिगड़ा छोटे सरकार! आप देखियेगा मैं सब दुरस्त कर दूँगी। अच्छा अब आप जाईये, आराम फ़रमाइये। (रमेश चला जाता है, वि. औरत कुछ लम्हे सोचती हुई चक्कर लगाती है, फिर बाहर से किसी के आने की आहट पाकर वह भी चली जाती है। सुरेश और रमा अन्दर आते हैं।)

सुरेश : अब मेरी आँखें खुली हैं रमा! मैं सांप के खूबसूरत जिस्म को देखकर उससे खेलने लग गया था। उसके सर में छिपा हुआ ज़हर तो मैंने देखा ही न था। रमा इन लोगों की सब चीज़ें इकट्ठी करो। (अपने

जिस्म से [1]ड्रेसिंग गौन उतारता है।) इनकी होली जला डालो, भस्म कर दो इन विदेशियों की हर शय को, फूँक दो इन विदेशियों के नाम तक को। इन लोगों का यहाँ रहना श्राप से कम नहीं, पापी जिस थाली में खाते हैं उसी में छेद करते हैं। मैं इनको घर से निकाल कर ही दम लूँगा। कहाँ है वह औरत ! कहाँ हैं उसके साथी?

वि. औरत : (आकर) मैं यहाँ हूँ।

सुरेश : निकल जाओ, निकल जाओ यहाँ से, अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो यहाँ से निकल जाओ।

वि. औरत : खूब ! बहुत खूब, मगर यह घर सिर्फ़ आप ही का घर नहीं है, रमेश भी इसका मालिक है, इसलिये मैं आपके हुक्म की तामील से क़ासिर हूँ और इसलिये भी कि यह आप दोनों भाईयों का मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला नहीं है।

सुरेश : मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला ! यही है हमारा मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला, निकल जाओ यहाँ से।

वि. औरत : (शोर मचा कर और चिल्ला कर रमेश को बुलाती है।) छोटे सरकार ! छोटे सरकार !!

रमेश : (अन्दर आता है, शीला भी साथ है) क्या शोर मचा रखा है ?

सुरेश : रमेश इन लोगों को घर से निकाल दो, यह धोखेबाज़ हैं। नमकहराम हैं यह लोग, दग़ाबाज़ हैं यह लोग।

रमेश : जानता हूँ, लेकिन यह लोग यहीं रहेंगे जब तक मेरा और आपका कोई फ़ैसला नहीं हो जाता।

शीला : भइया के सामने बोल रहे हैं आप !

रमेश : (गुस्से से) [2]Shut up & mind your own business. (शट अप एण्ड माइन्ड योर ओन बिज़नेस।)

सुरेश : कहने दो बहू, इसे कहने दो।

सुरेश : हाँ हाँ कह तो रहा हूँ, सच ही तो कह रहा हूँ, किसी का डर

१ पहनने का कपड़ा। २ ख़ामोश ! दख़ल अन्दाज़ी न करो।

तो नहीं है, सच्चाई किसी से नहीं डरती, सच्चाई को तुम थपकियाँ दे दे कर नहीं सुला सकते, यह घर मेरा भी तो है, यह जागीर मेरी भी तो है, तुम्हीं अकेले इसके मालिक नहीं।

सुरेश : रमेश ! आज यह कैसी बहकी बहकी बातें कर रहे हो ? मैंने कब कहा है कि मैं इसका मालिक हूँ। पर नहीं, तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं रमेश ! तुम इस वक़्त इन लोगों के बहकावे के नशे में हो, जाओ जाकर सो रहो।

रमेश : मैं नशे में हूँ, खूब ! मैं नशे में था, आपके झूठे बहकावे के नशे में, आपकी झूठी मुहब्बत के नशे में, आप के झूठे प्यार के नशे में। अब मैं नशे से जाग उठा हूँ। नशे में आप हैं जो अब भी मुझे झूठी तसल्लियों से बहलाना चाहते हैं, मगर मैं अब इन सुनहरी जालों में नहीं फंस सकता हूं, अब में खूबसुरत धोखा नहीं खा सकता, नहीं खा सकता।

[रमेश जाता है, शीला पीछे पीछे जाती है, त्रि. औरत भी चली जाती है]

सुरेश : रमेश ! (दोनों हाथों से मुंह ढांप लेता है।)

रमा : रमेश आज क्या कह गया, इसकी ज़बान आपके सामने कैसे खुली !

सुरेश : यह मेरी ही ग़लती थी रमा ! इन लोगों के बहकावे में पहले मैं ही आया हूँ। मैंने उस दिन रमेश के हाथ का छुआ हुआ खाना नहीं खाया, उसके हाथ का पानी नहीं पिया, उसे अछूत समझा। यह मेरी भूल थी, यह मेरी ग़ल्ती थी।

रमा : अब क्या होगा !

सुरेश : उम्मीद को हाथ से मत जाने दो रमा ! रमेश मेरा भाई है, हम दोनों की रगों में एक ही ख़ून गर्दिश कर रहा है। जिस तरह मैं ठोकर खाने के बाद संभला हूँ उसी तरह एक न एक दिन रमेश भी ठोकर खाकर खुदबखुद संभल जायगा। तुम देखना एक दिन हम फिर एक हो जायँगे, यह दुई न रहेगी, यह तफ़रक़ा न रहेगा। यह दुश्मनी जो इन ग़ैरों की बदौलत पैदा हो गई है फिर दोस्ती में बदल जायगी। हम भाई

भाई बन जायँगे, रमेश आयगा मैं उसे गले से लिप्टा लूँगा। रमा! आँसू आज भी मेरी आखों में देख रही हो, यह विपदा के आँसू हैं। आँसू उस दिन भी मेरी आखों से रवाँ होंगे, लेकिन वह खुशी के आँसू होंगे, मिलाप की खुशी के, आनन्द की खुशी के।

[अन्दर से हंसने की आवाज़ आती है, धीरे धीरे परदा गिरता है।]

ऐक्ट दूसरा सीन तीसरा

[लक्ष्मी मूर्ति के पास खड़ी है]

लक्ष्मी : माँ! तुमने मेरे रामू को फिर से बदल दिया है, उसे ठीक कर दिया है, तू बहुत अच्छी है माँ! दूसरों का दुख दूर करती है, मैंने मन्नत मानी थी कि तेरे सामने नाचूँगी, यह लो मेरी आरती स्वीकार करो। (आरती उतारती है, रामू के आने की आवाज़ सुन कर) रामू! रामू तुम आगये, आओ मैं तुम्हारी आरती उतारूँ। (लक्ष्मी दौड़कर ऊपर रामू को बुलाने के लिये जाती है और रामू को साथ लेकर जल्दी जल्दी सीढ़ियां उतरती है, रामू का पैर फिसल जाता है और वह नीचे आकर गिरता है।)

रामू : अच्छी मेरी आरती उतर रही है।

लक्ष्मी : चोट तो नहीं लगी?

रामू : नहीं! जान बूझकर गिरा था।

[लक्ष्मी आरती उतारती है।]

लक्ष्मी : अब कितने सुंदर मालूम होते हो।

रामू : रहने दो लक्ष्मी, सुन्दर मैं उसी पौशाक में लगता था।

लक्ष्मी : बन्दर नज़र आते थे, बन्दर।

रामू : बन्दर नज़र आता था, तुझे तो मैं बन्दर ही नज़र आता हूँ।

[विदेशी औरत और वि. आदमी आते हैं]

वि. औरत : (रामू को देखकर) यह क्या बदतमीज़ी है ? यह क्या जंगलीपन है ?

लक्ष्मी : ख़बरदार जो मेरे रामू को जंगली कहा।

वि. औरत : तुम चुप रहो।

लक्ष्मी : रामू ऊपर चलो नहीं तो यह तुम पर जादू कर देगी।

[रामू को साथ लेकर ऊपर जाने लगती है।]

वि. औरत : (गुस्से से) रामू ! इधर आओ। (रामू डरता हुआ वि. औरत के पास आता है) इसे हटा दो।

रामू : (उसकी समझ में नहीं आया, वह पूछता है।) किसको ?

वि. औरत : (मूर्ति को बता कर) इस मूर्ति को।

रामू : (भोचक्का होकर) माँ की मूर्ति को ?

वि. औरत : हाँ हाँ, माँ की मूर्ति को।

रामू : क्यों ?

वि. औरत : यहाँ मेरा मुजस्सिमा नस्ब होगा।

रामू : और हमारी माँ की मूर्ति ?

वि. औरत : फेंक दो।

रामू : फेंक दूँ ?

वि. औरत : गंदी नाली में।

रामू : (हैरान होकर) गंदी नाली में, माँ की मूर्ति को। (सोचता है।)

वि. औरत : अच्छा इधर आओ, यह लो। (देवी रुपये देती है।)

रामू : यह क्या है ?

वि. औरत : तुम्हारा इनाम।

रामू : मेरा इनाम !

वि. आदमी १ : ख़ुश हो जाओ रामू ! ख़ुश हो जाओ।

रामू : खुश हो जाऊँ ! (एकदम गुस्से में आकर) तुम समझती हो कि चांदी के चन्द टुकड़ों से तुम मेरी आत्मा खरीद लोगी ! (रुपया फेंक देता है) तुमने हमें भी अपनी तरह नीच समझ रखा है। (इसी वक्त रमेश चुपचाप आकर खड़ा हो जाता है और सब बात देखता है।) नहीं हटाऊँगा माँ की मूर्ति को, बरसों से माँ की मूर्ति यहाँ रहती है, सदियों से उसकी पूजा होती आई है और आज उसे फेंक दूँ, गन्दी नाली में।

[सब रामू को मारने लगते हैं, लक्ष्मी शोर मचाती है।]

रामू व लक्ष्मी : बड़े मालिक, बड़े मालिक ! (आवाज़ सुनकर सुरेश व रमा आते हैं। इनको देखकर सब विदेशी भाग जाते हैं। अब रमेश आता है, कन्हैया आता है और रामू को ले जाता है। लक्ष्मी भी जाती है।)

सुरेश : (रमा से) इन लोगों की इतनी हिम्मत हो गई कि हमारे आदमियों पर हाथ उठा सकें। (रमेश से) रमेश तुमने यह देखा ?

रमेश : हाँ देखा ! लेकिन इसकी वजह आप हैं।

सुरेश : मैं ! मैं ही सही, रमेश पर्दे के पीछे कुछ साये हरकत कर रहे है और हम दोनों एक दूसरे से दूर, बहुत दूर होते जा रहे है, हमारे प्रेम के चाँद में ग्रहण लगा रहा है। आओ माँ के सामने सौगंध खायें कि जब तक अंधेरे और झूठ की इन ताकतों को हरा नहीं लेंगे, चैन से नहीं बैठेंगे।

रमेश : हृदय में बैर भाव रखकर प्रेम नाम का पाठ करना आपको खूब आता है।

रमा : रमेश !

सुरेश : तुम चुप रहो रमा, रमेश इधर आओ। (प्यार से) मेरे पास आओ। यह तुम्हें क्या होता जा रहा है ?

रमेश : हाँ ठीक ही तो कह रहा हूँ, सच्चाई दबाने से नहीं दबती, आप सच्चाई को मीठी वाणी का ज़हर पिला कर मारना चाहते हैं।

सुरेश : आखिर तुम चाहते क्या हो, तुम्हारा मतलब क्या है ?

रमेश : मेरा मतलब साफ़ है, ज़मीनों के मालिक आप ही अकेले नहीं,

यह घर सिर्फ़ आप ही की मिलकियत नहीं, मेरा भी इसमें बराबर का हिस्सा है। आइये हम हिस्से बाँट लें, झगड़ा खुद्बखुद ख़त्म हो जायगा।

सुरेश: यह तुम क्या कह रहे हो रमेश? यह घर, यह ज़मीन, हमारी मिल्कियत नहीं, हमारी माँ है, तुम इसके टुकड़े करना चाहते हो! माँ के टुकड़े!

रमेश : यह कोई दलील नहीं, पूरी जागीर को अपने क़ब्ज़े में रखने का एक बहाना है, झूठी तसल्ली है, सब्ज़बाग़ है।

सुरेश : नहीं रमेश! यह शब्द तुम्हारे नहीं, यह विचार तुम्हारे नहीं, इन्हें तुम्हारे दिमाग़ में ठूंसा गया है, तुम्हारे मुंह में ग़ैरों की ज़बान बोल रही है।

रमेश : दूसरों को दोष देना आसान है, अपनी कमज़ोरी ढूंढना कठिन है। आप कहते हैं हमें मिलकर रहना चाहिये, मैं पूछता हूँ क्या मालिक और ग़ुलाम की तरह?

सुरेश : नहीं रमेश! दो भाईयों की तरह।

रमेश : भाईयों का प्यार ख़त्म हो चुका, मुझे आप पर शक है, आप को मुझ पर भरोसा नहीं रहा, अब हम में शान्ति रह सकती है तो इस तरह कि हम अपनी जागीर को दो हिस्सों में बाँट लें और दो अच्छे हमसायों की तरह अपना जीवन व्यतीत करें। इस तरह हो जाने पर न आप की नज़र मेरे धन पर पड़ेगी और न आप की दौलत मेरी आखों में खटकेगी।

सुरेश : रमेश! तुमने एक बहुत टेढ़ा और कठिन प्रश्न मेरे सामने रखा है। मुझे यक़ीन है कि यह उस वक्त तक हल नहीं हो सकता जब तक कि यह लोग यहाँ हैं।

रमेश : आप साफ़ साफ़ क्यों नहीं कह देते कि आप इस घर में मुझे ग़ुलाम से ऊँचा दर्जा देना ही नहीं चाहते।

सुरेश : नहीं रमेश! मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा, यह विचार मेरे स्वप्न में भी नहीं आ सकता। देखो तुम ऐसा क्यों नहीं करते, सारा घर तुम ले लो, सारी ज़मीन तुम संभाल लो, जो काम मेरे क़ाबिल समझो मुझे

सौंप दो, मुझे इसमें ज़रा भी संकोच न होगा, कोई भी दुख न होगा।

रमेश : आपने फिर टाल मटोल शुरु की और लगे बहाने गढ़ने।

सुरेश : तुम कुछ भी समझो रमेश! लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि जो महल हमारे पुरखों के खून और हड्डियों से बना है उसकी नींव में बारुद की चादर बिछा दी जाय और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये जाँय। हाँ मैं इस बात पर तय्यार हूँ कि हम दोनों सोच विचार कर कोई ऐसा रास्ता ढूंढ निकालें जो हमें एक दूसरे से दूर ले जाने के बजाय फिर से प्रेम और मुहब्बत के संगम पर पहुंचा दे।

रमेश : ऐसा अब एक ही रास्ता है, हम जागीर के दो हिस्से करें, मकान को दो हिस्सों में बाँटा जाय और याद रहे अगर तुम्हारे दबाव से इन लोगों ने निज़ाम तुम्हारे हाथों में दे भी दिया तो मुझ में इतनी हिम्मत है कि अपना मतालिबा ताक़त से मनवा सकूं। (चला जाता है।)

सुरेश : रमेश!

रमा : नाथ!

सुरेश : रमा! यह सब इन लोगों की बदौल्त है, अगर आज यह लोग हमारा घर छोड़कर चले जाँय तो हमारे झगड़े ख़ुदबख़ुद तय हो जायँगे।

रमा : तो क्या रमेश की मदद के बग़ैर आप इन लोगों को घर से नहीं निकाल सकते!

सुरेश : रमा! निज़ाम बिलकुल बिगड़ चुका है, बड़े बड़े ज़मींदार इन लोगों से ख़ुश हैं क्योंकि वह मालामाल हो रहे हैं, ग़रीबों को समझ ही नहीं कि निज़ाम किसे कहते हैं, वह बेचारे दिन रात रोटी की जुस्तजू में सरगर्दा रहते हैं, हाँ दरम्यानी तबक़ा इन लोगों को ज़रुर नापसंद करता है लेकिन वह भी कुछ इम्दाद नहीं कर सकता, क्योंकि वह ख़ुद ही इन लोगों के बिछाये हुए नौकरियों के जाल में बुरी तरह उलझ कर रह गया है।

रमा : चारों तरफ़ मायूसी ही मायूसी है, अंधेरा ही अंधेरा है, और

इस अंधेरे में अगर कोई रौशनी है तो उस आग की जिसमें हमारा घर जल रहा है, हमारे पुरखों की आत्मा फुंक रही है।

सुरेश : नहीं रमा! (तख्त पर से सितार उठाते हुए) रात का अंधकार देखकर यह मत मान लो कि दुनिया में रौशनी के नाम की कोई चीज़ नहीं। मैं शाम के अंधरे से निराश नहीं होता, मेरी नज़र अंधरे में छुपे हुए सुबह के उजाले पर रहती है। मैं मायूसी में काम करने का आदी हो चुका हूँ रमा! (सितार बजाना शुरु करता है, एक ही टुकड़ा बजाता है।)

रमा : नाथ! सितार में स्वर, स्वर में सोज़....

सुरेश : ग़ायब हो गये, रमा! एक दिन था कि मैं सितार को छूता ही था कि इसके तारों से गीत मचलते हुए, अंगड़ाते हुए, बाहर निकल आते थे, आज मैं उन गीतों को ढूंढता हूँ और वह मुझे मिलते नहीं। रमा! हमारे जीवन के तार कुछ ग़ैरों ने तोड़ दिये हैं, कुछ अपनों ने उलझा रखे हैं, संगीत पैदा हो तो कैसे? मेरी सितार शमशान की तरह वीरान है, खामोश है। (फिर सितार बजाना शुरु करता है, रमेश गुस्से से बाहर आता है।)

रमेश : अगर आप यह समझे हुए हैं कि मैं इन बातों से घर छोड़ दूँगा तो यह ग़लत है, आप बहुत ग़ल्त फ़हमी में मुबतिला हैं।

सुरेश : रमेश! मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं किया, मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा।

रमेश : कितने भोले बनते हैं आप, मैं आपकी चालों को खूब समझता हूँ। यह जानते हुए भी कि मैं पढ़ रहा हूँ, आप सितार बजा रहे हैं, जैसे आपको मालूम ही नहीं कि इससे पढ़ने में विघ्न पड़ता है, इसी लिये तो कहता हूँ कि इस घर के.........

सुरेश : (बात काट कर) रमेश! यह तुम्हें क्या होता जा रहा है? एक दिन था तुम खुद ही कहा करते थे कि भइया जब तुम सितार बजाते हो तो मेरा मन पढ़ने में अधिक लगता है, आज यह भी तुम्हें बुरी लगने लगी, अच्छा रमेश! खफ़ा न हो अब यह ग़लती कभी नहीं होगी।

रमेश : यह ग़ल्ती ज़रूर होगी, ऐसी बहुत सी ग़ल्तियाँ होंगी और

ऐसी ग़लतियाँ होती ही रहेंगी जब तक हमारा आपस में फ़ैसला नहीं हो जाता, जब तक हम सबसे बड़ी ग़लती दूर नहीं करते, मैं कहता हूँ हमारे यहाँ एक घर और एक ख़ान्दान का रिवाज ही ग़लत है।

सुरेश : मगर यह रिवाज हमारे बुज़ुर्गों ने बनाये थे रमेश !

रमेश : मैं उन्हें परमात्मा नहीं मानता, वह भी ग़लती कर सकते थे और यह शायद उनकी सबसे बड़ी ग़लती थी। उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि दो तल्वारें एक म्यान में कभी नहीं रह सकतीं।

सुरेश : नहीं रमेश नहीं, उन्होंने भाईयों को कभी तलवार नहीं समझा, वह भाईयों को बाज़ू समझते थे रमेश ! कभी ऐसा भी हुआ है कि मनुष्य का एक बाज़ू दूसरे बाज़ू से लड़ जाय ?

रमेश : आप तो पुरानी कहानियाँ ले बैठे, हमारी ज़िन्दगी में यही तो सबसे बड़ी कमज़ोरी है कि हम अपने बुज़ुर्गों के कारनामों में खोये रहते हैं, उनकी कहानियों को दुहराते हैं, उनको ग़ौर से सुनते हैं, मगर अपनी ख़बर ही नहीं।

सुरेश : तुम भूल रहे हो रमेश ! हमारे पुरखों के कारनामे हमारा सब से अनमोल धन हैं, वह हमारे ख़ून की गर्मी, हमारे दिलों और ख्यालों की गहराईयों को संभाले हुए हैं, यह उन्हींकी बदौलत है कि हम भटक सकते हैं, गुम नहीं हो सकते, वह अंधेरे में हमारी रोशनी हैं, मुसीबत में हमारा सहारा हैं।

रमेश : मैंने तो आपसे एक सीधी सी बात कही और आपने बहस छेड़ दी, मैं आपसे शास्त्रार्थ नहीं करना चाहता, मैं आपसे अपना हक़ मांग रहा हूँ, अपना अधिकार।

सुरेश : लेकिन यह अधिकार तुम्हें दिया किसने ? बुज़ुर्गों ने, यह तुम भूल गये, उनकी दी हुई शिक्षा हम भूल गये इसीसे हमारी तबाही शुरु हुई। आज हम इन ग़ैरों से सबक़ ले रहे हैं इससे तबाही की तारीख़ मुकम्मिल हो जायगी। रमेश ! अब भी वक्त़ है, हम संभल सकते हैं। आओ उस पिंजरे की तीलियों को तोड़ डालें जो इन नमकहरामों ने

हमारे लिये तय्यार किया है, और जिसमें यह हमें क़ैद करके रखना चाहते हैं।

रमेश : यह जादू अब न चलेगा, मैं अब आपकी मीठी बातों के जाल में नहीं फंस सकता।

सुरेश : तो क्या यह तुम्हारा आख़री फ़ैसला है?

रमेश : जी हां! आख़िरी फ़ैसला। जब तक जागीर के दो टुकडे न होंगे, मकान के दो हिस्से न होंगे यह लोग यहीं रहेंगे।

सुरेश : रमेश! मुझे थोड़ा समय दो। रमेश मैं तुम्हारे प्रस्ताव को सोच विचार के काँटे पर तौलूँगा, मैं तुम्हारी माँग पूरी करने की कोशिश करूँगा रमेश! (रमेश चला जाता है, सुरेश रमा से कहता है।) रमा! माँ के जिस्म के हिस्से करना बुरा ही सही लेकिन मैं उसे ग़ैरों के हाथ बेच देने से कम बुरा समझता हूँ।

वि. औरत : (आ कर) आदाब बजा लाती हूँ सरकार! मैं आपके लिये ख़ुशख़बरी लाई हूँ। हमने फ़ैसला किया है कि ज़ुम्मेदारी के उस बोझ से जो आप दोनों भाईयों ने हमारे कंधों पर डाला है दस्तबरदार हो जायं। हमने आपकी ज़मीने ज़रख़ेज़ कीं, आपको लाइल्मी के अंधेरे कुएँ से निकाल कर तालीम की शाहराह दिखाई। हमारी हमेशा यही कोशिश रही कि आप अपना फ़र्ज़ पहचानने और अपना बोझ खुद उठाने के क़ाबिल हो जायं, लेकिन हम यह नहीं चाहते कि जो हमने आपको तहज़ीब, तालीम, इख़लाक़, रास्ती और अम्न दिया है वह आप दोनों भाईयों की लड़ाई झगड़ों की आग में जल कर ख़ाक हो जाय, इस लिये हम यह समझते हैं कि हम उस वक्त तक अपने फ़र्ज़ से सुबकदोश नहीं हो सकते जब तक आप दोनों भाई किसी मुत्तफ़िक़ा फ़ैसले पर नहीं पहुंचते, आप हमारे सामने मुत्तफ़िक़ा माँग पेश कीजिये, हम मुकम्मिल तौर पर आपकी जागीर से दस्तबरदार हो जायंगे। वह दिन आपके लिये एक शुभ दिन होगा और उस दिन हमारा एक अज़ीमउश्शान अज़्म पायाए तकमील तक पहुंचेगा।

सुरेश : वह दिन सचमुच हमारे लिये शुभ दिन होगा, गो तुम यही चाहोगी कि वह दिन कभी न आये क्योंकि तुम जानती हो हमारा मिलाप तुम्हारी अमलदारी के लिये मौत है, लेकिन मिलाप होगा और होकर रहेगा। यह एक अटल सच्चाई है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह हम तुमसे छुटकारा पाने के लिये तुले हुए हैं। (वि. औरत धीरे धीरे जाना शुरु करती है) हमें आपस में मिलने से कोई ताक़त नहीं रोक सकती, हम अपनी माँ को तुम्हारे ज़हरीले पंजों से छुड़ाकर रहेंगे। तुम समन्दर की लहरों में ज़न्जीरें नहीं डाल सकतीं, हम समन्दर की लहरों की तरह आज़ाद रहने का फ़ैसला कर चुके हैं। (वि. औरत चली जाती है)

रमा : नाथ! आप रमेश को क्यों नहीं समझाते?

सुरेश: (प्यार भरे गुस्से से) रमेश को क्यों नहीं समझाते, रमेश को क्यों नहीं समझाते? देखती नहीं हो कि रमेश समझाने की हद से बहुत दूर निकल गया है। मैं सितार बजाता हूँ तो उसके कानों में ज़ख्म हो जाते हैं। वह मेरी सूरत तक देखने का ख्वादार नहीं। मैं बात कर रहा था वह उठ के चला गया। नहीं रमा! बेगानों के मंत्र उसे याद हैं, मेरे दिल की आवाज़ उसके कानों तक नहीं पहुँचती। शायद अब मेरी बातों में असर नहीं रहा रमा! एक दिन था रमेश कहा करता था, भइया हम माँ की दो आखें हैं, क्या एक आँख कभी यह भी सोच सकती है कि दूसरी आंख फूट जाय, लेकिन आज वह मुझसे इतना बदज़न हो गया है, नहीं, मैं उसे दूँगा जो वह चाहता है, मैं उसकी मांगें पूरी करुंगा। (रमेश को आवाज़ देता है।) रमेश! रमेश!!

रमा : तो क्या आप भी माँ की दोनों आँखें फोड़ देंगे?

सुरेश: मर्ज़ लाइलाज होता जा रहा है, मरीज़ की ज़िन्दगी बचाने के लिये कभी उसके जिस्म के हिस्से भी काट देने पड़ते हैं रमा!

रमा : मरीज़ के जिस्म के हिस्से काटकर उसकी ज़िन्दगी तो बचाई जा सकती है मगर उसे नाकारा होने से कौन बचा सकता है?

सुरेश : रमा! मैं मानता हूँ कि हम अलग होकर बहुत नुक़सान

उठायेंगे लेकिन रमेश को कौन समझाये। उसे मेरे खिलाफ़ भड़काया गया है और भड़का हुआ दिल बहरा होता है, अंधा होता है। तुम माँ पर विश्वास रखो, भगवान पर भरोसा रखो, सब ठीक हो जायगा। (रमेश को आवाज़ देता है) रमेश! रमेश!! (रमेश आता है) आओ रमेश, आओ, बैठो। मुझे सब कुछ मन्जूर है, देखो तुम ऐसा करो, सारा घर तुम ले लो, सारी ज़मीन तुम संभाल लो, उसके टुकड़े न करो, मैं तुम्हारा दास बन कर रहने के लिये तय्यार हूँ, मुझे अपने क़दमों से अलग न करो।

रमेश : मुझे भीख नहीं चाहिये, मैंने आपके सामने भीख की झोली नहीं फैलाई, मैंने आपसे जागीर या घर का दान नहीं मांगा। मैंने अपना हक़ माँगा है और वह मैं आपसे लेकर ही रहूँगा, चाहे मुझे इसके लिये अपना खून ही क्यों न बहाना पड़े।

सुरेश : नहीं नहीं ऐसा न कहो रमेश! यह दुर्वाक्य मुंह से न निकालो। ईश्वर न करे वह दिन आये कि भाई भाई का खून बहाये, अगर वास्तव में कभी ऐसा हो गया तो हम कहीं के न रहेंगे, तबाह हो जायंगे, बरबाद हो जायंगे और दुश्मन हमारे सरों पर हमेशा के लिये दनदनाते रहेंगे। वह हँसेगे। नहीं रमेश नहीं। मांगो तुम क्या चाहते हो?

रमेश : पहले आप जागीर और घर के हिस्से करने का उसूल मानिये।

सुरेश : (कुछ रुक कर दुख भरे लहजे में) मुझे मन्जूर है।

रमेश : फिर ठहरये मैं नक़शे ले आता हूँ। (रमेश चला जाता है।)

सुरेश : (मूर्ति के पास आकर) मुझे क्षमा कर दो माँ। रमा! माँ की ख़ातिर औलाद के टुकड़े होते देखा था लेकिन औलाद के हाथों माँ के टुकड़े होते कभी न सुना था। हम कितने कपूत हैं कि आज ग़ैरों के बहकावे में आकर माँ के टुकड़े करने पर आमादा हो रहे हैं।

रमेश : (आता है, हाथ में नक़शे वग़ैरह लिये है) लीजिये, यह हैं वह नक़्शे (नक़्शा दिखा कर) मुझे जागीर के उत्तर पश्चिम का यह हिस्सा चाहिये, मुझे पूरब में यह इलाक़ा चाहिये।

सुरेश : (नक़्शे पर दिखाता हुआ) माना कि इन इलाक़ों में गेहूँ और

धान की पैदावार ज़्यादा होती है मगर दूसरी चीज़ों के लिये तुम्हें हमेशा दूसरों का मुहताज रहना पड़ेगा।

रमेश : आपके मुफ़ीद मशवरे का शुक्रिया, मैं दूध पीता बच्चा नहीं हूँ, अपनी भलाई बुराई बखूबी समझता हूँ, आप मेरा फ़िक्र न कीजिये।

सुरेश : एक बात और है, उत्तर पश्चिम और उत्तर पूरब के इलाके अलग अलग रहेंगे, तुम अच्छी तरह उनकी देखभाल भी न कर सकोगे। अभी कुछ ही दिनों की तो बात है कि इन लोगों की बदइन्तज़ामी की वजह से उत्तर पश्चिम में अकाल पड़ गया, इन्होंने इमदाद न पहुँचाई, न पहुँचाना चाही, लाखों जानें ज़ाया हो गईं। अब अगर बटवारा हो गया और इसी तरह की कोई दुर्घटना हो गई तो इमदाद कैसे पहुँचाई जायेगी?

रमेश : इसके लिये आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं। अभी आपने मेरी दूसरी माँग तो सुनी ही नहीं। मुझे आपकी ज़मीनों में से एक रास्ता चाहिये जो मेरी जागीर के दोनों हिस्सों को आपस में मिलाये।

सुरेश : और अगर यह बीच वाली जनता को मन्जूर न हुआ तो?

रमेश : (नक़्शे लपेट कर) तो हमारा आपका कोई फ़ैसला न होगा और यह लोग यहीं रहेंगे।

सुरेश : देखो तुम ऐसा क्यों नहीं करते कि पहले हम दोनों मिलकर इनको यहाँ से निकाल लें फिर हमारे समझौते खुदबखुद हो जायंगे।

रमेश : मुझे हंसी आती है आपकी अक्ल पर। आप घोड़े को गाड़ी के पीछे जोतना चाहते हैं। पहले आपको मुझसे फ़ैसला करना होगा उसके बाद हम दोनों मिलकर इन लोगों को यहाँ से निकालेंगे।

सुरेश : तुम खुद ही उल्टी बात कर रहे हो रमेश! जब तक यह लोग यहाँ से जाते नहीं मैं तुम्हें दे भी क्या सकता हूँ? इन लोगों ने मशीनें वग़ैरह मंगवा कर हमारी जागीर को क़र्ज़ के भारी बोझ से दबा दिया है। रमेश! बाँट हो जाने से आमदनी कम हो जायगी, खर्च बढ़ जायंगे—एक एक दो और ग्यारह होते हैं, आओ पहले इकट्ठे होकर इन लोगों को यहाँ से निकाल दें, फिर बाँट भी कर लेंगे।

रमेश : आपने फिर टाल मटोल शुरु की। आप कोई समझौता करना चाहते ही नहीं, यह आपकी एक चाल थी मुझे लोगों की नज़रों से गिराने की। (नक़्शे उठाकर जाने लगता है।)

सुरेश : तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते ?

रमेश : (रुककर) इसलिये कि आप पर से मेरा विश्वास उठ गया है, मुझे आप पर भरोसा नहीं रहा।

सुरेश : तो क्या यह भरोसा फिर क़ायम नहीं हो सकता ?

रमेश : हो सकता है, आप मेरी मांगें मान लीजिये, जागीर को दो हिस्सों में बाँट दीजिये, मकान के दो हिस्से कर दीजिये और अपनी ज़मीनों में से मुझे एक रास्ता दे दीजिये, झगड़ा ख़त्म।

सुरेश : अच्छा रमेश ! मैं अपनी जागीर को इन ज़ालिमों के पंजे से अवश्य छुड़ाऊँगा। भले कोई भी क़ीमत क्यों न देनी पड़े, मगर याद रखो जब घर के टुकड़े होंगे, ज़मीन के टुकड़े होंगे, चारों ओर हाहाकार मच जायगा। बाप बेटे से बिछड़ेगा, भाई भाई से बिछड़ेगा, पत्नी पति से बिछड़ेगी, मित्र मित्र का वैरी बन जायगा।

रमेश : (अहदनामा सामने करता हुआ) आप कीजिये इस पर दस्तख़्त। (शीला रमेश के पास आती है, रमेश उसको गुस्से से देखता है, वह सहम जाती है और चुपचाप खड़ी रहती है।)

सुरेश : बहू !

रमा : नाथ !

सुरेश : रमा ! बुजुर्गों ने कहा है कि जब रात का अंधकार बढ़ जाय तो समझ लो कि भोर होने को है। यहाँ से हमारी ज़िन्दगी का सबसे अंधेरा वक़्त शुरु होता है, यही प्रार्थना करो कि शीघ्र ही यह समाप्त हो जाय और इसके बाद हम फिर प्यार की, एकता की, स्वतंत्रता की सुबह देखें—इकट्ठे।

[अहदनामे पर दस्तख़्त कर देता है। बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है, रमेश अहदनामा लेकर चला जाता है। चारों तरफ़ सुर्ख़ रौशनी फैल जाती है। सुरेश माँ की मूर्ति से लिपट जाता है। धीरे धीरे परदा गिरता है।]

[वही घर, लेकिन अब घर में दीवार खड़ी है। मूर्ति का आधा हिस्सा रमेश की तरफ़ है और आधा सुरेश की तरफ़। दीवार के एक तरफ़ रामू बैठा आँसू बहा कर दोहा कह रहा है और दूसरी तरफ़ लक्ष्मी बैठी हुई रो रही है। दिवाली का दिन है, चारों तरफ़ दीवे जल रहे हैं, पर जैसे बुझे बुझे से हों।]

रामू : **उस तन में काँटा लगे इस तन में हो पीर।**
विधना कुछ ऐसो बधयो निस दिन बहते नीर ॥

लक्ष्मी ! हम दोनों लड़ते थे, झगड़ते थे, लेकिन यह कभी न सोचा था कि यूँ बिछड़ जायंगे। लक्ष्मी ! सच कहा है किसीने "लड़न रात हो, बिछुड़न रात कभी न हो।"

लक्ष्मी : रामू ! यह क्या हो गया ? मैं तुमसे लड़ती थी, झगड़ती थी, लेकिन यह कभी न सोचा था कि हम तुम अलग हो जायंगे। (तीनों विदेशी आकर ऊपर खड़े हो जाते हैं और यह बातें सुनते हैं।)

रामू : जी चाहता है टक्करें मार मार कर यह दीवार तोड़ दूं या अपना सर फोड़ लूं। (वह तीनों विदेशी नीचे उतर आते हैं और कहकहा लगाकर हंसते हैं।) हंसते हो ज़ालिमों हंसो, अगर बडे मालिक ने रोका न होता तो अपना सर फोड़ने से पहले तुम्हारा सर फोड़ देता।

वि. आदमी १ : [1]Shut up you (शट अप यू) (तीनों हंसते हुये चले जाते हैं। अब रमा व चाची आती हैं, उनको देखकर रामू रो पड़ता है।)

रमा : (प्यार से) रामू ! मत रो रामू, मत रो।

रामू : माँ ! पिछली दिवाली पर आपने कहा था कि लक्ष्मी मुझे मिल जायगी और अब यह दीवार !

---

१ चुप रहो तुम।

रमा : मैं तेरा दुख जानती हूँ रामू ! उठो अपना दिल न दुखाओ। (रामू आखें पोंछता हुआ अंदर चला जाता है, उधर लक्ष्मी भी चली जाती है, रमा मूर्ति के पास जाती है।) माँ ! तू यह सब कुछ देख रही है और फिर भी ख़ामोश है। मिलाप की रौशनी पर फूट के अंधकार की जीत हुई। अज्ञानी मन पूछता है ऐसा क्यों हुआ? वह नहीं जानता कि यह विधाता का वरदान था। दुनिया को रौशनी देने वाली माँ ! तेरा वरदान अंधेरा ! माँ ! इसे कैसे समझाऊँ, यह तो हमारी परीक्षा थी, तुमने बच्चों की परीक्षा लेनी चाही थी। अंधेरा बहुत थोड़े समय के लिये है न माँ? फिर से इन भाईयों के दिलों में प्रेम की ज्योति जगा दो, उनकी आखों को रौशन कर दो। इस घर में फिर से उजाला कर दो जो अंधेरे में ग़ोते खा रहा है। इस दीवार को गिरा दो माँ ! जो इन भाईयों ने खड़ी की है। माँ ! ऐसा हो जाने पर तेरे चरणों में दो हज़ार दिये जलाऊँगी। आयन्दा दिवाली पर दो हज़ार दिये जलाऊँगी।

[सुरेश और पुराने दीवान जी ऊपर से आते हैं।]

सुरेश : न रो रमा ! अब रोने से क्या हासिल? (दीवान जी से) आईये दीवान जी ! (सुरेश खिड़की के पास पहुँचता है, बैक ग्राउंड से साज़ बजने की आवाज़ और वही धुन जो दिवाली के अवसर पर सुरेश के यहाँ गाई बजाई जाती थी, सुनाई देने लगती है। सुरेश रुक कर खिड़की से देखता और सुनता है।)

रमा : (सुरेश को देखकर कुछ लम्हे बाद) क्या सोच रहे हैं नाथ !

सुरेश : (नीचे उतरता आता है और कहता जाता है) कुछ नहीं रमा ! ऐसे ही कुछ बीती दिवालियाँ याद आगई। न जाने क्यों आज की रात रह रह कर वही पुरानी धुनें कानों में बजने लगती हैं।

रमा : (सुरेश की आखों में आँसू देखकर) आपकी आँखों में आँसू ?

सुरेश : हाँ रमा ! आँखों में आँसू आ ही गये। चाहता हूँ इन्हें समन्दर की गहराई नसीब हो जाय और मैं इनमें डूब मरूँ।

रमा : यह आप क्या कह रहे हैं नाथ !

दीवान : ऐसा न कहिये, यह आपको शोभा नहीं देता।

सुरेश : दीवानजी ! आज दिवाली है, मगर आज की दिवाली रौशनी का त्योहार नहीं, अन्धकार के राज के स्वागत का काला दिन है। हमारे दिलों में अंधेरा है और हम घरों में दिये जला रहे हैं। गिरे हुए देश, भटकी हुई जातियाँ, आँखें बन्द करके हाथों में दिये लेकर शायद प्रकाश ढूँढने निकला करती हैं।

रमा : आप के मुख से निराशा के यह वाक्य !

सुरेश : रमा ! एक दिन था कि हम इकट्ठे थे, हमारा घर एक था, शरीर दो थे आत्मा एक थी, हमारा मिलाप दूसरों के लिये सबक़ था, आप यही कहा करते थे न दीवानजी ! हमारी आँखों में प्रेम ज्योति जलती थी, हमारे दिलों में मिलाप की रौशनी बस्ती थी। हम सत्य के लिये भुजाओं के ज़ोर लड़ते थे। छल कपट से एक दूसरे को लूटते न थे। एक के पसीने पर दूसरे को खून बहाते देखा था, मगर एक चप्पा भर ज़मीन के लिये दो भाईयों को एक दूसरे के खून का प्यासा बनते कभी न सुना था। उन दिनों की रातें सुनहरी थीं, आज हमारे दिन भी हमारे भाग्य की तरह काले हैं। रमा ! हमारे पुरखे कहा करते थे, निराशा की खाई से आशा की राह निकलती है। हम उस राह को ढूँढते ढूँढते अपनी राह खो बैठे, और आज हम इस गुफ़ा (दीवार की ओर संकेत) में हैं जहाँ रौशनी अंधेरे की ग़ुलामी करती है, जहाँ ज़िन्दगी हार कर मौत के पाँव पर सर रख देती है।

रमा : नाथ !

सुरेश : मुझे जब बीते हुए दिन और गुज़री हुई दिवालियाँ याद आती हैं तो दिल पर बर्छियाँ चल जाती हैं। ऐसा मालूम होता है किसीने हज़ारों ज़हरीले नेज़े मेरी रगों में चुभो दिये, सैकड़ों नरकों की आग मेरे सर पर रख दी। (सिर उठाकर देखता है, रमा रो रही है) न रो रमा ! अब रोने से क्या हासिल ! तुम्हें याद होगा, हम किस तरह इकट्ठे मिल-कर दिवाली मनाया करते थे। दीवानजी और चाची कलकली खेलते थे, तुम, रमेश और बहू लोगों में प्रशाद बाँटा करते थे, और मैं माँ की मूर्ति

के पास जाकर कहा करता था कि आओ हम सब मिलकर प्रार्थना करें कि आज की रात की तरह हमारे दिल हमेशा प्यार और मुहब्बत की रोशनी में जगमगाते रहें, और हमारे जीवन से दुई और बैर का अंधकार हमेशा के लिये दूर रहे। लेकिन आज हम खुद गिर गये, प्यार और मुहब्बत की जगह हमारे दिलों में नफ़रत का ज़हर भर चुका है। ऐसी हालत में तुम मेरे मुंह से निराशा के वाक्य न सुनोगी तो क्या आशा के संगीत सुनोगी रमा !

रमा : नाथ !

सुरेश : रमा !

रमा : परन्तु इसका कोई उपाय, इस बीमारी का कोई इलाज ?

सुरेश : बीमारी इलाज की हद से बहुत दूर निकल गई है रमा ! हमारी हालत उस मनुष्य की सी है जिसे एक बार बाज़ू में दर्द हुआ तो लोगों के कहने से उसने बाज़ू कटवा डाले, दर्द बढ़ गया। उसकी यह दशा देखकर एक मित्र ने कहा जाओ उसे ढूंढो, जिसने राय दी थी कि बाज़ू कटवा डालो, और उससे कहो कि बाज़ू जोड़ दे। उसे कौन समझाये रमा ! बिगड़े हुए नसीब बन सकते हैं, टूटे हुए शीशे नहीं जुड़ सकते।

रमा : आपके मुख से यह सुनकर मुझे दुख होता है।

दीवान : आप हमारे मुखिया हैं, हमारे नेता हैं, दुखी प्रजा का सहारा हैं। आप गिर जायंगे तो उन्हें कौन संभालेगा।

सुरेश : दीवानजी ! मुझे नेता न कहो, मुखिया न कहो। मेरे होश उस समय कहाँ खो गये, मेरी अक्ल पर क्या परदे पड़ गये। मैंने रमेश की बात को मान ही क्यों लिया। आपने देखा है, मैंने देखा है, दीवार की उस ओर, दीवार की इस ओर। भाई ने भाई का गला काटा, बेटे ने माँ की लाज लूट ली और हम खड़े देखते रहे, तमाशा करते रहे, कुछ कर न पाये। काश मैंने रमेश का गला घोंट दिया होता, एक जान लेने से लाखों जानें तो बच जातीं। नहीं दीवानजी ! मैं टूटी हुई उम्मीद हूँ, खोई हुई रौशनी हूँ, भटका हुआ मुखिया हूँ। जनता से कहो कि कोई दूसरा मुखिया ढूंढ ले। (जाने लगता है, दीवान जी भी साथ जाने लगते हैं।)

रमा : इस अंधेरी रात में कहाँ जा रहे हैं नाथ !

सुरेश : (रुकता है, एक क्षण रमा की तरफ़ देखता है) रौशनी की कोई किरण ढूंढने रमा ! (सुरेश और दीवान जी चले जाते हैं। दीवार के दूसरी तरफ़ विनोद और शीला आ जाते हैं। विनोद कहता है।)

विनोद : माता जी ! माता जी ! मैं प्रेम और श्याम के साथ कभी न खेलूंगा !

शीला : खेलोगे बेटा !

विनोद : माता जी हम ताई जी के पास न जायँगे।

शीला : जायँगे बेटा !

रमा : विनोद !

विनोद : ताई जी प्रणाम।

शीला : दीदी ! अब क्या होगा दीदी ?

रमा : अब प्रार्थना ही एक उपाय है। आओ चाची प्रार्थना करें।

[सब मिलकर प्रार्थना करते हैं।]

दीप से दीप जला दो माँ, मेरे बिछड़े हुए मिला दो माँ।
विपदा की घनघोर घटायें छाईं।
आज बने हैं दुश्मन भाई भाई॥
भेद भाव की और झगड़ों की यह दीवार हटा दो माँ। मेरे बिछड़े०
फिर मिलाप का घर घर हो उजियाला।
आये दिवाली लिये दीप की माला॥
अंधकार की इस दुनिया में, प्रेम की ज्योति जला दो माँ। मेरे बिछड़े०

[अन्दर से किसान नारे लगाते हैं। आधे किसान घर के इस तरफ़ हैं और आधे उस तरफ़ हैं।]

सब किसान : हम अलग अलग नहीं रहेंगे। हमें खाने के लिये रोटी दो। हमें तन ढांकने के लिये कपड़ा दो। हमें बाँट नहीं चाहिये। हम इकट्ठे रहना चाहते हैं।

शीला : (आवाज़ों से चौंक कर) दीदी यह कैसी आवाज़ें हैं !

रमा : मालूम होता है कि बँाट से प्रजा बहुत दुखी होगई है। यह आग, जिसने हमारे घर को तबाह कर दिया है, अब उनकी झोपड़ियों तक जा पहुंची है।

शीला : लेकिन इनकी आवाज़ों में बदले की आग झलक रही है। इनके नारों में बग़ावत की झंकार सुनाई देती है।

रमा : मजबूरी हद्द से गुज़र कर बग़ावत बन जाती है बहू ! धन्य है यह दिन, प्रजा को जागना ही चाहिये था। हम प्रजा का साथ देंगे। तुममें और मुझमें तो कोई बैर नहीं है। हमने कभी दुई का प्रचार नहीं किया। हमने कभी भी किसी को बैरभाव के लिये नहीं उकसाया। माना कि पुरुष देश का बल होते हैं लेकिन नारियां भी तो देश और जाति की सभ्यता होती हैं। दुई का नाम मिटाने के लिये, प्रजा का दुख दूर करने के लिये, हमें प्रजा का साथ देना होगा। बहू तुम तय्यार हो ?

शीला : हाँ दीदी ! मैं तय्यार हूँ, बिलकुल तय्यार हूँ। मैं इन आवाज़ों से डर गई थी और थोड़े समय के लिये मैंने अपने देश को पीछे डाल दिया था, यह मेरी भूल थी। मैं तय्यार हूँ, अपने प्राणों के साथ तय्यार हूँ।

रमा : शाबाश बहू ! मुझे तुमसे यही आशा थी। (रामू आता है, उसे देखकर।) रामू इन लोगों पर घर के दरवाज़े खोल दो। (शीला से) बहू ! तुम भी अपने दरबान को आज्ञा दो कि घर के दरवाज़े खोल दे।

[आधे किसान सुरेश की तरफ़ से और आधे किसान रमेश की तरफ़ से दाख़िल होते हैं और दीवार के दोनों ओर खड़े हो जाते हैं। किसानों के पास लाठियाँ, फावड़े और कुदालें हैं।]

किसान १ : (रमा से) माँ ! हम तुम्हारी झोली थाम कर रोने आये हैं। तुम्हें अपना दुखड़ा सुनाना चाहते हैं।

किसान २ : हम फ़रियाद लेकर आये हैं माँ !

रमा : कहो, कहो, क्या कहना चाहते हो ?

किसान ३ : हम बँाट से बहुत दुखी हो गये हैं।

किसान ४ : बहुत दुखी हो गये हैं हम बँाट से।

किसान ५ : यह जागीर ही की बँाट नहीं थी, इससे घर के ही टुकड़े

नहीं हुए, इससे यह हुआ कि हमारे जिगर के टुकड़े किये गये हैं और उन्हें देश भर में बखेर दिया गया है। भाई भाई से कट गया, दोस्त दोस्त का दुश्मन बन गया।

किसान ६ : इस घर में दीवार क्या जड़ी कि प्रजा के दिलों में भी बाड़ें लग गईं। हमारा जीवन काँटों में उलझ गया।

किसान ७ : हम ठहरे मूर्ख देहाती, चरवाहे की डाली हुई लकीरों पर चलने वाली बेज़बान भेड़ें। हमें क्या ख़बर थी कि हमारे मालिक ख़ुद ही हमारा सर भेड़ियों के जबड़े में दे देंगे।

किसान ८ : दोनों मालिकों की लड़ाई क्या हुई कि पूरी जागीर के अम्न में आग लग गई। इससे पहले कि यह आग हमारे झोंपड़ों को जला कर राख कर दे और पूरी जनता के जीवन को अपने शोलों की लपेट में ले ले, हम तुम्हारे पास फ़रियाद लेकर आये हैं माँ!

किसान ९ : हम फ़रियाद लेकर आये हैं कि इस आग को रोका जाय, बुझाया जाय इस आग को।

किसान १० : और इस आग को वही बुझा सकते हैं जिन्होंने घर फूँक कर तमाशा देखना चाहा।

किसान ११ : हाँ, इस बाँट से यह हुआ कि हमारी जागीर में, जहाँ दूध की नदियाँ बहती थीं, वह ज़हर से भर गईं। हमारा देश कंगाल हो गया, हमारे अनाज से भरे हुए घर भूख और अकाल का डेरा बन गये।

किसान १२ : हम सुनते थे कि मशीनें हमारे आराम के लिये लगाई गई हैं, मगर हुआ यह कि हमारे जीवन उनमें पिस कर रह गये।

किसान १३ : आज हम अनाज ज़्यादा पैदा करते हैं मगर हम पेट भर खा भी नहीं सकते।

किसान १४ : हमें क्या मालूम था बाँट किसे कहते हैं, हमें बाँट नहीं चाहिये। हमें खाने को रोटी दो, माँ! हमारी सहायता करो, हमारी मदद करो माँ!

रमा : जब बाँट हुई थी उस वक़्त तुमने उसके ख़िलाफ़ आवाज़

क्यों न उठाई ? क्यों तुमने एक बकरे की तरह अपना सर क़साई की छुरी के नीचे रख दिया ? क्यों तुमने उन नेताओं का फ़ैसला मान लिया जिन्होंने अपनी ज़िद्द पूरी करने के लिये तुमसे विरोध किया ?

किसान १ : हमें क्या मालूम था कि बाँट किसे कहते हैं। हमने दो एक बार बड़े मालिक से कहना भी चाहा मगर हमारी गरदनों पर विदेशियों के ज़हरीले पंजे थे। हमारी आवाज़ उठने से पहले ही दबा दी गई और हमारी चीखें बड़े मालिक तक पहुंच न सकीं।

किसान २ : हमारा दोष सिर्फ़ हमारी बेबसी है।

किसान ३ : उसे कौन जगाये जो जाग रहा है मगर सो रहा हो।

किसान ४ : क्यों न उन्होंने प्रजा की नब्ज़ पर हाथ रखा ? क्यों न उन्होंने जनता की आवाज़ सुनना चाही ?

किसान ५ : क्यों उन्होंने अपने छोटे भाई की मामूली सी ज़िद्द पूरी करने के लिये अपनी प्रजा के सुख में आग लगा दी ?

किसान ६ : क्यों वह इस धरती के टुकड़े टुकड़े करने पर तय्यार हो गये जिसे वह माँ कहते थे, क्यों ?

सब किसान : क्यों, क्यों ! आख़िर क्यों ?

रमा : इसलिये कि वह मजबूर हो गये थे, इसलिये कि तुम्हारे मुँह पर ताले लगे हुए थे। इस तरह धरती माँ के कलेजे पर छुरी चली, यह एक भयानक कहानी है। कहते हुए मेरी ज़बान थर्राती है, सुनते हुए तुम्हारे कलेजे शल हो जायंगे और यह समय कुछ कहानियां सुनने सुनाने का नहीं। यह वक़्त है कुछ कर गुज़रने का, गुलामी की ज़न्जीरों को तोड़ डालने का, इतिहास की छाती पर अपने क़दमों का निशान छोड़ने का, और यह हम तभी कर सकते हैं जब हम एक हो जायँ, बिछड़े हुए भाई मिल जायँ। फिर यह दीवार न रहेगी, यह दीवार जो हमारे इतिहास के माथे पर काला दाग़ है, और जिसने हमारे घर में आग लगाई है।

किसान १ : लेकिन अब भी ग़ैरों की संगीनें इस दीवार की हिफ़ाज़त कर रही हैं माँ !

रमा : संगीनों से डर गये तुम ! याद रखो जब देश जागते हैं तो उन्हें तलवारों की लोरियों से नहीं सुलाया जा सकता । क़ौमों के वलवले तलवारों की धारें भी कुन्द नहीं कर सकतीं । तुम दीवार से सैलाब को नहीं रोक सकते, ताक़त की चक्की में सच्चाई को नहीं पीस सकते, अपने दिलों से डर को निकाल दो, डरना कायरों का काम है ।

सब किसान : हम कायर नहीं हैं माँ ! हम पर विश्वास रखो ।

रमा : शाबाश मेरे बच्चो ! तुम मुझे माँ कहते हो, मुझे तुम पर फ़ख़ है । याद रखो हक़ूक़ इल्तजाओं से नहीं ताक़त से मनवाये जाते हैं । हम एक थे और एक ही रहेंगे, और पेश्तर इसके कि तुम अपने सरदारों से मनवा सको कि वह ग़ल्त थे, तुम ख़ुद एक हो जाओ । फिर कोई भी ताक़त तुम्हें नहीं रोक सकती, हिमालय की बलन्दी भी तुम्हारी हिम्मत को पस्त नहीं कर सकती । (रमेश की तरफ़ वाले किसानों से) आओ तुम सब लोग इधर आ जाओ, बहू तुम भी आ जाओ । (रमेश की तरफ़ के सब किसान नारे लगाते हुए "हम अलग अलग नहीं रहेंगे" और शीला वग़ैरह सुरेश की तरफ़ आ जाते हैं ।)

रमा : विनोद ! (विनोद को प्यार करती है, फिर शीला से) बहू ! (गले लगा लेती है । सुरेश व दीवान जी आते हैं, सुरेश विनोद को देखकर कहता है ।)

सुरेश : विनोद । (विनोद को गोदी में उठा कर प्यार करता है, शीला सुरेश के पांव छूती है ।) बहू ! (शीला के सर पर हाथ रखता है, फिर किसानों की तरफ़ देखकर रमा से कहता है ।) रमा ! आज मैं यह क्या देख रहा हूँ ?

रमा : आपके लोग आपके पास फ़रियाद लेकर आये हैं, आपकी प्रजा को आपके ख़िलाफ़ बहुत सी शिकायतें हैं । See my name on page 11

किसान १ : भूख की आग में गले हुए आप हमारे जिस्म देखिये, क्या हम वही हैं जिनके घर अनाज से भरे रहते थे ?

किसान २ : आप बता सकते हैं हमारा यह हाल क्यों हुआ ?

किसान ३ : आपने ग़ैरों को घुसने क्यों दिया ?

किसान ४ : आपने हमारे ख़ून से होली खेली !

किसान ५ : आपने हमारे जिस्म बेच कर रंगरलियाँ मनाईं !

किसान ६ : उस पर भी आपको चैन न आया, आपने अपने भाई की मामूली सी मांग पर घर में दीवार खड़ी कर ली।

किसान ७ : आपने उस धरती के टुकड़े टुकड़े कर दिये जिसे आप माँ कहते थे।

किसान ८ : आपने उस मिलाप का नाम तक न रहने दिया जो हमारे पुरखों का वरदान था।

सुरेश : भाईयो ! मैंने यह सब कुछ इसलिये किया कि शायद इसी तरह हम ग़ैरों से छुटकारा पा सकें और फिर इकठे हो जांय, मगर वह न हुआ। मैंने सोचा था दीवार घरों के टुकड़े कर सकती है, भाईयों के खून नहीं चीर सकती।

किसान ९ : लेकिन हुआ यह कि आप दोनों भाईयों की लड़ाई आज सारे देश की लड़ाई बन गई।

किसान १० : इस दीवार से सिर्फ़ आप ही के घर के टुकड़े नहीं हुए, आपकी प्रजा के घरों की भी ईंट से ईंट बज गई।

किसान ११ : आप दोनों भाई आपस में लड़े लेकिन आपने यह नहीं देखा कि आपकी निर्दोष प्रजा आप ही के पाँव तले चीटियों की तरह कुचली गई।

सुरेश : मैं अपना दोष मानता हूँ। मैंने सोचा था कभी ज़हर भी दवा बन जाता है। यह मेरी ग़लती थी, मैं इस ग़ल्ती की सज़ा भुगतने के लिये तय्यार हूँ। आप लोगों ने जो पदवी मुझे दी थी उसे छीन लो, मेरा ताज नोच लो और उसे मिट्टी में परेशान कर दो, मैं इसके क़ाबिल नहीं रहा।

दीवान : आपने एक ग़ल्ती की और इस ग़ल्ती को दुरुस्त करते करते और बहुत सी ग़लतियाँ कर बैठे, मर्ज़ लाइलाज हो गया। लेकिन अब कहीं और ग़ल्ती न कर बैठियेगा। आप हमारी नाव के चप्पू हैं, हमारे सहारे की लाठी हैं, हमारी भटकी हुई उम्मीदें, अंधेरे में डूबे हुए दिल अब भी आप से लौ लगाये बैठे हैं।

किसान १२ : तो सरकार ! (कुदाल दिखा कर) उठाईये यह कुदाल और इस दीवार के टुकड़े टुकड़े कर दीजिये जो ग़ल्ती से खड़ी हो गई है और जिसने भाईयों के दिलों में बाड़ें लगा दी हैं। यह हमारे पुरखों के नाम पर सबसे बड़ी गाली है सरकार !

सुरेश : मुझे सरकार न कहो, मुझे इस नाम से न पुकारो, मैं आपमें से एक हूँ। मैं गिर गया था, आपने मुझे संभाला है, मैं सो गया था आपने मुझे झंझोड़ कर जगाया है। मैं बड़ा नहीं, आपने मुझे बड़ा बनाया है। अब आप मेरी उंगलियों के इशारों पर नहीं चलेंगे, मैं यह कोशिश करूँगा कि आपकी आवाज़ बन जाऊँ। (दीवान से) दीवान जी ! अब मैं समझा हूँ, प्रजा राजा से नहीं, राजा प्रजा से है। प्रजा के चरणों की धूल से ही राजा का राजतिलक बनता है। भाईयो ! मुझे सरकार न कहो, गैरों ने जब गुलामी की ज़न्जीरें हमारे पांव में डालीं थीं तो हमें यह खिताब बख्शा था। फूट, गुलामी, भूख और बेकारी की तरह यह भी उन्हीं की देन है। मुझे इस नाम से उतनी ही नफ़रत है जितनी इन गैरों की मदाखलत से, जितनी इस दीवार से।

दीवान : तो आज से हम आपको सरदार कहेंगे।

किसान १ : तो सरदार! (कुदाल बढ़ाते हुए) उठाईये यह कुदाल, हमारे दिलों में जो आग के शोले भड़क रहे हैं वह इस दीवार तक पहुंचना ही चाहते हैं। (दीवार तोड़ने के लिये सब किसान बढ़ते हैं।)

सुरेश : (रोक कर) ठहरो, शान्ति से काम लो। पहले हम सब मिल कर रमेश के पास चलते हैं, उसे समझाने की कोशिश करते हैं।

सब किसान : वह हमारी बात पर कान नहीं देंगे सरदार!

सुरेश : नहीं, नहीं, अब तो उसे भी होश आगया होगा, उसने वह तूफ़ान देखा है जो दीवार के इस ओर हुआ, उस ओर हुआ। आओ उसे एक अवसर और दें, सम्भव है दिल ही दिल की बात सुन ले, खून ही खून का कहा मान जाय।

सब किसान : जैसी आप की आज्ञा।

[सब किसान, दीवान, चाची, रमा, विनोद, शीला, सुरेश वगैरह रमेश की तरफ़ आते हैं। किसान नारे लगाते जाते हैं।]

सब किसान : हम अलग अलग नहीं रहेंगे। हमें दीवार नहीं चाहिये, या हम रहेंगे या दीवार रहेगी। हम सब एक होकर रहेंगे या हम में से एक भी न रहेगा।

(विदेशी औरत, विदेशी आदमी १ व २ व रमेश बाहर आते हैं।)

वि. औरत : मालूम होता है बग़ावत हो गई।

रमेश : बग़ावत हो गई, बन्द कर दो, बन्द कर दो घर के दरवाज़े।

शीला : (अन्दर आकर) नहीं, नहीं होंगे घर के दरवाज़े बन्द।

रमेश : (गुस्से में) शीला तुम!

शीला : हाँ मैं। (रमेश शीला को मारने के लिये आगे बढ़ता है, ठीक उसी वक़्त सुरेश दाख़िल होकर रमेश को रोक लेता है, फिर तमाम किसान वग़ैरह अन्दर आते हैं।)

सुरेश : रमेश मैं एक दफ़ा फिर तुम्हारे दरवाज़े पर आया हूँ।

रमेश : मेरी जान लेने?

सुरेश : नहीं, तुमसे भीख मांगने।

रमेश : (किसानों की तरफ़ देखकर) भिखारी इस तरह कुदालों से मुसल्लह फ़ौज लेकर भीख मांगने नहीं निकलते।

सुरेश : इन कुदालों से डर गये तुम! यह तो खेती है जो हम दोनों भाईयों ने मिलकर बोई, सामने की दीवार उसका बीज ही तो है।

रमेश : मालूम होता है आप मुझसे झगड़ा करने आये हैं।

सुरेश : नहीं रमेश! झगड़ा करने नहीं, मिटाने आया हूँ।

रमेश : मेरी जान लेकर?

सुरेश : नहीं, इस दीवार को तोड़ कर। रमेश! अब भी आखें खोलो, अपने घर की बिगड़ी हुई हाल्त को देखो, अपनी जागीर की उजड़ी हुई सूरत पर नज़र करो। क्यों आज उन खेतों में ख़ाक उड़ रही है जो कल तक सोना उगलते थे। क्यों वह घर जो गंगा जमना के संगम की तरह सुन्दर था, आज श्मशान की तरह वीरान है, क्यों? क्यों? आख़िर क्यों?

रमेश : भाग्य! दुर्भाग्य!!

सुरेश : भाग्य, दुर्भाग्य, निर्बल के लिये झूठी तसल्ली हैं, दम तोड़ते हुए मरीज़ का आख़री संभाला हैं, गिरी हुई जातियां क़िस्मत की

लकीरों के जाल में फंसी रहती हैं। (किसानों की तरफ़ इशारा करके।) जागे हुये देश की हर करवट से क़िस्मत बदल जाती है रमेश !

रमेश : अच्छा तो आप चाहते हैं मुझ से शास्त्रार्थ करना।

सुरेश : नहीं मैं चाहता हूँ यह दीवार तोड़ना।

रमेश : (दीवार के सामने हाथ फैला कर खड़ा हो जाता है।) यह दीवार आप तब ही तोड़ सकते हैं जब आप मेरी लाश पर से गुज़रेंगे, यह मेरे आख़री दम तक क़ायम रहेगी।

सुरेश : रमेश ! क्यों चिपट रहे हो दीवार से ? यह ग़ैरों की पिटारी का सबसे ज़हरीला सांप है, इसे पहचानो, इसके सर पर पांव रख दो, इसे कुचल डालो। रमेश ! अब भी वक़्त है, वक़्त को हाथ से मत जाने दो, ऐसा न हो कि वक़्त तुम्हें पीछे छोड़ जाय। यह दीवार हमारे इतिहास के माथे पर काला दाग़ है, हम इसे मिटा कर छोड़ेंगे। हम मिट्टी में मिल जायंगे लेकिन इसे मिट्टी में मिला कर छोड़ेंगे। यह आवाज़ सिर्फ़ मेरी ही आवाज़ नहीं, यह जनता की आवाज़ है, और जनता की आवाज़ वह चक्की है जिस में दीवार तो क्या हिमालय भी पिसकर रह जाय।

वि. औरत : मगर अहदनामे की रु से ?

सब किसान : भाड़ में गये तुम्हारे अहदनामे।

वि. औरत : संगीनें !

वि. आदमी १ व २ : संगीनें !

सुरेश : संगीनें न उठाओ, आग पर तैल न छिड़को। जागे हुए देश की छाती फ़ौलाद का पहाड़ होती है, वह तलवारों के रुख़ फेर देती है, तुम उसे संगीनों से ज़ख्मी नहीं कर सकते। (वि. औरत से) तुम अहदनामों का ज़िक्र कर रही हो, मुझे डर है कि पहली संगीन के म्यान से निकलने के बाद कहीं तुम्हें अपनी जान के लाले न पड़ जांय, कहीं तुम्हें वह शोले न चाट जांय जो हमारे दिलों में भड़क रहे हैं, कहीं तुम उस आग की ख़ूराक न बन जाओ जो तुमने हमारे घर में लगा रखी है। (सब विदेशी भागना चाहते हैं, विदेशी औरत भाग कर ऊपर चली जाती है, और विदेशी

आदमी नहीं भाग पाते।) ठहरो! उस रास्ते से नहीं। (दीवार दिखला कर) इस रास्ते से, और यह रास्ता हम दीवार तोड़कर बनायेंगे। (रमेश से) रमेश! तुम्हारे बड़े भाई के हाथ तुम्हारे सामने फैले हुए हैं। (किसानों की तरफ़ इशारा करके) इन लोगों की उम्मीदें तुम पर लगी हुई हैं। आओ हम इस दीवार के टुकड़े टुकड़े कर दें, आज टूटे हुए दिल जोड़ लें, बिगडे हुए नसीब बना लें, आज उजड़ा हुआ घर बसा लें। (किसानों की तरफ़ इशारा करके) देखो यह लोग दीवार पर वार करने के लिये कितने बेताब हो रहे हैं। यह दीवार हमारे निफ़ाक़ की जड़ है, हमारी गुलामी की ज़न्जीर है, हमारे दुश्मन का दिल है। हम में से हर शख़्स यही चाहता है, इस दीवार पर जो पहली ज़र्ब लगे वह उसके कुदाल की हो, लेकिन मैं चाहता हूँ कि यह सेहरा तुम्हारे सर रहे। रमेश आगे बढ़ो, दीवार पर वार कर दो, इतिहास तुम्हारी राह देख रहा है, आगे बढ़ो और बढ़कर उस पर अपना नाम सुनहरे हरफ़ों में लिख दो।

रमेश : भैया! आपके मुख से यह मीठे शब्द निकल रहे हैं और मेरी आखों से परदे हट रहे हैं, लेकिन मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। एक दिन जब मैं खेतों पर से आया था तो आपने मेरे साथ खाने से क्यों इन्कार किया था?

सुरेश : यह मेरी भूल थी, यह मेरी ग़लती थी। मैंने तुम्हारे हाथ का दिया पानी न पिया, तुम्हारा छुआ खाना न खाया, तुम्हें अछूत समझा। यह मेरी ग़लती थी, मेरी भूल थी, मुझे क्षमा कर दो रमेश!

रमेश : भैया! इन लोगों ने मुझे बहकाया था। इन्होंने मुझसे कहा कि जब तुम खेतों पर खून और पसीना एक कर रहे होते हो तो तुम्हारा भाई आराम से सितार ही बजाया करता है। मैं कितना मूर्ख था कि इनके जाल में फंस गया। भैया! मुझे क्षमा कर दो। (पांव पर गिर जाता है।)

सुरेश : (रमेश को गले से लगा लेता है। एक किसान से कुदाल लेकर रमेश को देते हुए।) दीवार पर वार कर दो रमेश!

रमेश : भैया! दीवार पर वार आप कीजिये। (कुदाल लेकर विदेशी

आदमियों को मारने झपटता है।) मैं पहले इन विदेशियों से समझ लूँ। (तमाम किसान उसके साथ ही विदेशियों पर झपटते हैं।)

सुरेश : (रोक कर) नहीं। आप लोग भूल गये, हमारे पुरखे दुश्मनों से बदला नहीं लेते थे बल्कि उन्हें क्षमा कर देते थे। हमने इन लोगों से बहुत कुछ सीखा है, गो इन्होंने यहाँ जो कुछ भी किया अपने फ़ायदे के लिये किया और इसलिये किया कि इनकी हुकूमत यहाँ क़ायम रहे, और इनके ज़हरीले पंजे हमारी गर्दनों पर बदस्तूर गड़े रहें, लेकिन हम इनकी लगाई हुई मशीनें और इनका लाया हुआ इल्म अपनी जनता के फ़ायदे के लिये स्तेमाल कर सकते हैं। यह लोग अब भी यहाँ रह सकते हैं, सेवक बन कर, हाकिम बन कर नहीं। (सब कुदालें और डंडे झुका लेते हैं) रमेश ! दीवार तुम्हारी राह देख रही है।

रमेश : भैया ! पहले आप।

दीवान : (एक कुदाल सुरेश की तरफ़ बढ़ाते हुए) दोनों एक साथ।

(दोनों एक साथ दीवार को तोड़ते हैं, बाजों की आवाज़ आती है, धीरे धीरे परदा गिरता है।)

(सीन बदलता है, दीवार हट जाती है, हिन्दुस्तान का नक़्शा दिखाई देता है, सब गाते हैं।)

गाना

हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहेंगे॥
यह सदियों की आवाज़ है, यह पूजा, यह नमाज़ है।
यह आज़ादी का राज़ है, दुनिया से कहेंगे॥ हम एक थे......
यह मन्दिरों के, मसजिदों के नारे कहेंगे,
गिरजे यह कहेंगे, यही गुरुद्वारे कहेंगे,
हम हिन्दु मुसलमान नहीं न्यारे रहेंगे,
इक साथ इक ज़बान से हम सारे कहेंगे,
दुनिया से कहेंगे॥ हम एक थे............

(परदा)

इति